

पल्लवी प्रकाशन

समस्या सँ समाधान धरि

Thoughtful passages from the literary corpora of Shri. Jagdish Prasad Mandal

Compilation by

डॉ. उमेश मण्डल

समस्या सँ समाधान धरि

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

SAMASYA SAN SAMADHAN DHARI

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri. Jagdish Prasad Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

दाम : 200/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-15-5

पोथीक मादे किछु अप्पन बात

'पोथीक मादे किछु अप्पन बात'क जगह जँ 'पोथीक बहन्ने किछु अपनो बात' रहैत तँ आरो नीक, मुदा अधला ईहो नहियेँ अछि। ओ ऐ दुआरे जे काजेक हिसाबे काज करैत चलब नीक होइत अछि किने। जीवन तँ काजेसँ भरल अछि। केतबो करब तैयो बहुत काज कएल नहि हएत बल्कि बहुत काज बाँकीए रहि जाएत। मुदा सभकेँ अपन-अपन सक्य भरिक जिम्मो तँ अछिए। कोनो नव काज जखन सोझामे अबैए तँ पहिने ओकर रूप-स्वरूप (जीवन) मूल रहैए, नहि कि ओकर नामकरण। तँए जे नाओं सोझमे पड़ि जाए, ओकरा बेजा नहि कहि काजकेँ आगू बढ़ेबाक चाही..। 'सोझमे पड़ि जाए' एकर माने जँ बहुत सहज अछि तँ बहुत व्यापक सेहो अछिए। मुदा ऐ दुनियाँमे किछुओ असम्भव (भारी) नहि, सेहो तँ कहले जाइए। किए ने कहब, ई हमर सौभाग्य अछि जे एक-पर-एक विद्वतजनक आशीष हमरा भेटैत रहल अछि। ऐ पोथीक शीर्षक सेहो हमरा आशीर्वादे स्वरूप भेटल अछि। अर्थात् ऐ पोथीक नाओं रखनिहार कही वा पोथीक शीर्षक हमरा नजैरपर देनिहार, ओ छैथ मैथिली साहित्यक आदरणीय साहित्यकार श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र। हुनका प्रति सादर आभार व्यक्त करैत 'पोथीक मादे अप्पन बात'केँ आगू बढ़ा रहल छी।

प्रस्तुत पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक गद्य रचनासँ विचारोत्तेजक अंशकेँ सङ्कलित कए प्रस्तुत केलौं अछि। ऐ तरहक सङ्कलन 'हेण्डबुकसँ फेसबुक धरि' शीर्षक मध्य सेहो पूर्वमे एकटा आर प्रकाशित

करौल अछि। किएक तँ हमर शोध कार्य जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनासँ सम्बन्धित विषयसँ जोड़ल रहल, जइ पाछू लागल रहबाक कोशिशमे सदिखन तत्पर छीहे। अत: प्रस्तुत पोथीकेँ अपन द्वितीय सहायक कार्यक संग द्वितीय पुष्प मानि अपने सबहक सोझ प्रस्तुत कए रहलौं अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनासँ हमर सम्बन्ध ओहेन रहल अछि जेहेन कोनो रचनाक सम्बन्ध ओकर पहिल पाठकसँ होइ छइ। ई हमर सौभाग्य अछि जे मण्डलजीक आइ धरिक सभ रचनाक पहिल पाठक हेबाक अवसरि हमरा भेटैत रहल अछि। तेतबे नहि, हुनक कोरा-काँख तर खेलबाक-बढ़बाक अवसरि सेहो हमर सौभाग्ये अछि। वएह हमरा आँगुर पकैड़ 'अ-आ'क बोधसँ बोधित कए; पुचकारिकऽ कान्हपर चढ़ा गामक स्कूलमे लऽ जा कऽ नाओं लिखौ लैन। तेतबे नहि, हुनका संगे रहब, संगे-संग खेतमे काज करब, एक थारीमे खाएब आ एकहि लोटा-गिलासमे पानि पीबैसँ लऽ कऽ प्रत्येक काजमे संग रहैत हुनकहि छत्र-छायामे उठिकऽ ठाढ़ हेबाक संयोग सेहो हमरा प्राप्त भेल अछि। ओना, 2004 इस्वीसँ हम बेरमा (मधुबनी) सँ निर्मली (सुपौल) आबि, रहि रहल छी।

बेरमा-निर्मलीक बीच बहुत दूरी तँ नहि मुदा 35-40 किलोमीटर अछि। 2005 इस्वीमे श्री मण्डलजीक लिखल, पाण्डुलिपिमे 'भैयारी' कथा पढ़लौं। कुसुमलाल ओ दीनानाथक भैयारी, हृदयकेँ झकझोरि देलक। जीवन आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल। ओही दिनसँ साहित्य पढ़ए लगलौं।

हमर एक संगी, संगे-संग एक मकानमे रहैबला संगी, अशोकजी (श्री अशोक कुमार मण्डल) सेहो ओइ कथाकेँ पढ़ि उत्साहित भेला। ओ हृदय खोलि कहए लगला जे एतेक सुन्दर (यथार्थ) विषय-वस्तु, एहेन जीवन्त शब्दावलीक माध्यमसँ एहेन उद्देश्यपूर्ण पवित्र कथा हम बहुत

कम पढ़ने छी। नव चीज अछि। हिनक रचना सभ प्रकाशित हुअए ऐ लेल प्रयत्न करू...।

तैबीच पत्नी (श्रीमती पुनम मण्डल) सेहो मण्डलजीक लिखल- 'बोनिहारिन मरनी', 'चुनवाली', 'अनेरुआ बेटा', 'घरदेखिया', 'बाबी' आ 'कामनी' कथाकेँ पढ़ि चुकल छेली। ओहो बेस प्रभावित छेली। अपने सेहो उद्वेलित रहबे करी। 'भैयारी' कथाक स्थिति आँखिक सोझमे रहबे करए। किछु दिनक पछाइत—तैबीच निर्मलीमे सेहो यारी-भाय कहियौ कि भैयारी, बहुतोक संग बनियेँ गेल छल—कम्प्युटर लेलौं आ ओइ पाछू लागि गेलौं। माने मनोयोगसँ रचनाक टंकण कार्यमे लागि गेलौं। संगहि, मैथिली साहित्यमे बहड़ाइत, ओइ समयमे जे कोनो पत्रिका छल, ताकि-ताकि कऽ लेबए लगलौं आ पढ़ए लगलौं। किछुए दिनक पछाइत अनेकहु सम्पादक महोदयक संग साहित्यकार विद्वानजन सभसँ सेहो गप-सप्पक सौभाग्य प्राप्त भेल। किछु गोटासँ घर/डेरापर जा कऽ भेँट सेहो कएल, जेना- डॉ. तारानंद 'वियोगी', डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, श्री रघुवीर मोची, श्री गजेन्द्र ठाकुर, मन्त्रेश्वर झा आदि...। आ निर्मलीमे तँ रहिते छेलौं आ छिहो। अहूठामक विद्वान-मनीषी-रचनाकारक संग साहित्य प्रेमीकेँ जनलयैन कि जनै छिऐन, हुनका सबहक संग जुड़लौं आ आगूओ अनेकसँ जुड़िये रहल छी।

2008 इस्वीमे 8 नवम्बरक शनि दिन मिथिलाक प्रसिद्ध 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल, जइमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक संग हमहूँ पहिल कथा-साहित्य गोष्ठीमे भाग लेने रही। 'भैंटक लावा' कथाक पाठ ओ केलैन आ 'दोस्ती' बीहैन कथाक पाठ अपने केने रही। डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास' ओ डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जीक अध्यक्षतामे ओ गोष्ठी ओयोजित छल, उद्घघाटन केने रहैथ स्व. उग्रनारायण मिश्र 'कनक', बहुत पैघ-पैघ विद्वतजन, रचनाकार

सभकेँ ओइठाम एकसंग देखने रहिऐन। रहुआमे हमरो पाग-दोपटाक संग परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाँइक एकगोट दिव्य मूर्ति प्राप्त भेल छल।

मिथिलांचलमे आ मिथिलांचलसँ बाहर सेहो मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि हेतु अनेकहु मञ्च अछि। व्यवहारिक तौरपर सभ मञ्चक अपन-अपन उद्देश्य छै, मुदा वैचारिक तौरपर सभक एक्के उद्देश्य अछि, मैथिलीक विकास। जहिना सभ मञ्चक अपन-अपन व्यवहार अछि तहिना सभक अपन-अपन पहिचान सेहो अछिए।

'सगर राति दीप जरय'केँ मैथिली साहित्यक पहिल 'सर्वहारा साहित्यिक मञ्च' मानल जाइत अछि। ऐ मञ्चपर मैथिली साहित्यक तमाम साहित्यकार अबैत-जाइत रहला अछि। सभक पोथीक लोकार्पण सेहो होइत रहलैन अछि।

'सगर राति दीप जरय'क सभसँ पैघ मजगूत पक्ष ई अछि जे ऐ मञ्चपर कोनो (कियो) रचनाकार, समीक्षक भाग लऽ सकै छैथ। किनकहुँ लेल हकारक अनिवार्यता नहि अछि। बिल्कुल खुला मञ्च अछि। सभ वर्गक कथाकार, समीक्षक ओ साहित्य प्रेमी ऐ मञ्चपर उपस्थित होइ छैथ। साँझ छह बजेसँ भिनसर छह बजे धरि संगोष्ठीक समय अछि। दीप प्रज्ज्वलित कए कथा सत्रक आरम्भ होइत अछि। जइमे कथाकार ओ आलोचक आमने-सामने होइ छैथ। एक पालीमे प्राय: चारि गोट कथाकार अपन-अपन नूतन कथाक पाठ करै छैथ। प्रत्येक पालीमे पठित कथापर समीक्षक लोकैन समीक्षात्मक टिप्पणी प्रस्तुत करै छैथ। पोथी-लोकार्पणक सेहो एकटा सत्र होइत अछि जे शुरूहेमे सम्पन्न भऽ जाइए। बीचमे अर्थात् अधरतियामे गोटेक घन्टाक शून्यकाल सेहो होइ छै, आ पुन: भिनसर छह बजे धरिक लेल कथा पाठ आ समीक्षाक लेल गोष्ठी प्रारम्भ भऽ जाइत अछि।

रहुआ संग्रामक गोष्ठीक पछाइत श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक दू गोट कथा 'घर-बाहर' पत्रिका पटनासँ आ एकटा 'मिथिला दर्शन'

कोलकातासँ प्रकाशित भेलैन। जेकर किछु दिनक पछाइत गजेन्द्र सर, (श्री गजेन्द्र ठाकुर, विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिकाक सम्पादक) सँ गप-सप्प भेल, सम्बन्ध बनल। पत्रिकामे सहायक कार्य लेल अवसरि देलैन आ श्री नागेन्द्र कुमार झा (श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीक संस्थापक)सँ सेहो गप करौलैन। दुनू गोटा कहलैन जे "अहाँ जतबा जे रचना, हेराएल वा ओहन रचनाकारक रचना, जनिक पोथी प्रकाशित नहि भऽ रहलैन हैं, नहि भेल छैन, टंकित कए देब, ओकर पुस्तकाकार प्रकाशनक जिम्मा हमरसभक। सभ पोथीकेँ प्रकाशित कराओल जाएत।"

वस्तुत: अहिना भेबो कएल। पोथी छपबाक समस्याक अन्त भेल। पाण्डुलिपिक टंकण कार्य आरो तीव्र भेल। ताकि-ताकि कऽ रचनाकार सभसँ सम्पर्क करए लगलौं। जइमे श्री राजदेव मण्डल, श्री राम विलास साहु, श्री नन्द विलास राय, श्री उमेश पासवान, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', श्री बेचन ठाकुर, श्री शिव कुमार झा 'टिल्लू', श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत तथा श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पोथी छपलैन। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक तँ 27 गोट पोथी छपलैन। माने 'श्रुति प्रकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ प्रकाशित भेलैन। अपन 'निश्तुकी' पद्य संग्रह सेहो छपल। आ तैसंग अनेको ओहनो-ओहन रचनाकार लोकनिक रचना छपल जे खुदरा लिखलैन। विविध-विधाक सङ्कलन 'विदेह-सदेह' नाओंसँ प्रकाशित भेल अछि। हमर जिम्मा रचनाकारक रचनाकेँ टंकण कए पहुँचाएब छल। अनेको रचनाकार पाठकक सोझमे एला। ई क्रम, माने श्रुति प्रकाशनसँ पोथी प्रकाशनक क्रम, 2008 सँ 2012-13 इस्वी धरि चलल।

'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठीसँ लगातार आइ धरि जुड़ल छी। वर्त्तमानमे 108म आयोजन मधुरा (मधुबनी)मे डॉ. श्रीशंकर झाजीक संयोजकत्वमे 26 मार्च-के हएब निश्चित अछि। हमहूँ उक्त कथा

गोष्ठीक आयोजन चारि खेप करेलौं अछि। जइमे तीन खेप क्रमश: 80म, 87म ओ 100म आयोजन निर्मलीमे, निर्मलीक समाजक सहयोगसँ करेलौं आ 107म आयोजन बेलहा (घोघरडीहा)मे ई. शैलेन्द्र कुमार मण्डलजीक आयोजकत्वमे करेलौं।

2014 इस्वीमे 'पल्लवी प्रकाशन'क पंजीयन कराएल तथा पोथी प्रकाशनक क्रम जारी राखल। पल्लवी प्रकाशन द्वारा विविध-विधाक करीब तीन साए (300) पोथी प्रकाशित कए चुकलौं अछि।

2009-2010 इस्वीक बीच फेसबुकपर आबि चुकल रही, जइमे श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुरजीक सहयोगकेँ केना बिसैर सकबैन, अपने किछु बुझितो ने रही, हुनकेसँ बुझैत-सीखैत किछु-किछु काजक आरम्भ कएल।

फेसबुकपर अनेको विद्वानक रचनाकेँ साझा करए लगलौं। पछाइत, पूज्यवर श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विविध-विधाक रचना-अंशकेँ फेसबुकपर साझा करए लगलौं। ऐ कार्यकेँ करबाक मूल उद्देश्य मैथिलीक पाठक समुदायकेँ बढ़ेबाक छल। बेस पाठक बढ़ल। बहुतो विद्वतजन, पाठकवृन्द हमरा उत्साहितो केलैन। उत्साहित भऽ हम पाम्फलेट-कलेक्शन सेहो फेसबुकपर साझा करए लगलौं। धीरे-धीरे ई कार्य आगू बढ़ैत गेल। 'देवाश्रम' नाओंसँ अनेको सङ्कलन सेहो बहराएल। अही क्रममे मण्डलजीक बीछल कथाक एक साए सङ्कलन- 'पंचदेव' नाओंसँ प्रकाशित कए लोकार्पण कराएल। संगहि एक गोट 'दुध-पानि फराक फराक' नामक पाण्डुलिपि-छाया पोथी केर लोकार्पण सेहो 'सगर राति दीप जरय'क शतांक आयोजनमे कराएल। ऐ कार्यक लेल बहुतो आदरणीय हमरा उत्साहित करैत कहबो केलैन जे "मैथिली साहित्यमे ई नव डेग थिक।"

'नव डेग' सुनि अर्थात् उत्साहसँ उत्साहित भऽ विचारोत्तेजक गद्यांशक सङ्कलित पोथी प्रकाशित करी, ईहो मनमे आबए लगल। आइ लगातार सात वर्षसँ, माने 2014 इस्वीसँ ऐ कार्यमे लागल छी। जेकर

फलाफल 'हेण्डबुक सँ फेसबुक धरि'क भाँति सद्य: प्रकाशित- 'समस्या सँ समाधान धरि' अपने सबहक सोझमे अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना कौशलक सन्दर्भमे केतेको विद्वतजन लिखलैन अछि- "मण्डलजी फुसियाँहीक रचनाकार नहि छैथ, हिनक एक-एक वाक्य महत्वपूर्ण होइत छैन। एहि तरहक रचना कौशल कोनहुँ रचनाकारमे तखनहि आबि सकैछ जखन मंसा-वाचा ओ कर्मणाक सतह एक हो... ।"

पूर्वमे अपन दू गोट मौलिक कृति क्रमशः 'निश्तुकी' काव्य संग्रह- 2009 इस्वीमे तथा 'टुटैत मनक जुड़ाव' कथा संग्रह- 2018 इस्वीमे प्रकाशित कराएल। ऐ दुनू पोथीक लोकार्पण सेहो क्रमशः 80म तथा 97म 'सगर राति दीप जरय'क कथागोष्ठीमे भेल अछि।

प्रस्तुत पोथी 'समस्या सँ समाधान धरि'क सम्बन्धमे सेहो अपना विश्वास अछि जे सुधि पाठक लोकैनकेँ 'हेण्डबुक सँ फेसबुक धरि'सँ फराक स्वाद भेटतैन। जखन कि अह्रू पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गद्य रचनाक विचारोत्तेजक अंशकेँ हू-ब-हू राखलौं अछि।

साम्रगीकेँ दू तरहक फोन्ट-साइजमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। जइमे विचारोत्तेजक वा भावोत्तेजक तथ्यक फोन्ट-साइज किछु नम्हर अछि। संगहि कोन तथ्य केतएसँ अर्थात् कोन पोथीसँ वा रचनासँ आनल, तेकरो विवरण सन्दर्भ-साभारमे अङ्कित करबाक कोशिश कएल अछि। धन्यवाद.! प्रणाम.!!

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य!!

-उमेश मण्डल

निर्मली

23 मार्च 2022

समस्या सँ

समाधान धरि

Thoughtful passages from the literary corpora of Shri. Jagdish Prasad Mandal

वैचारिक रूपमे अखनो हम मिथिलाक ओ रूप देखिये रहल छी, जे अदौक चिन्तनधाराक अनुकूल अछि। तँए हम सभ आजुक मिथिलाक चित्रांकन जँ नइ करब, तँ खाली जादू-टोना वा छू-मन्तर कहि देलासँ भए जाएत ई सम्भव नहि अछि।

सभ कियो तँ यएह ने चाहै छी जे अधिक-सँ-अधिक शान्तचित्तसँ जीवन व्यतीत अपनो करी, परिवारो करए आ समाजोकेँ शान्ति भेटौ। मुदा तइले की खगता अछि आ केतए कोन रस्ता किए बाधित अछि, तैपर विचार के करत? विचारणीय विषय अछि जे केहेन जीवन चाही? जखने धरतीपर जन्म लेलौं, तखने भूख लगबे करत, जँ भूख नहि मेटाएब तँ शरीर खसैत-खसैत खसि पड़बे करब। ओना अन्नोसँ बेसी जरूरत पानिक अछि आ तहूसँ बेसी खगता हवाक अछि जे साँस लइ छी। मुदा ओ तँ प्रकृति अपन अकवालसँ सौंसे दुनियाँकेँ भरि देने अछि। ओना, अछि पीबैक पानियों आ भोजनो सामग्रीक पैदा करैक माटियो, मुदा ओइमे कनी मेहनतक जरूरी पड़िये जाइत अछि। धरतीसँ अन्न पैदा होइए आ निच्चाँ पताल आ ऊपर अकाससँ पानि टभकैए। तइमे मनुखक अपन तर्रदुत एते तँ बढ़िये जाइए जे तइले इनार , चापाकल इत्यादिक बेवस्था करए पड़ै छइ। ओना, अकासक पानि जहिना पवित्र बेसी अछि तहिना ओकर तर्रदुत सेहो कठिन अछि , मुदा असाधे अछि सेहो कहब उचित नहियेँ हएत। जखन कि तीनू साधन भरपुर अछिए। तखन अन्नक अभाव किए होइए? पानि दूषित केना भऽ जाइए ? वायु प्रदूषित किए भऽ जाइए..?

विवेकवान मनुख रहितो जिनगीक मूल-भूत ढाँचासँ ओझल भेल छी। ओना, ओझल होइमे सोल्हन्नी अपने दोख अछि सेहो नहियों कहल

जा सकैए। सर्वविदित अछि जे कोनो बच्चाक जन्म अज्ञानावस्थामे होइते छै, जेकरा जीता-जीवनक सभ शक्तिक बीज रहितो ओहन शारीरिक अवस्था होइ छै जे कछुआक बच्चा जकाँ नहि जे पानिक ऊपर देने दौड़ैत गेलौं आ अण्डा खसबैत गेलौं। ओइ अण्डाक शक्ति ओहन छै जे माए - बापक खोज नहि करैए, खगतो नइ होइ छइ। लगले अपने फुटि बच्चा भऽ जाइए। बच्चा होइते दौड़ैक शक्ति ओकरामे आबि जाइ छइ। दौड़ैक शक्ति अबिते अपन जीवनक भार उठा लइए। मुदा केतबो कछुआक बच्चा पनिगर किए ने हुअए मुदा ओ अपन माइयो-बापकेँ कहाँ चीन्हि पबैए? मनुख तँ से नहि छी। एकरा माता-पिता परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक सहारा छइहे। मनुखक जीवनक लेल भोजन मूल छी। भोजनक उपरान्त सभ्य समाजमे जन्म नेने जुगानुकूल वस्त्रक आवश्यकता दोसर आवश्यकता भेल। जंगली जीव तँ मनुख आब रहल नहि, आबक मनुख तँ बहुत ऊपर उठि गेल अछि। जइ अनुपातमे जीवन अछि तही अनुपातक ने आवासो चाही, तहिना पढ़ाइ-लिखाइ, बर-बेमारीक इलाजक संग साहित्य-कला इत्यादि सेहो सभ चाहबे करी। यएह भेल मनुखक जिनगीक ढाँचा।

अखन धरि जे अन्धकार मनुख समाजक बीच व्याप्त अछि ओ प्रकृतिगत सेहो अछि आ कृत्रिमगत सेहो। समाजमे रूढ़वादी विचार, अन्ध-बिसवास जे पसरल अछि ओ कृत्रिमगत अन्धकारक भारी स्रोत छी। रंग-रंगक अन्ध-बिसवास पसरलो अछि आ नव-नव शिरासँ पसारलो जाइते अछि। अखन बेसी नहि, अखन एतबे जे मिथिलांचलक मध्य जे दरभंगा-लहेरियासरायमे स्वास्थ्यक लेल अस्पताल बनल आ ओइमे आधुनिक ढंगक इलाजक जे बेवस्था भेल, की ओकर विरोध नइ भेल? खूब विरोध भेल। गाम-घरक जेतेक ठक-फुसियाह छल, सभ अपना-अपना ढंगे विरोध केलक। तँए की आइक मनुख ओकरा अधला बुझत। जीवनक एक मूल-भूत आवश्यकताक पूर्ति तँ भइये रहल अछि।

दुनियाँक बीच आजुक परिवेशक जिनगी केहेन बनए? ई तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। अखन जेकरा शहर-बाजार बुझै छी, ओइमे जिनगीक सभ मूल-भूत आवश्यकताक साधन बनि गेल अछि, जइसँ जिनगी असान भऽ गेल अछि। मुदा सीतापुर सन-सन गाम जे मिथिलांचलमे हजारो अछि, ओइमे किछु ने अछि! गामक जिनगी भारी बनि गेल अछि। तँए अपन मातृभूमिकेँ तियागि अपन शारीरिक मानसिक शक्तिकेँ जगा अपन-अपन परिवारक भरण-पोषण लेल एका-एकी सभ कियो दुनियाँक कोण -कोणमे जा बसि रहला अछि।

वैचारिक रूपमे अखनो हम मिथिलाक ओ रूप देखिये रहल छी, जे अदौक चिन्तनधाराक अनुकूल अछि। तँए हम सभ आजुक मिथिलाक चित्रांकन जँ नइ करब, तँ खाली जादू-टोना वा छू-मन्तर कहि देलासँ भए जाएत ई सम्भव नहि अछि। हजार-लाख बरख पहिलुका सतजुग-त्रेतासँ निकैल आइ हम सभ एकैसम सदीमे पहुँच चुकल छी।

बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे शत-प्रतिशत सफल भेल। शत-प्रतिशत सफल होइक पाछू दू कारण भेल। ने आन गाम जकाँ सतरह रंगक राजनीतिक दल छल आ ने आजादीक आन्दोलनमे सतरह रंगक विचार। काँग्रेस आ वामपंथी–माने पूजीवादी आ समाजवादी–मात्र दुइये विचारधारा गाममे छल। जखने काँग्रेस महाधिवेशनसँ बकास्त जमीनक प्रस्ताव पास भेल तखने सीतापुरक दुनू दल मिलि आन्दोलन रूपमे आन्दोलित भेल। जइसँ सफल भेल। ओना काँग्रेसी कार्यकर्त्ता जे छला ओ स्वामी सहजानन्दजीक विचारसँ प्रभावित छला आ अपनाकेँ स्वामीजीक भक्त सेहो बुझै छला।

सीतापुर गामक समाज सेहो देशकेँ कल्याणक दिशामे एक कदम बढ़ाएब बुझलैन। तँए आन गाम जकाँ ने सुदि-सवाइबला महाजन उठि कऽ ठाढ़ भेला आ ने भरना-बन्हकीबला भरनदार वा बन्हकीदार। तँए शान्तिपूर्ण ढंगसँ बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे सफल भेल। मुदा बगलेक

गाम रूक्मिणीपुरमे गधकिच्चैन भऽ गेल।

बीसमी शताब्दीक दोसर दशकमे गाँधीजी बिहार आबि चुकल छला। जमीनक सिस्टम आ जमीन्दारी शोषण सुनला पछाइत आएल छला। तइसँ पहिने 1880 इस्वीमे काँग्रेस पार्टी विदेशी ह्यूम द्वारा बनि चुकल छल। जइक भीतर गाँधीजी अपन कार्य संचालन केलैन। 1925 इस्वीमे वामपंथी पार्टी सेहो देशमे बनि चुकल छल। 1927 इस्वीमे सोसलिस्ट पार्टी सेहो बनि गेल।

रूक्मिणीपुर गामक सौभाग्य बुझी वा दुर्भाग्य वामपंथी पार्टी नइ बनल। वामपंथीक रूपमे समाजवादी आ दच्छिनपंथीक रूपमे काँग्रेस बनल। दुनूक आधार बदैल जातीय आधार बनि गेल। सभ तरहक –माने ओकातिक हिसाब, सम्पैतिक हिसाब–लोक दुनू पार्टीमे विभाजित भऽ गेला। ओना रूक्मिणीपुरक आमजन सेहो अंगरेजी हुकूमतक विरोधमे ठाढ़ भेल, मुदा नेतृत्व रहल सम्पैतशाली लोकक हाथमे।

बकास्त आन्दोलन उठिते रूक्मिणीपुरमे जातीय उन्माद उठि कऽ ठाढ़ भेल। जइसँ जातीय सत्ता जोड़ पकड़लक। देश स्वतंत्र नइ भेल छल मुदा जातीय उन्मादक केतेक रंगक विवाद गाममे ठाढ़ भइये गेल छल। मालगुजारीक लेल बैशाख-जेठ मासक रौदमे ईंटापर ठाढ़ करब सदृश केतेको घटना भऽ चुकल छल। छोट-छोट गल्तीमे पानिमे नहा घोरनक छत्ता देहपर झाड़ि चुकल गेल छल। गोला-लाठी भरि, भरि-भरि दिन रौदमे सजाए देल जा चुकल छल, वएह गाम छी रूक्मिणीपुर।

बकास्त जमीनक आन्दोलनक हवा उठिते रूक्मिणीपुरक सूदिखोर-महाजन उठि-उठि ठाढ़ भेल। जहिना काँग्रेस जातीय आधारपर भीतरे-भीतर विभाजित छल तहिना सोसलिस्ट पार्टी सेहो भइये गेल छल। नरमदल-गरमदल कऽ कऽ काँग्रेस आ सोसलिस्ट, प्रजासोसलिस्ट, संयुक्त सोसलिस्ट इत्यादि इत्यादि केतेको विभाजन दुनूक बीच भऽ चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलनसँ अगुआ गेल सूदिखोरी,

महाजनी।

ओना, दुनू पार्टीक बीच एहेन सेहो भेबे कएल जे एक -दोसरकेँ अँखिया-अँखिया माने जातीय आधारपर बकास्त जमीनक आन्दोलन छिट-फुट रूपमे जरूर जागल। मुदा ओ सामुहिक नहि, राजनीतिक दलक अनुकूल जागल। जे मात्र विचारधाराक अनुकूल रहल, आन्दोलनक अनुकूल नहि। गामो तँ गाम छी। कोनो गाम एक जाइतिक तँ अछि नहि, जे किछु मुद्दापर एक भऽ चलबो करत। तहूमे रूक्मिणीपुर तँ आरो अजीव अछि। ऐ गाममे देवी-देवता, स्थान-धर्मशाला सभ किछु बँटाएल अछि।

रूक्मिणीपुरमे आठ कट्ठा जमीन दखल करैक प्रश्न उठल। गामक ई पहिल घटना छल। भेल ई जमीन दखल करैक प्रश्नपर एक जाइतिक शूमा बनल। काल्हि जमीनपर हर चढ़ौल जाएत। रातिये भरिमे रंग-रंगक योजना गाममे बनए लगल।

आठ बजे भिनसरमे हर चढ़ैक समय जे निर्धारित छल, तइसँ पहिनहि, माने छबे बजेमे दू जाइतिक बीच एहेन मारि फँसि गेल जे दुनू दिससँ लहासे नइ खसल, एक दिससँ एकटा आ दोसर दिससँ दूटा मरबो कएल। अंगरेजक लड़ाइमे तँ रूक्मिणीपुरक एको गोरे जहल नहि देखने छला मुदा साल भरि दुनू जाइतिक लोक जहलेमे रहला , ईहो हिसाब तँ आजादीक आन्दोलनेक अंग ने भेल। आकि नइ? ❑ **पंगु, उपन्यास, पृष्ठ संख्या : 50-54**

नीक बोलक माने ई नै भेल जे बोले रसगर हुअए, बोल जइ काजक घोल करैए ओ काज रसगर होइ।

कौल्हुका साढ़े चारि बजेक ड्यूटी पुइर पढ़ुआ भाय सेवा मुक्ति क आदेश पत्र नेने भोरे गाम पहुँचला। सिताएल नढ़िया जकाँ पत्नी देखि बिनु किछु बजने चाह बनबए गेली। ओना, दूटा पुतोहुओ छैन मुदा ओ दुनू बहरबैये छथिन। जहियासँ भौजी एली तहियेसँ नवकी भौजीक नाओंसँ विभूषित रहली जे अखनो छैथे। भातिजो-पोता सभ भौजीए कहै छैन मुदा तइले एको पाइ रोख-मान नै होइ छैन। ओना, अपनो मन बुढ़ाड़ी नहियेँ मानै छैन तेकर कारण चुल्हि तरक काज रहलैन। जे मन फुरल, जेना मन फुरल तेना बना कऽ खेलौं।

नवके धेलहा कपमे चाहो आ गिलासमे पानियोँ नेने भौजी पढ़ुआ भाइक आगूमे रखि देलकैन।

चाह-पानिक स्वागत देखि भाइक मन खुशी भेलैन। मनमे उठलैन जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे सेवा-निवृत्ति भऽ आबि गेलौं। मुदा लगले भेलैन जे जाबे नै बाजब ताबे भारो तँ नहियेँ बुझती, तइसँ नीक जे चुपे रही। मुदा पति-पत्नीक बीच तँ चुपो-चुपी नहियेँ रहल जा सकैए।

पानि पीब चाहक घोंट लगैबते पढ़ुआ भाय बजला –

“बड़ सुन्नर चाह अछि।”

अपन प्रशंसा सुनि भौजी मने-मन गुर-चाउर फाँकए लगली। मुदा भाइक मन वौआ गेलैन।

जहिना पैंतीस सालक नोकरीक पछाइत पढ़ुआ भाय जगह बदैल रहल छैथ तहिना काजो बदलतैन। ओना, अखनो मन छुछुआइते रहै छैन जे जखन स्वस्थ छी, काजो नीक करै छी तखन काज छूटब नीक नहि।

मुदा सरकारियो निअम तँ निअम छिऐ, नहियोँ तँ नहियेँ मानल जाएत।

हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केलाक पछाइत पढ़ुआ भाय शहर जे धेलैन से नोकरीसँ निवृत्ति भेले पछाइत छोड़लैन। जहिना नीक विद्यार्थीमे गनल जाइ छला तहिना नीक शिक्षकोमे रहला।

प्रशंसाक लहैर जखन भौजीक थीर भेलैन तखन मुँह खोललैन–

"पहिने जे अबै छेलौं तँ साँझू पहरकेँ अबै छेलौं आइ किए भोरे आबि गेलौं।"

भौजीक बात सुनि पढ़ुआ भाइक मन सन्न -दे उड़लैन। मनमे झीक-तीर हुअ लगलैन। हुअ लगलैन जे सोझ मुहेँ कहि दिऐन जे नोकरी समाप्त भऽ गेल आब गामे रहब। फेर लगले भेलैन एते नीक नोकरी करै छेलौं कमा कऽ हाथमे दइ छेलिऐन तँ पत्नियोँ पाहुन जकाँ पुजै छेली। जखने बाजब तखने सुनती। बजैक मन तर-तर करैत रहैन मुदा मुँह बन्ने रखला।

असमंजसमे पतिकेँ पड़ल देखि भौजी तारतम करैत मानिनि जकाँ बजली– "जेतबो समय गाममे बितबै छी तेतबो समय नीक बोल कहियो कहलौं?"

पढ़ुआ भाय– "पुछबो तँ नहियेँ करै छी।"

"अहूँसँ पुछबे करब। आकि केना नीक जकाँ जिनगी चलत तेकर रस्ता परिवारकेँ धड़ाएब?"

"तइमे कमी भेल?"

"जँ से नै भेल तँ अखनो चुल्हि पजारैकाल आँखिसँ नोर किए खसैए?"

"से तँ अहींकेँ ने बुझए पड़त जे सुखल जरनामे मटिया तेल ढारि सलाइ खड़ैर कऽ लगौलासँ आँखिक नोर नै खसै छइ। कनी-मनी चुट-चुटी लगै छइ। तैठाम जे अहाँ काँच जारैनकेँ फूकि कऽ पजारब तँ नोर

खसबे करत किने?”

“ई भेल बात गढ़ब।”

“तखन?”

“तखन ई जे नीक बोलक माने ई नै भेल जे बोले रसगर हुअए, बोल जइ काजक घोल करैए ओ काज रसगर होइ।”

पत्नीक बोल सुनि पद्धआ भाय थकथका गेला। थकथका ई गेला जे सचमुच परिवार खण्डित भऽ गेल। बहरबैया कमेनिहार तँ रहलौं मुदा घरक नोन-तेलक भाँज कहियो नै बुझि सकलौं, जे कमेला ओ खर्चक भाँज नै बुझलैन आ जे खर्च केलैन ओ उपैतक भाँज नै बुझलैन। पसीना कमाएल जँ फूसि-फासिमे चलि जाएत, तखन परिवार केना ठाढ़ हएत। मुदा जे समय हाथसँ निकैल गेल, पश्चाताप केलाक पछाइत भइये की सकैए। मुदा एहनो तँ भइये सकैए जे दौग कऽ धारमे कुदी। खाएर जे हौउ, परिवार छी दीके-कि-सीके ठाढ़ तँ ऐछे। जखन जगह बदलत तखन जिनगियो किए ने बदलत...।

पद्धआ भाय करेज खोलि बजला– “आब अहींक राजमे आबि गेलौं।”

“मौगी जानि ठकै छी, दसटा पुरुखमे एकटा मौगी मौगी रहत आकि सासुर-मात्रिकक अणे खेलौना..!” ❑

अप्पन-बीरान, कथा संग्रह, 2014, पृष्ठ संख्या : 12-14

जीवनक समग्रतासँ धियान हटने
एते कमी मूल्यानन्दकेँ जरूर भेबे केलैन जे मात्र
वैचारिक रूपमे परिवारक संग रहला।

ओना, जीवन तीन रूपक अछि। पहिल अछि- नियमबद्ध जीवन। दोसर अछि नियम-अ-नियमक बीचक जीवन आ तेसर अछि सोल्होअना अनियमित जीवन। ओना, ओहू जीवनमे मनमौजी अछिए। कहब की मौजी? मनमौजी ई जे शास्त्रानुसार जैठाम पौने तीने बजे ऋषि-मुनी जकाँ जे ओछाइन छोड़ि यमुना नदी दिस बढ़ि अपन जीवन लीला शुरू करैए तैठाम आठ बजेमे उठि कियो यमुना धार दिस देखबे करत तँ कृष्णक वास्तविक रूप थोड़े देखत। खाएर जे देखत से दुनियाँ देखत तइले मूल्यानन्दकेँ कोन खगता छैन।

जीवनक समग्रतासँ धियान हटने एते कमी मूल्यानन्दकेँ जरूर भेबे केलैन जे मात्र वैचारिक रूपमे परिवारक संग रहला। कहैकाल सभ बेकती, परिवार आ समाजो कहिते छैथ जे जीवन संघर्ष छी। मुदा बेकतीक रूपमे की छी, परिवारक रूपमे की अछि आ सामाजिक रूपमे की अछि? जखन बेकतीक जीवन वा परिवारक जीवन वा समाजक जीवन वैचारिक जीवनक संग बेवहारिक जीवन पकैड़ नहि चलत, तखन समयसँ हारि मानि दिशा-विहीन हेबे करत। खाएर जे हएत से हुअ, तइले मूल्यानन्द भायकेँ की खगता छैन। खगता छैन एतबे जे परिवार अपन धारानुकूल गतिशील रहए। ओना, मन स्पष्ट बुझै छैन जे अपन जीवन-लीला बेढ़ग भइये गेल अछि। अबण्ड करीनवाह कहियौ आकि हर चलौनिहार हरवाह जकाँ छीपा-पनार कहियौ, से भइये गेल अछि जे दिनानुदिन बढ़िते जा रहल अछि। ❑

संचरण, कथा संग्रह, 2022, पृष्ठ संख्या : 54-55

ई मिथिला छिऐ। ऐठाम अदौसँ जाति-प्रथा नै रहल। ओना, समाजकेँ गलत रस्ता दिस बढ़बैले समाज-विरोधी शक्ति जाति-धर्मक कबच बना अपन उल्लु सोझ करैत रहल, तँए जाति-धर्म एते बुझि पड़ैए।

"जखन ऐठामक लोक एलोपैथ जनितो ने अछि तखन इलाज केना कराएत?"

पण्डित शंकर बजला- "अइले वैचारिक आ बेवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मोन अछि जे जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ रूपेँ बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।"

डॉक्टर नीलमणि- "तखन की करब?"

पण्डित शंकर- "हँ उपाय अछि। हम अहाँकेँ रस्ता बता दइ छी। अहाँ बंगाली छी जइसँ जाति आ घर्म दुनू झँपाएल अछि। ऐठाम मोटा - मोटी हिन्दूमे तीन वर्ण अछि। पहिल अगुआएल जाति , जेना सोति, ब्राह्मण, राजपुत, भूमिहार इत्यादि। दोसर पनिचल्ला जाति- जेना यादव, धानूक, कियोट, अमात, बरइ, कोइर इत्यादि आ तेसर अछि हरिजन। जेकरा समाजमे अछोप जाति कहल जाइ छै, जेकर पानि उच्च जातिक लोक नै पीबै छैथ। ने पानि पीबै छैथ आ ने छुअल अन्न खाइ छैथ।"

डॉक्टर नीलमणि- "अरे बाप रे! तब तँ समाज टुकड़ी-टुकड़ीमे

बँटल अछि?”

पण्डित शंकर मुस्कियाइत बजला- “यएह मिथिलाक विशेषता छै जे सभ सभ जाति आ धर्मसँ बँटल अछि मुदा सामाजिक सम्बन्ध सेहो मजगूत अछि। जखन कखनो कोनो आफद-असमानी अबैत तखन सभ एक भऽ सहयोग करैत। तेतबे नहि, जखन कोनो धार्मिक काज होइत तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत।”

कनी काल गुम्म भऽ पुनः डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन- “तखन तँ अजीब गति अछि?”

हँसैत पण्डित शंकर फेर बजला- “जेते जातिक चर्चा केलौं ओइमे आब फुटा-फुटा कऽ सुनू। एक जातिक भीतर, कुल-मूल आ गोत्रक आधारपर अनेक विभाजन अछि। जे एक जातिक रहनौं , ने दोसरक अन्न खाइए आ ने कथा-कुटुमैती करैए। ‘हम पैघ तँ हम पैघ’ ऐ उलझनमे सभ अपनाकेँ पैघ बुझि मस्त भेल अछि। जातिक रूआब, पैघत्व आ बुधियारीक रूआब सभमे छइ। मुदा ऐ सभ ओझरीमे अहाँकेँ नै जाइक अछि। आइए हम सभ वर्गक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजबै छी, ओहो सभ बेरोजगारो अछि आ लोककेँ रोगक उचित इलाज सेहो नइ भऽ पबै छै, जइसँ रोगी मरबो करैए आ रोगग्रस्त भऽ जिनगियो जीबैए।”

डॉक्टर नीलमणि- “एहेन परिस्थितमे केना डेग आगू बढ़ौल जाए?”

पण्डित शंकर- “आइ धरिक इतिहास यएह कहैए जे जहिया कहियो समाजमे जखन कोनो कल्याणकारी काज शुरू कएल गेल तखन समाजक बहुसंख्यक लोक ओकर विरोध केलक। मुदा केतबो विरोध भेल तैयो काज आगू बढ़बे कएल। जे बादमे सभ मानि करए लगल आ आइ चलैए। जइसँ सभकेँ लाभ भऽ रहल छइ। तँए एक्को पाइ चिन्ता नै करक चाही। एलोपैथी इलाजक प्रति जे विरोध ऐठाम अछि ओ शक्तिक विरोध नै अज्ञानताक विरोध छी। लोकक बीच जेना-जेना ज्ञानक ज्योति प्रखर होएत तेना-तेना लोकक झुकाउ एलोपैथी इलाज दिस बढ़त।

आइए हम अपनो गामक आ अगलो-बगलो-गामक सभ रंगक जातिक पँच-पँचटा नवजुबककेँ जे कम्मो पढ़ल-लिखल हएत, बजबै छी। अहाँ ओइ जुबक सभकेँ किछु दिन पढ़ा रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ उपचार धरिक ढंग बुझा देबइ। वएह सभ अहाँक परचारो करत आ छोट-छीन इलाज करैत सहयोगियो बनत।”

पण्डित शंकरक विचार डॉक्टर नीलमणिकेँ जँचलैन। मनमे संतोख भेलैन। संतोखक जन्म होइते मुस्कियाइत बजला- “अपने परिवारमे दुइए परानी छी और कियो नै छैथ?”

डॉक्टर नीलमणिक बात सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

“परिवार बहुत नमहर अछि, पढ़लो-लिखल अछि। दूटा बेटा आ तीनटा बेटी अछि। पाँचोक बिआह-दुरागमन भऽ गेल अछि। दुनू बेटो आ तीनू जमाइयो नोकरी करै छैथ। जहिना दुनू बेटा अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छैथ तहिना तीनू बेटियो-जमाए बाहरे रहै छैथ। हमहूँ संस्कृत महाविद्यालयमे शिक्षकक काज करै छेलौं। चारि साल पहिने नोकरीसँ सेवा निवृत्त भेलौं। दर्शनशास्त्र आ साहित्य पढ़बै छेलौं। जखन नोकरीएमे रही तखने बच्चा सभ नोकरी करए लगल। जखन सेवा निवृत्त भेलौं तखन दुनू बेटा कहलैन- ‘आब अहाँ बुढ़ भेलौं, घरपर असगर रहब नीक नहि। आब अहाँकेँ सेवा-टहलक जरूरत पड़त, जइले लगमे आदमी चाही। हम सभ केतौ रहब अहाँ केतौ, ओइसँ कष्ट हएत।’ दुनू भाँइक विचार अपनो जँचल मुदा जिनगी भरि तँ अपनो किताबेमे सन्हियाएल रहलौं। अपन कर्तव्य दिस जखन नजैर उठा कऽ देखलिऐ तखन मनमे आएल जे मनुख सिरिफ माइए-बापक बेटा नै होइत बल्कि समाजोक छी। माए-बापक ऋृण तँ चुका चुकलौं मुदा समाजक ऋृण तँ बाँकीए अछि। छठिहारे राति समाजक दाइ-माइ कोरामे लऽ अपन बेटा बनौने रहैथ तँए हुनकर ऋृण चुकबैले जिनगीक शेष समय हुनका बीच रहि चुकेबैन।”

पण्डित शंकरक बात सुनि डॉक्टर नीलमणिक हृदयमे बिसवास जगलैन। मनमे एलैन जे सभ आदमीकेँ कर्तव्यनिष्ठ हेबा चाही। जखने सभ अपन-अपन कर्तव्य बुझि कर्म करत तखने सबहक कल्याणो हएत आ मनुखक बीच प्रेम सेहो बढ़त।

डॉक्टर नीलमणिक चर्चा पँचकोसीमे चलए लगल। कियो 'डॉक्टर नीलमणि' तँ कियो 'सेन साहैब' तँ कियो 'बंगाली बाबू' तँ कियो 'डॉक्टर साहैब' कहि सम्बोधित करए लगलैन।

तीन सालक बेटा कपिलदेवकेँ। जन्मेसँ बच्चाकेँ तुतली लगल। साल भरि तँ बच्चाक तुतलीपर माए-बापक नजैरे ने पड़लैन। मुदा साल भरिक पछाइत दुनूक नजैर पड़लैन जे बच्चाक बोली गड़बड़ अछि। बोली सुधारैले कपिलदेव पहिने गहवर जा डाली लगौलक। तीन मासमे बच्चाक बोली नीक भऽ जाएत ई आश्वासन गहवरक भगता कपिलदेवकेँ देलखिन। भगताक असिरवाद सुनि दुनू परानी कपिलदेव बेरागने -बेरागने गहवर जा डाली लगबैत रहल। मनमे सोलहन्नी बिसवास रहै जे बच्चाक बोली सुधरबे करत मुदा मास दिनक उपरान्तो जखन बच्चाक बोलीमे मिसियो भरि सुधार नै भेलै तखन रसे-रसे दुनू परानीक बिसवास गहवरपर कमए लगल।

तीन मास बीत गेल मुदा बच्चाक तोतराएब नइ सुधरलै। पछाइत गहवरक आशा तोड़ि झार-फूकक रस्ता धेलक।

सुकनकेँ इलाकामे सभसँ नीक झार-फूक केनिहार बुझैत। केहनो साँप धेलहाकेँ मनतरेसँ छोड़ा दइत। ओना, गोटे-गोटे मरबो करैत मुदा अधिक बँचबे करैत।

दुनू बेकती कपिलदेव सुकन ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देखि सुकन कपिलदेवकेँ कहलक- "ई तँ बामा हाथक खेल छी, मुदा एकाबन रूपैआ पूजा-पाठ करैले पहिने जमा करए पड़तह।"

एकाबन रूपैआ पहिने जमा करैक बात सुनि कपिलदेव बाजल-

"अखन तँ संगमे ओते रूपैआ नै अछि मुदा अखनसँ ऐ बच्चाकेँ झार-फूक शुरू कऽ दियौ काल्हि भोरे एकाबनो रूपैआ दऽ देब।"

कपिलदेवक बात सुनि सुकन बाजल- "झार-फूकक बात अहाँ नै बुझबै। पहिने पूजाक सभ सामान कीनि पूजा करब। पूजा केलाक पछाइत देवता हुकुम देता तखन ने झारब। बिनु देवताक हुकुम नेने जँ होइत तखन तँ सभ झारि लैत।"

सुकनक बात सुनि दुनू परानी कपिलदेव विचारलक जे अखन चलू रूपैआक व्योंत कऽ काल्हि आएब। दुनू परानी विदा होइत सुकनकेँ कहलक- "अखन जाइ छी काल्हि ने तँ परसू आएब।"

कपिलदेवकेँ विदा होइत देखि सुकन कहलक- "अखन जँ अदहो-छिदहो रूपैआ जमा कऽ दी तँ हम काजकेँ जोरियबए लगब।"

सुकनक बात सुनि कपिलदेव कहलक- "संगमे नइए, घरोमे जँ रहैत तँ अखने आनि दैतौं मुदा घरोमे नइ अछि। जोगार करए पड़त। "

"बड़बढ़ियाँ, अखन जाउ। अगर एकाबन रूपैआक जोगार नै हुअए तँ कम-सँ-कम एक्कैसो रूपैआक जोगार अबस्स केने आएब। ओना, हम आइए पूजा करै काल देवताकेँ नोत दऽ देबैन। तँए काजमे बिथुत ने हुअए। जँ बिथुत हएत तँ उन्ना-सँ-दुन्ना दुख भऽ जाएत। तखन सम्हारब कठिन भऽ जाएत।"

बच्चाकेँ नेने दुनू परानी कपिलदेव घर दिस विदा भेल। रस्तामे घरवालीकेँ कहलक- "एक बेर दीनानाथ बाबासँ बच्चाकेँ देखा दितिऐ?"

कपिलदेवक विचार सुनि घरवाली बाजल- "बड़ बढ़ियाँ कहलौं। केते दुखताहकेँ दीनाना थ छोड़ौलखिन। भगवान केलैन जँ अपनो बच्चाकेँ छुटि जाए।"

इलाकामे दीनानाथ नामी वैद। जड़ी-बुटीसँ रोगक इलाज करैत। कम्मे रोग एहेन होइ जेकरा दीनानाथ वैद नै छोड़ा पबैथ बाँकी सभकेँ

छोड़ा देथिन।

बच्चाकेँ नेने कपिलदेव दीनानाथ ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देखि दीनानाथ कहलखिन- "बच्चाकेँ तुतली लगल अछि जे ऑपरेशन केलासँ ठीक हएत। हम ऑपरेशन नै करै छी। अहाँ सेन साहैब ऐठाम चलि जाउ। ओ ऑपरेशनसँ ठीक कऽ देता। रोग साधारण अछि तँए बेसी खरचो-बरचो नहियेँ हएत।"

दीनानाथक विचार सुनि कपिलदेव दुनू परानी बच्चा केँ नेने डॉक्टर नीलमणि ऐठाम आएल। डॉक्टर नीलमणि एकटा कम्पाउण्डरकेँ ऑपरेशनेक सम्बन्धमे बुझबैत रहथिन। कपिलदेवकेँ देखि डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन। कपिलदेव बच्चाक सम्बन्धमे कहलकैन। बच्चाक मुँह खोलि देखलखिन। जीह आ निचला तालुक बीच मौस जुटल। बच्चाकेँ कोठरीमे चौकीपर सुता कैंचीसँ काटि, दवाइ लगा बाहर आनि कपिलदेवकेँ कहलखिन- "साधारणे ऑपरेशन छल, जाउ ठीक भऽ गेल।"

कपिलदेव विदाहो ने भेल छल आकि दू आदमी खाटपर टाँगि एकटा रोगीकेँ नेने आएल। डॉक्टर नीलमणि तुरन्त उठि कऽ देखलखिन। ओइ आदमीक दहिना पएरक हड्डी टुटल देखि डॉक्टर नीलमणि रोगीक समाँगकेँ कहलखिन- "हिनकर पएरक हाड़ टुटल छैन, पलश्तर करए पड़त। बिनु पलश्तर केने पएर ठीक नै हेतैन।"

समाँग कहलकैन- "डॉक्टर साहैब जखन अहाँ ऐठाम एलौं तँ जे केलासँ पएर चलैबला हेतै से कऽ दियौ।"

समाँगक बात सुनि डॉक्टर नीलमणि अलमारीसँ पलश्तरक सभ समान लऽ पलश्तर कऽ देलखिन।

यएह दुनू इलाज डॉक्टर नीलमणिक जिनगीमे चारिचान लगा देलक। चौगामामे, बिहाड़ि जकाँ डॉक्टर नीलमणि सेनक गुण पसैर गेलैन। गुण पसैरते सभ दिन पनरह-बीस रोगी अबए लगल। जइसँ

डॉक्टर नीलमणिकेँ कमाइ हुअ लगलैन आ परोपट्टामे सर्जरीक इलाजो पसरल।

चारिक अमल। सुरूज पच्छिम दिस झुकि गेल जइसँ रौदमे तीखरपनो कमल। पण्डित शंकर डॉक्टर नीलमणि लग एला। डॉक्टर नीलमणि किताब पढ़ैत रहैथ। पण्डित शंकरकेँ देखि किताब मोड़ि टेबुलपर रखि पण्डित शंकरक मुँह दिस देखए लगला जे किछु बजता। विचार दैत पण्डित शंकर कहलखिन-

"डॉक्टर साहैब, आब अहाँले दूटा काज करब जरूरी भऽ गेल। पहिल, अखन धरि दरबज्जापर रहि इलाज करै छी से अलग बेवस्था करब आ दोसर बिआह करब।"

पण्डित शंकरक विचार सुनि डॉक्टर नीलमणि बजला- "अपनेक विचार तँ बड्ड उत्तम अछि मुदा अरचन तँ दुनूमे अछि। पहिल , घर बनबैले घराड़ी आ समानक जरूरत हएत। आ दोसर, हम तँ बंगालक रहनिहार छी, ऐठाम बिआह केना हएत?"

डॉक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

"अहाँक प्रश्न उचित अछि मुदा दमगर नै अछि। घर-घराड़ी-ले हम छी। बाड़ीमे घर बना देब। जे रोड-साइडमे सेहो अछि आ बीच टोलोमे अछि जइसँ चोरो-चहारक कोनो डर नै रहत। आ दोसर प्रश्न बिआहक अछि, ओहो कोनो बड़ पैघ समस्या नहियेँ अछि। ई मिथिला छिऐ। ऐठाम अदौसँ जाति-प्रथा नै रहल। ओना, समाजकेँ गलत रस्ता दिस बढ़बैले समाज-विरोधी शक्ति जाति-धर्मक कबच बना अपन उल्लु सोझ करैत रहल, तँए जाति-धर्म एते बुझि पड़ैए। ऐठाम स्वयंवरक चलैन अदौसँ रहल। स्वयंवरक अर्थ होइ छै स्वयं बड़केँ चुनि बिआह करब, जे जाति-पाँजिसँ अलग अछि। ❑ **उत्थान पतन, उपन्यास, 2009, पृष्ठ संख्या : 165-172**

“तखन यएह जे परिवारक जे पंगुपन रहल ओकरा पूर्ति करैत, ओइ पंगुपनकेँ मेटबैत जहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीवनक साँस लैत उड़ैए तहिना परिवारोकेँ बनाएब छह।”

“बौआ, जखन दुनू गोरे काजक विचार करैले एकठाम बैस गेलौं तखन माइयो आ दादियोकेँ बजा लहुन।”

बाबाक आदेशमे बिना किछु जोड़-घटाउ केने हरिचरण ऑगन जा दादियो आ माइयोकेँ कहलक। ओना, ओहो दुनू गोरे बिना किछु बजने - भुकने हरिचरणक संगे दरबज्जापर पहुँचली। राधाचरण सेहो परिवारक प्रमुखजनक सीढ़ीपर छल तँए ओकरो रहब अनिवार्य होइतै मुदा ऊहि नइ रहने परिवारक गौण-पात्र बनि गेल अछि। होइतो अहिना छै जे जइ परिवारमे जे जन जेहेन ऊहिगर रहल ओ अपन ऊहिक हिसाबसँ परिवारक क्रियामे ओत्ते संलग्न भइये जाइए।

तीनू गोरेकेँ देखि देवचरण बजला- “बौआ, जइ परिवारमे अपना सभ छी ओ परिवार एक्के गोरेक नहि, सबहक छी। तँए सभकेँ अपना-अपना उकितिये ऐ विचारकेँ नीक जकाँ मनमे रोपि अपना-अपनाकेँ ओइमे संलग्न रखबाके चाही। जँ से नइ हएत तँ किछु गोरेकेँ काजो आ जवाबदेहियोमे उदासीनता औत आ किछु गोरे जे अपन परिवारकेँ अपन बुझि सेवा करत ओ दोसरसँ अपनाकेँ महत्पूर्ण बुझबे करत। तँए सबहक बीच सबहक काजक जानकारी रहब जरूरी अछि।”

ओना, हरिचरण अछि तेरहे-चौदह बर्खक, मुदा देवचरणक विचारकेँ नीक जकाँ बुझि गेल। बाजल- “बाबा, ई तँ भेल वैचारिक क्षेत्रक बात, मुदा बेवहारिक क्षेत्र तँ ऐसँ अलगो भऽ सकैए किने?”

हरिचरणक विचार सुनि अपन सहमत जतबैत देवचरण मुड़ी

डोलबैत बजला- "बेस बात बौआ कहलह। परिवार तँ काजक धुरी बना कऽ ने चलैए। तेही सबहक विचार करैले ने कहने छेलियह जे सभ कियो एकठाम बैस एक मतक रस्तासँ परिवारकेँ आगू दिस बढ़ाएब।"

देवचरणक विचार सुनि हुनक पत्नी–सिंहेसरी बजली-

"हम दुनू सासु-पुतोहु स्त्रीगणे भेलौं, केतबो हएब तँ अपन घरे-अँगना आ खेते-पथार धरि हएब। तहिना हरिचरण सेहो बाले-बोध भेल। राधाचरणक कोनो ठेकाने ने अछि जे ओ की अछि आ की करत।"

पत्नीक विचार सुनि देवचरण मुस्की भरैत मुड़ी डोला-डोला मने-मन विचारए लगला। पत्नीक विचार सेल्होअना सत् अछि, मुदा सत् रहितो सोल्होअना उचित केना कहल जाएत? हँ, जइ परिवारमे पुरुख जीवित रहला, माने पुरुख प्रधान परिवारमे एहेन विचार सम्भव भइयो सकैए, मुदा जइ परिवारमे पुरुख नइ रहला तइ परिवारमे तँ महिलेक ने प्रधानता हएत। तैठाम हिनक विचार केना सम्भव भऽ सकत। मुदा अखन तँ गाम-समाजक विचार करए नहि बैसल छी, अखन तँ मात्र अपन परिवारक विचार करए बैसल छी, तँए अखन तँ पुरुखे प्रधान परिवार भेल। नीक हएत जे पहिने अपन परिवारक भूतक जानकारी संक्षेपमे सभकेँ दिऐ। जहिना कोनो धारक उद्गम स्थलसँ बीचक प्रवाहित होइत धाराक धार अन्तिम कोनो अगम धारे वा समुद्रेमे समाहित होइए तहिना ने परिवारोक अछि। ओना, पहाड़क दोसर रूप अछि। ओ धरतीपर उठल रहैए, जेकरा चोटीपर चढ़ैमे बहुत अधिक भीरो होइए, मुदा ओइठामसँ पुन: निच्चाँ उतरैमे, माने धरतीपर अबैमे, चढ़ाइ काल जेहेन मेहनत भेल रहत तेहेन ढलानपर ढलकैत उतरैमे भीर नहियेँ होइए। जखन कि रस्ता दुनूक चढ़ैयो आ उतरैयोक एक्के रहैए। मुदा ऐठाम तँ परिवारक विचार करैक अछि। परिवारक रस्ता धारो आ पहाड़ोसँ भिन्न अछिए। किए तँ धारे-पहाड़ जकाँ परिवारोक गति-विधि तँ अछि नहि। ऐठाम मनुखक बीचक रस्ता अछि। जइमे सामाजिक परिवेशक संग

शासकीय परिवेश सेहो अछि। शासन तंत्रक अनुकूल परिवारक परिवेश बनैए। जँ शासन-तंत्र परिवार पक्षी रहल तँ सुगम रहल आ जँ शासन-तंत्र प्रतिकूल रहल तँ विपरीत परिवेश बनिते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहह। ऐठाम तँ अपन बाप-दादाक निरमौल परिवार अछि, जेकर अपन इतिहास अछि। मुस्कियाइत देवचरण पत्नी दिस देखैत बजला-

"अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखवंशक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोड़े हएत।"

बजैक क्रममे देवचरण बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठए लगलैन जे अनेरे कोन विचार दिस भँसि गेलौं। अखन तँ हरिचरणकेँ परिवारक प्रमुख कर्त्ताक रूपमे ठाढ़ करैक अछि...।

बिच्चेमे हरिचरण बाजल- "बाबा, अखन जइ विचारे सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने ओकर विचार करू, पछाइत समय रहलापर आरो-आरो बात-विचार करब। ने कियो आन छी आ ने आइये भरि समयो अछि।"

ओना, हरिचरणक विचारसँ दादीक मनमे कनी कुवाथ जरूर भेलैन। कुवाथक कारण छेलैन अपन विचारपर सँ नजैर हटाएब, मुदा बाल-बोध हरिचरणकेँ बुझि मुँह बन्ने रखली। जे बात देवचरण बुझि गेला। मुदा ओइ विचारकेँ पुनः जागृत नहि करैत अपन परिवारक विचार उठबैत बजला-

"बौआ हरि, साठि बर्खक पारिवारिको जिनगीक आ शासनोक चढ़ाव-उतारक अनुभव अछि, जे तोरा नइ छह। तँए, संक्षेपमे पहिने ओ विचार भूमिका रूपमे जानि लेब बेसी नीक हेतह।"

जहिना असथिर भेल पोखैरक पानिमे आ प्रवाहित होइत धारक पानिमे हेलैक अलग-अलग लूरिक जरूरत होइ छै, माने पोखैरक हेलब जकाँ धारमे हेलब तँ डुमिये जाएब। किएक तँ प्रवाहित होइत धारक

धारामे हेल कऽ पार करैमे दोहरी सावधानीक जरूरत होइ छइ। पहिल, धारक धारेमे ने भँसि जाए, आ दोसर पार करब तँ अछिए। जे पोखैरमे नइ होइए। पोखैरमे मात्र एकटा सावधानीक खगता रहैए, एक महारसँ दोसर महारपर जाएब। हरिचरण बाजल- "बाबा, परिवारक जे पैछला धारा रहल माने इतिहास, ओ तँ आब भूत बनि चुकल अछि, ओकरा तँ वर्तमानक नजैरसँ नहियेँ देखल जा सकैए, मुदा जहिना वर्तमान भूतपर ठाढ़ अछि आ भविस दिस बढ़ैले हियासि रहल अछि, तहिना ने ओकरा मजगूतीक संग पकड़ैयोक अछिए।"

ओना, परिवारमे हरिचरण बाले-बोधक श्रेणीमे अछि मुदा यएह बाल-बोध ने भविसमे परिवारक मेह रूपमे ठाढ़ हएत। जहिना भिनसुरका सुरुज देखि लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत तहिना हरिचरणक बातकेँ सीमांकित करैत देवचरण बजला- "बौआ हरि, परिवारमे दू रंगक सदस्य होइए, पहिल पुरुख आ दोसर महिला। अखन तक जे अपना सबहक परिवारक धारा रहल, ओइमे जहिना पुरुखक लेल घर-बहार जाइ-अबैले, करै-धड़ैले सगतैर खुजल रहैए तहिना महिलाक लेल सगतैर तँ बन्धन लगले अछि। पुरुखक अछैत जँ महिला परिवारसँ निकैल पारिवारिक क्रिया-कलाप करैयो चाहती तँ परिवारक संग समाजोक लोक ऑंगुर बतेबे करतैन।"

बिच्चेमे हरिचरण बाजल- "एकरा के काटत! एहेन तँ सभ दिन होइते आबि रहल अछि!"

पैछला विचारकेँ देवचरण सोल्होअना कबुल लेलैन, मुदा भूतक कबुल कएल विचारकेँ भविसमे केना कबुलनामा बनौल जाए, ऐठाम आबि अँटैक गेला। देवचरण एक दिस जखन पाछू दिस हिया कऽ देखए लगैथ तँ साफ देखा पड़ैन जे परिवारक जे पैत्रिक सम्पैत अछि ओ तँ नष्ट भऽ गेल छल, मुदा परिवेश एहेन बनल जे ओ पैछला पीढ़िक अरजल सम्पैत पुन: परिवारमे जुड़ि गेल। तहिना आइ धरिक जे सामाजिक राज-

सत्ता रहल ओ गुलामीक रहल, माने विदेशी शासनक, जे मटियामेट भऽ पुन: स्वतंत्र रूपमे जीवित भऽ गेल। मुदा अपन जे जिनगी रहल तइमे आ आगूक जे हरिचरणक जिनगी हएत ऐमे विपरीत सम्बन्ध अछिए। तँए, पैछला जिनगीकेँ इतिहासक पन्नामे समैट ऐगला जिनगीक ने दिशा बोध करब जरूरी अछि...।

देवचरण बजला- "बौआ हरि, अखन धरिक जे परिवारक इतिहास रहल ओ पंगुक रूपमे रहल। माने जेहेन जिनगीमे लोक स्वच्छन्द साँस लैत बिचड़ैए से तँ नहियेँ रहल। तैयो अपन साठि सालक जिनगी कटि गेल। मुदा आब जखन अपना दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे देहमे ओहन शक्ति नहि अछि जेकर उपयोग करैत परिवारक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ ससारब, तँए जाबे जीबै छी ताबे जहाँ धरि सम्भव हएत से तँ करबे करब, मुदा... ।"

'मुदा' कहि देवचरणकेँ चुप होइत देखि हरिचरण उत्सुक होइत बाजल- "तखन?"

देवचरण बजला-

"तखन यएह जे परिवारक जे पंगुपन रहल ओकरा पूर्ति करैत, ओइ पंगुपनकेँ मेटबैत जहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीवनक साँस लैत उड़ैए तहिना परिवारोकेँ बनाएब छह।"

देवचरणक विचार सुनि जेना सभकियो पंगुपनक गम्भीरताकेँ बुझि गेल तहिना सभ सभ दिस नजैर दौड़बैत, गम्भीर होइत चुपचाप उठि-उठि अपन-अपन जीवन-क्रिया दिस बढ़ए लगल। ❑ **पंगु, उपन्यास, 2018, पृष्ठ संख्या : 77 82**

नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै जे समय निकालि डायरी लिखत। तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तँ ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

भोरहरबेमे सुकल भायकेँ नीन टुटिते मनमे उठलैन, जहियासँ ठेकान अछि तहियासँ जेतबेटा छेलौं तेतबेटा अखनो छी , तैबीच केते साल, केते मास आ केते दिन ससरैत ससैर गेल तेकर ठेकानो कहाँ अछि। ठेकानो केना रहत, जहिना अपने छी तहिना दिनो-राति तँ अछिए। ओहो कहाँ महिना-सालक संग अछि। मुदा ओ ठेकान औत केना? मिडिल स्कूलमे मास्सैव डायरी लिखनाइ सिखौलैन, हाइ स्कूल जाइत-जाइत छुटि गेल, तहियासँ डायरियो ने लिखै छी जे तेकरो देखि कऽ ठेकनाएब...।

ओना, नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै जे समय निकालि डायरी लिखत। तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तँ ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकेँ खोद-बेद करैत रहब।

ओना, खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना- बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि- गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान- खुनी आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..! ई खुनब आकि खोदब असान थोड़े अछि? आ तइसँ की कम वेदोक थोड़े अछि? एक्के चिकसकेँ दूध-पीठिया बनाबी आकि दलि-पीठिया, चाहे आगिमे पका कऽ लिट्टी बनाबी आकि तेल-घीमे पका पुड़ी-कचौड़ी बनाबी, चाहे रोइटपक्कामे पका रोटी-सोहारी बनाबी- जेकर एकटाकेँ पपरे ने हएत तँ दोसरमे गुद्दे गाइब भऽ पपरे भऽ जाएत। ई तँ भेल तेल-घीमे मुदा तँए कि पानिमे नइ होइए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना दूध -पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...। ..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल- तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलेँ बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..! ❑ **अपन मन अपन धन, कथा संग्रह, 2015, पृष्ठ संख्या : 16-17**

भजन जेहने तूँ साँझ-भोर राति-दिन लय-धुन बदैल-बदैल एके बातकेँ औंटैत-पौड़ैत रहै छह तेहने गणेश छैथ। भारी देखि हाथी चढ़ब नीक बुझलैन मुदा हाथी केना पोसाइत अछि से लूरिए ने भेलैन।

(भजन लाल, मिसर लाल, रमण लाल आ सुरेश अबैए।)

भजन लाल- भाय, दुनियाँक खेल अजीब अछि। जेना समुद्रमे जाइठ सीमा नै होइ छै तहिना ने अछि। ऐ अथाह माटि-पानिक बीच टपैक तीनू बाट तेहेन भऽ गेल जे..?

मिसर लाल- चुप किए भेलौं, भाय?

रमण लाल- भजन भाय, दिलेरक संग दिलक जखन भेँट होइ छै तखन एकटा नव ऐनाक रंग चढ़ै छै तँए मुँहक बात घोँटी नहि, नइ पचए तँ उगैल दिऐ।

भजन लाल- (विस्मित होइत) भाय! एकटा बाट तेना बनरा गेल जेना गाछ-बिरीछमे होइ छै जे कोढ़ियो-बाती देब छोड़ि दैत अछि। दोसर दोगलाइए गेल। तेसर बेटाक रगड़ामे बुढ़ाड़ी धरि वस्त्रधारीए रहला सुखदेव जकाँ आरबन-कोपीन नै लेलैन! खाएर जे हौउ...। पहिने बैसैक ओरियान करू।

(मिसर लाल मोटरी खोलि सतरंजी पसारए लगैत अछि, तीनू गोरे कोण पकैड़ जाजीम बिछबैए। बिछान तैयार होइते रत्नाकर मंचपर अबैए।

(रत्नाकरक प्रवेश।)

माथमे तीन भीरी केश बान्हल, चानिपर तीनटा लकीर, दुनू दिस उजरा आ बीचमे लाल। दाढ़ी-मोछ भयंकर। बाँहिमे आ गरदैनमे

रूद्राक्षक माला, दहिना हाथमे कमण्डल, पीठीपर लंगोटामे बान्हल पुरान कम्मलक मोटरी।

(मंचपर रत्नाकरकेँ अबिते तीन गोरे नारा लगबैत) 'रत्नाकर भैया!' 'जिन्दावाद।' 'रत्नाकर भैया!' 'जिन्दावाद।'

रत्नाकर- (पाछू घुमि) सोझे हल्ला केने आ नारा लगौने नहि हएत। सभ चुप-चाप भऽ जाउ। बेरा-बेरी अपन-अपन जिनगीक बात-विचार समाजकेँ सुना दियौन। धर्मराजक न्याय भेटत, नहि कि यमराजक।

महेश- भाय साहैब, अपनेक जीवन यात्रा बहुत नमहर अछि ओते सुनैले ओतेक निचेनियोँ चाही ने, से भुखल पेट केतेकाल सुनि अमल करत। जइ इलाकामे साले-साल रौदी, दाहीक संग उपजाउ माटि नष्ट भऽ गेल अछि तइ इलाकाक यात्री केते दूर जीवन यात्रा कऽ सकैए ?

रत्नाकर- की मतलब?

महेश- भूखे भजन ने होई गोपाला। लिअ रखि गुरु कण्ठीक माला।

रत्नाकर- महेश, अहाँक प्रश्न जेहने सुन्दर अछि तेहने कठिन। मुदा समुद्रसँ रत्न निकालब आ जंगलसँ सिर-शिरोमणि आनब, दुनूक दू दिशा अछि।

गणेश- एना नहि हएत, कनी ओंगरीपर

हिसाब बैसा कऽ बुझा दिअ।

(ओंगरीपर हिसाब जोड़ैत)

रत्नाकर- गणेश बाउ, कान खोलि सुनि लिअ। ई धरती विशाल रंगमंच छी। माटि-पानिक बीच रंगमंच सजल अछि। जे जेहेन यात्री छैथ ओ ओहेन अपन बाट पकैड़ पार करै छैथ।

गणेश- की मतलब?

रत्नाकर- मतलब यएह जे कियो अपन जिनगी हवन करै छैथ तँ कियो दोसराक हवन लैत अछि। खाएर जे हौउ...।

(बिच्चेमे, मिसर लाल अपन बात उठबए चाहलक आकि सुरेश ललैक कऽ बाजल)

सुरेश- अनेरे..!

रत्नाकर- तखन पहिने फरिछा लिअ पड़त जे खाइले जीबै छी आकि जीबैले खाइ छी। दान देब नीक आकि लेब नीक, आकि लेब-देब दुनू नीक, आकि देब-देब नीक।

गणेश- लेब-देब नीक छी। दुनू नीक छी। कोनो ने नीक ने कोनो अधला छी।

भजन लाल- तखन?

गणेश- बेवहारिक धरातलपर जे अधिक नीक हुअए?

भजन लाल- अधिकोक दू दिशा छइ?

गणेश- से की?

भजन लाल- अधिक लोकक शाब्दिक विचार आकि अधिक लोकक जिनगीक विचार?

रत्नाकर- भजन जेहने तूँ साँझ-भोर राति-दिन लय-धुन बदैल-बदैल एके बातकेँ औंटैत-पौड़ैत रहै छह तेहने गणेश छैथ। भारी देखि हाथी चढ़ब नीक बुझलैन मुदा हाथी केना पोसाइत अछि से लूरिए ने भेलैन। ❑ **रत्नाकर डकैत, नाटक, 2013, पृष्ठ संख्या : 15-19**

“मदन, तूँ ते अपने पण्डित छह, जखन तोरा अपना बुते निर्णय कएल नइ भेलह तखन हमरा बुते हएत।”

“की बात मदनेसर?”

‘की बात’ सुनि मदनेसर भाइक मन थरथरा गेलैन। मुदा क्रोधोक तँ अपन समैयक हिसाबे सीमा अछि, तँए विचारमे कनी-मनी फेड़-फाड़ भइये जाइए।

तैबीच बिच्चेमे चौकीपर सँ उठि मदनेसर भाय बजला- “कनी पेशाव केने अबै छी तखन निचेनसँ सभ गप करबह।”

किछु विचार करैक बहन्ने मदनेसर भाय उठला आकि पेशाव करए उठला से तँ ओ जानैथ मुदा जागेसर भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक कोनो तेहेन उझट बात बेटे वा पत्नियेँ जरूर कहलकैन अछि जइ बेथासँ मदनेसरक हृदय बेथित जरूर छैन। मुदा से तँ बजला पछातिये बुझब। भऽ सकैए जे ओहन चोटाएल बात बजबे ने करए। जँ नइ बाजत तँ अपने अनुमानसँ पुछबै, मुदा तैयो जँ खोलि कऽ नहि बाजत तँ जएह सुनने रहब तेकरे जवाब ने सुनेबै।

मदनेसर भायकेँ चौकीपर बैसते जागेसर भाय पहिने चेहराकेँ नीकसँ हियासलैन। चेहरामे बेसी चढ़ा-उत्तरी नहि देखि बजला- “बाजह।”

जहिना पानिमे सौरखी-करहर वा मखानकेँ पानिक ऊपरक पात पकैड़ नाले-नाल भँजियबैत बिच्ची पकैड़ उखाड़ल जाइए तहिना मदनेसर भाय जड़िये पकैड़ बजला-

“जहिना बेटा कुकुर भऽ गेल तहिना घरोवाली भऽ गेल। दुनूमे के कम से निर्णये ने कऽ पाबि रहल छी।”

मदनेसर भाइक मुहसँ 'निर्णय' सुनि मुस्की दैत जागेसर भाय बजला-

"मदन, तूँ ते अपने पण्डित छह, जखन तोरा अपना बुते निर्णय कएल नइ भेलह तखन हमरा बुते हएत।"

ऐठाम पण्डितक अर्थ जाति विशेष नहि, विचार विशेष अछि, तँए गलत नजरिये नइ देखल जाए। पण्डितक अर्थ गाम-समाजमे पूजा-पाठ विशेषसँ अछि, जे एक जातिक बीच नहि सभ जातिक बीच अपन-अपन पुजौनिहार भऽ गेल छैथ।

जागेसर भाइक बात सुनि जेना आरो बेसी तामस मदनेसर भायकेँ लहैर गेलैन तहिना बजला- "जेकरा सभ-ले दिनकेँ दिन नइ बुझै छी आ रातिकेँ राति नइ बुझै छी, दिन-राति रने-बने वौआइत रहै छी, जखन सएह ने मोजर दइए, तखन दुनियाँ मोजर देत!"

मदनेसर भाइक विचारक आँट-पेट देखि जागेसर भाय कान कुरियबैत बजला-

"पहिल बात तँ ई कहबह जे अपनो उमेरक लेहाज राखह। दोसर ई जे केकरो मोजर देने केकरो मोजर थोड़े होइए। ओ तँ ओकर अपन विचारानुकूल किरिया-कलाप केने होइए।"

ओना बजैक क्रममे जागेसर भाय बाजि गेला मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे उमेरक माने मदनेसर जन्म तिथिक समयसँ ने बुझि गेल होथि। मुदा जखन गप-सप्प कइये रहल छी तखन आगू ऐ विचारकेँ फरिछा लेब जे उमेरक माने भेल जिनगीक सर्वांगिन विकसित मेड़।

'केकरो कहने केकरो मोजर होइए' सुनि मदनेसर भाय चौंकला। देहमे सिहरन उठए लगलैन। ❑ **पैंतीस साल पछुआ गेलौं, कथा संग्रह, 2017, पृष्ठ संख्या : 52-53**

अखने तोरा समय छह, पछाइत जखन घर-परिवारमे ओझरेबऽ तखन एहेन समय थोड़े भेटतह, से नहि तँ अनुकूल समय छह हमर खर्च तोहर पढ़ाइ।

फुसन काका गामक ओहेन लोक जिनका अदहा गामक लोक फुसियाह झुट्ठा कहै छैन तँ अदहा गामक लोक उचितवक्तो आ ठाँहि-पठाँहि बजनिहार सेहो तँ कहिते छैन। ई तँ अद्भुत खेल अछि जे एके गोरे दुनू केना? साल-दू-साल फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ जेठे रहैथ, मुदा जेठ-छोट उमेरेटा सँ नै मानल जाइए दोसरो-तेसरो कारण छै, खाएर जे छइ। फुसन काका कमिश्नर साहैबक बगलेमे बैस पहिने तँ दोसर-तेसरक बात सुनलैन मुदा चाह पीला, पान खेला पछाइत अपनो मुँह खोललैन-

“जुगो पछाइत दुनू गोरे एकठाम भेलौं, सभ हेरेलहा समय हेरा गेल। केम्हर-केम्हर उदए भेलै?”

कानून-कायदाक लोक रामरूप बाबू तँए शास्त्रीय भाषाक बोध नहि। मुदा तैयो अपन बात रखैत बजला- “अपन जे पाँचो बीघा चौमास अछि तइमे सागवानक खेती करब।”

कमिश्नर साहैबक बात सुनि फुसन कक्काक मन कड़कलैन। कड़कलैन ई जे दसे बीघा नकोर जमीन गाममे अछि, तेहेन चौरियाह गाम अछि जे केकरो घर छै तँ अगवास नहि आ अगवास छै तँ गाछी-कलम नहि, तैठामक खेतमे सागवानक खेती गाममे हएत! वन विभागकेँ बोनक जंगलेटा सुझै छै मंगल नै सुझै छइ। दुनियाँक कोन एहेन उपजा अछि जेकरा मिथिलांचलक भूमि अंगीकार करैक शक्ति नै रखैए, मुदा ई तँ विचारणीय भेल। बर्खाक कटाउ हौउ आकि बाढ़िक आकि वायु प्रदूषण, गाछ-बिरीछ तँ जरूरी अछिए। मुदा जैठामक गाछ फलो दइए,

लकड़ियो दइए, नीक ऑक्सिजनो दइए तेकरा छोड़ि जे एकमुश्त पनरह बरख सम्पैतकेँ घेराबन्दी कऽ लेब.! तहूमे जेकर उपयोग अपना जिनगीमे नहि.!

मुदा बजला किछु ने। हड़ताली कर्मचारी जकाँ मुँहमे ताला झुलौने रहला, तरे-तर हूँहकारी भरैत रहला। चारूकात घुमा-घुमा मुड़ी डोलबैत रहला। मन केम्हरो, शकल-सूरत केम्हरो घुमि रहल छैन! समाज दिस नजैर पड़िते मन हुमड़लैन। हुमड़लैन ई जे समाजोकेँ की डोराडोरि छै जे डाँड़ सक्कत रहतै। बिनु डोराडोरिक समाज केमहर करखन ससैर जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। नीक करू आकि अधला, किछु गोरे तँ संग पुरनिहार हेबे करता, जखन समूह संग पुरनिहार तखन समाजक जँ विरोधो अछि तँ समर्थनो तँ अछिए। समाजे पाबि ने कियो शक्तिशाली बनैए। भलेँ समाज जेहेन होइ। नमहर भेने नमहर आ छोट भेने छोट। तहिना नीकक बनने नीक आ अधलाक बनने अधला...।

मुदा लगले फुसन कक्काक मनमे उठलैन, एक तँ ओहिना पाइ-कौड़ीबला लोक रामरूप बाबू छैथ, तैपर सरकारक बीच अपन हस्तियो छैन। बढ़ा-चढ़ा कऽ बजबे करता, अनेरे दसटा फलतुआ लोको संग देबे करतैन। गपे-सप्पमे विचार भेद भेने ने गारि-मारि अबैए, किए ने औत.?

फुसन कक्काक गुमी देखि रामरूप प्रसाद बुझलैन जे भरिसक विचार नीक लगलै। अपन विचारकेँ आरो मजगूती दैत बजला- “एकटा बात बुझल अछि किने?”

‘एकटा बात’ सुनि फुसन काका चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे गामक बात आकि बाहरक। मन गवाही देलकैन जे बाहरसँ मतलबे की आ गाममे रहै छी हम आ हमरे नै बुझल रहत...।

अह्लादित अतिथि जकाँ आँखि-भौ, मुँह बिहुसबैत पुछलखिन- “से की?”

मुँह बाउल बच्चा जकाँ फुसन काकाकेँ बुझि चहरा दैत रामरूप

बाबू कहलखिन- “खाली अपने खेतीक बात नै अछि, गामक जे कियो सागवानक खेती करए चाहता सभकेँ सरकारी अनुदान दिआ देबैन। हमहूँ ओही विभागसँ ने जुड़ल छी।”

जहिना तामस उठला पछाइत बुधियार, गिलास भरि पानि पीब तामसकेँ दबैत अछि तहिना फुसन काका पानक खिल्ली बदलैत, रीशकेँ कम केलैन। मुदा पेटक वायु डिरियए लगलैन। डिरियए ई लगलैन जे जो रे अन्हरा लोक, अन्हरा गाम आ अन्हराएल अन्हरा...। कहू.! जे मिथिलांचलक भूमि ओहन सक्कत-सक्कत गाछ-बिरीछकेँ पेटमे समेटने अछि जेकर तरव्तामे बन्दूकक गोली नै छेद सकैए, ओहन गाछ जे प्रकृतिक रंगक संग ओहन-ओहन फलो दइए जेकर तुलना कोनो आन भूमि नै कऽ सकैए, तैठाम जँ लोकक एहेन धारणा बनि जाए जे पनरह-बीस सालक खेती एक बेर पूजी लगौलासँ भऽ जाएत, बाँकी साल निगरानी भरि, तखन खेतबलाक हाथमे पनरह-बीस बरख धरि काज की रहल?

रामरूप बाबूक विचार सुनि फुसन काका जेना मनक लोकसँ आगू बढ़ि संकल्पित लोक पहुँच गेला। समाजकेँ अपन गाम-समाजक विचार अपना ढंगसँ करए पड़तै। मुदा से ओहिना करत आकि समाजक नीक-अधलाक विचार करैत करत? कोन गाम एहेन अछि जइमे शिक्षाक मदमे गैर सरकारीसँ लऽ कऽ सरकारी धरि करोड़ोमे नै चलि रहल अछि, मुदा शिक्षाक स्तर की अछि..!

अकछैत मन फुसन काकाकेँ विचार देलकैन-

“कियो कीमती हरिअर-सुखाएल तरकारी बुझि अपना खेतमे सांगरीए लगा लेत तँ लगा लगाबह! मुदा अपन की हएत से विचार करैत करह...।”

उठैत-उठैत फुसन काका बजला- “अखन रहब किने?”

फुसन कक्काक मोनक बात जे हौउ, मुदा रामरूप बाबू बजला-

"जेना अहाँ सभ रहए देब तहिना ने रहब?"

सभ बातक जवाब टटके नीक नै होइ छइ। चुपे-चाप फुसन काका विदा भेला। मुदा मन कहलकैन- "एहेन किरदानी आकि किरदानी केनिहारक बास समाजमे उचित नहि.!"

गामक ओहेन परिवारमे रामरूप प्रसादक जन्म भेल छेलैन जेकरा समाजमे सुभ्यस्त मानल जाइ छेलै। पनरह बीघासँ ऊपर जमीन, पिता मेहनती किसान, कहियो परिवार चलबैमे खाँच नै भेलैन। तैसंग समाजमे पैंचो-पालट करिते छला। गाममे स्कूल नै रहने रामरूप ममहरेमे रहि मिडिल पास केलक। मिडिल पास केलाक पछाइत होस्टलक खर्च पिता दिअ लगलखिन। आन विद्यार्थी जकाँ रामरूपकेँ कहियो ने भेलैन जे कोर्सक किताब नै अछि आकि फीसक दुआरे परीक्षे छुटि गेल। मैट्रि क पास केलाक पछाइत पिताकेँ अपन हाथक मेहनत कएल पाइक मोल लालमे बुझि पड़लैन। एते तँ बात ऐछे जे पितोकेँ कहियो हाँट-दबार करैक मौका रामरूपक प्रति नै भेटलैन। कहियो कानमे भनक नै लगलैन जे आन-आन जकाँ ताड़ी-दारू करैए। तैसंग साले-साल पासक फल सुनि मनमे गदगदी चढ़िते गेलैन। कौलेजमे नाओं लिखबैक प्रश्न जखन रामरूपक उठलैन तखन पिता स्पष्ट कहि देलखिन-

"ऐ धनकेँ जेते चला-बना पुरा सकब तेते तँ पुरेबे करब मुदा जखन नै पूरत तखन खेतो-पथार तँ ऐछे, मुदा जँ तोहर विचार आगू पढ़ैक छह तइमे नै रोकबह। अखने तोरा समय छह, पछाइत जखन घर-परिवारमे ओझरेबऽ तखन एहेन समय थोड़े भेटतह, से नहि तँ अनुकूल समय छह हमर खर्च तोहर पढ़ाइ।" ❑ **रटनी खढ़, दीर्घ कथा संग्रह, 2014, पृष्ठ संख्या : 10-14**

“अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखवंशक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोड़े हएत।”

जखनसँ देवचरण अपन पोताकेँ कहलैन जे ‘बौआ, साँझू पहर, परिवारक सभ एकठाम बैस आगूक विचार करब’ तखनसँ हिनका मनमे बेर-बेर वएह प्रश्न घुरियाए रहल छैन जे परिवारमे जहिना अवोध-अनाड़ी हरिचरण अछि, तहिना तँ आनो-आन अछिए, मुदा परिवारक भार तँ ओकरे सबहक ऊपर ने पड़त। तँए केतेक भार कोन रूपे केकरा देल जाए, तेकर निर्णय करब साधारण बात नहियेँ अछि। मुदा नइ रहितो भार तँ ओकरे देब अछि।

ओना, अखन अपनो जीबै छी आ पिता-माताक संग दादी सेहो हरिचरणक सोझामे छइहे, जइसँ कोनो काज जँ गरुगर बुझियो पड़तै तँ दोसर-तेसरसँ पुछि ओइ काजकेँ सही ढंगसँ कएलो तँ जाइए सकैए। जैठाम से नहि रहैए तैठाम ने काजक सफलतामे किछु-ने-किछु गड़बड़ी होइक सम्भावना सेहो रहिते अछि। ओना, मनुखक सामाजिक जीवन ओहन अछिए जेकर जीवन धार समाजक धार होइत प्रवाहित होइए जइसँ देखैक, जनैक आ करैक सम्भावना सेहो रहिते अछि। हँ, जैठाम सामाजिक जीवन नइ रहल, माने बेकतीगत जीवनधाराक धार ओइसँ भिन्न रहल तैठाम बेकती औआ-वौआ जाइते अछि। मुदा जैठाम बेकतीक जीवन धार सामाजिक जीवन्त धाराक संग प्रवाहित होइए, तैठाम तँ किछु-ने-किछु सिखबो आ सम्हरैयोक उपाय रहिते छइ।

जहिना देवचरणक मन अपन पोताक भविसक दिशा निर्धारित करैमे ओझराएल छेलैन तहिना हरिचरणक मनमे सेहो बेर-बेर प्रश्न उठि रहल छल जे बाबा की कहता, की पुछता आकि की करैले कहता। खाएर जे कहता मुदा बुझब तँ सुनला पछातिये ने आ बुझला पछातिये ने

ओकरा सम्हारबोक कोशिश करब। बिनु बुझल आकि बिनु विचारल काज करैमे किछु-ने-किछु ओहन विघ्न-बाधा एलापर समस्यामे लोक पड़िते अछि। जहिना नव जगह, माने बिनु देखल-जानल जगह वा बिनु बुझल-जानल काज, नव लोकक लेल अन्हराएल जकाँ रहिते अछि, मुदा वएह काज सफलतापूर्वक केलाक पछाइत जीवन-शक्तिमे तीव्रतो तँ अबिते अछि।

दिन बीतल। ओना, देवचरण अपन पत्नीसँ आ पुतोहक बीच पारिवारिक आन-आन गप-सप्प करैथ, मुदा सौंझुका बात-विचार करैक योजना अखन तक दुनूमे सँ किनको ने देवचरणे कहने छेलखिन आ ने हरिचरणे कहने छेलैन। तँए हरिचरणक दादियो आ माइयोक मनमे कोनो विचारक बिन्दु उठबे ने कएल छेलैन। ओना , जखन सभ एक्के परिवारमे छी आ परिवारेक जिनगीक बातो अछि, जे किछु-ने-किछु सभकेँ बुझलो छैन्हे, तैबीच सौंझुका बैसारक जानकारियो देब ओते महत् नहियेँ रखैए, जेते आनक संग रहैए। जिनगीक नीक-बेजाए बातो आ काजोक तँ किछु-ने-किछु जानकारी रहने सुगमसँ विचारोकेँ बिकछाएब आ काजोकेँ फरिछाएब सहायक होइते अछि। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि। ऐठाम तँ पारिवारिके विचारो छी आ काजो छीहे। हँ, जँ कोनो नव काजे आकि नव विचारे रहैत तखन सामान्य जिनगीसँ हटलो रहैत जइसँ किछु-ने-किछु नीक-बेजाइक सम्भावना रहबो करैत, मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि।

साँझक आगमन भेला पछातियो, ने देवचरणेक मनमे कोनो तरहक उथल-पुथल छेलैन आ ने परिवारक आने-आन जनक बीच। सासु-पुतोहुकेँ बुझले ने छेलैन तँए हुनका दुनूक मन मे उथल-पुथलक कोनो सम्भावनो किए रहितैन। देवचरण तँ सहजे परिवारमे सहयोगीक रूपमे पोतापर नजैर गड़ौनहि छला तँए हिनका मनमे कोनो तरहक मलिनता किए रहितैन। हँ, हरिचरणक मनमे किछु-ने-किछु उथल-पुथल जरूर छल। बाबा की कहता की नहि..! बर्खाक पानिक बुलबुला जकाँ

हरिचरणक मनमे विचार उठबो करै छेलै आ अपने फुटि-फुटि मेटेबो करै छेलइ।

अपन निर्धारित समयक हिसाबसँ किछु पहिनहि देवचरण दरबज्जापर बैस मने-मन विचारए लगला जे कोन रूपे हरिचरणकेँ बुझौल जाए। ओना, परिवार सभमे एहनो होइते अछि जे जे परिवारक सिरजन रहला ओ सबहक काजकेँ ऑकि -ऑकि फुटा-फुटा सभकेँ करैले कहिते छैथ, जइसँ परिवारक सम्मिलित काज रहितो एक-दोसराक बीच दूरी रहिते अछि, माने ई जे सभकेँ सभ काज नहियोँ बुझल रहल। ओना, एहेन भेलासँ एकटा एहेन विचार जगिते अछि जे आनक काज नहि बुझल रहने दोसरक मनमे उठि जाइए जे हमहींटा काज करै छी आ दोसर-तेसर बैसले रहैए, तँए परिवारक जँ सभकेँ सबहक काजक जानकारी रहल तँ सबहक मनमे एहेन विचारक आगमन भइये जाइए जे सभ अपन-अपन काजक पाछू लागल छैथ, जइसँ किनको मनमे काज नइ करैक शंकाक आगमन नहियेँ होइए। तैसंग ईहो लाभ तँ होइते अछि जे परिवारक सभ काज सबहक नजरियोपर रहल आ केकरो बैसल रहैक शंका नइ रहने सबहक प्रति सबहक मनमे प्रेमो बढ़ल।

देवचरण ई सोचि काजक निर्धारित समयसँ पहिने काजक पाछू लगि गेला जे जँ कोनो काज करैसँ पहिने ओइ काजक भूत-भविसपर नजैर दौड़ा देब तँ ओइ काजकेँ सफल होइक बेसी सम्भावना बनियेँ जाइए। जँ से नइ भेल तँ काजक बहुतो बिन्दु गप -सप्पक क्रममे नजैरपर नहियोँ चढ़ैए, जइसँ विचार केलाक पछातियो किछु-ने-किछु बिन्दु छुटल रहि गेने काजमे कमी होइते अछि।

देवचरणकेँ दरबज्जापर बैसल देखि हरिचरण सेहो आबि कऽ बैसल। मुदा बाजल किछु ने।

हरिचरणकेँ चुपचाप बैसल देखि देवचरणक मनमे जगलैन जे जखन दुनू गोरे काज करैक क्रममे उपस्थित भइये गेल छी, तखन जँ

चुपचाप समयकेँ निकलए दिऐ सेहो नीक नहियेँ हएत। देवचरण बजला-

"बौआ, जखन दुनू गोरे काजक विचार करैले एकठाम बैस गेलौं तखन माइयो आ दादियोकेँ बजा लहुन।"

बाबाक आदेशमे बिना किछु जोड़-घटाउ केने हरिचरण ऑगन जा दादियो आ माइयोकेँ कहलक। ओना, ओहो दुनू गोरे बिना किछु बजने - भुकने हरिचरणक संगे दरबज्जापर पहुँचली। राधाचरण सेहो परिवारक प्रमुखजनक सीढ़ीपर छल तँए ओकरो रहब अनिवार्य होइतै मुदा ऊहि नइ रहने परिवारक गौण-पात्र बनि गेल अछि। होइतो अहिना छै जे जइ परिवारमे जे जन जेहेन ऊहिगर रहल ओ अपन ऊहिक हिसाबसँ परिवारक क्रियामे ओत्ते संलग्न भइये जाइए।

तीनू गोरेकेँ देखि देवचरण बजला-

"बौआ, जइ परिवारमे अपना सभ छी ओ परिवार एक्के गोरेक नहि, सबहक छी। तँए सभकेँ अपना-अपना उकितिये ऐ विचारकेँ नीक जकाँ मनमे रोपि अपना-अपनाकेँ ओइमे संलग्न रखबाके चाही। जँ से नइ हएत तँ किछु गोरेकेँ काजो आ जवाबदेहियोमे उदासीनता औत आ किछु गोरे जे अपन परिवारकेँ अपन बुझि सेवा करत ओ दोसरसँ अपनाकेँ महत्पूर्ण बुझबे करत। तँए सबहक बीच सबहक काजक जानकारी रहब जरूरी अछि।"

ओना, हरिचरण अछि तेरहे-चौदह बर्खक, मुदा देवचरणक विचारकेँ नीक जकाँ बुझि गेल। बाजल-

"बाबा, ई तँ भेल वैचारिक क्षेत्रक बात, मुदा बेवहारिक क्षेत्र तँ ऐसँ अलगो भऽ सकैए किने?"

हरिचरणक विचार सुनि अपन सहमत जतबैत देवचरण मुड़ी डोलबैत बजला-

"बेस बात बौआ कहलह। परिवार तँ काजक धुरी बना कऽ ने

चलैए। तेही सबहक विचार करैले ने कहने छेलियह जे सभ कियो एकठाम बैस एक मतक रस्तासँ परिवारकेँ आगू दिस बढ़ाएब।”

देवचरणक विचार सुनि हुनक पत्नी–सिंहेसरी बजली-

“हम दुनू सासु-पुतोहु स्त्रीगणे भेलौं, केतबो हएब तँ अपन घरे-अँगना आ खेते-पथार धरि हएब। तहिना हरिचरण सेहो बाले-बोध भेल। राधाचरणक कोनो ठेकाने ने अछि जे ओ की अछि आ की करत।”

पत्नीक विचार सुनि देवचरण मुस्की भरैत मुड़ी डोला-डोला मने-मन विचारए लगला। पत्नीक विचार सेल्होअना सत् अछि, मुदा सत् रहितो सोल्होअना उचित केना कहल जाएत? हँ, जइ परिवारमे पुरुख जीवित रहला, माने पुरुख प्रधान परिवारमे एहेन विचार सम्भव भइयो सकैए, मुदा जइ परिवारमे पुरुख नइ रहला तइ परिवारमे तँ महिलेक ने प्रधानता हएत। तैठाम हिनक विचार केना सम्भव भऽ सकत। मुदा अखन तँ गाम-समाजक विचार करए नहि बैसल छी, अखन तँ मात्र अपन परिवारक विचार करए बैसल छी, तँए अखन तँ पुरुखे प्रधान परिवार भेल। नीक हएत जे पहिने अपन परिवारक भूतक जानकारी संक्षेपमे सभकेँ दिऐ। जहिना कोनो धारक उद्गम स्थलसँ बीचक प्रवाहित होइत धाराक धार अन्तिम कोनो अगम धारे वा समुद्रेमे समाहित होइए तहिना ने परिवारोक अछि। ओना, पहाड़क दोसर रूप अछि। ओ धरतीपर उठल रहैए, जेकरा चोटीपर चढ़ैमे बहुत अधिक भीरो होइए, मुदा ओइठामसँ पुन: निच्चाँ उतरैमे, माने धरतीपर अबैमे, चढ़ाइ काल जेहेन मेहनत भेल रहत तेहेन ढलानपर ढलकैत उतरैमे भीर नहियेँ होइए। जखन कि रस्ता दुनूक चढ़ैयो आ उतरैयोक एक्के रहैए। मुदा ऐठाम तँ परिवारक विचार करैक अछि। परिवारक रस्ता धारो आ पहाड़ोसँ भिन्न अछिए। किए तँ धारे-पहाड़ जकाँ परिवारोक गति-विधि तँ अछि नहि। ऐठाम मनुखक बीचक रस्ता अछि। जइमे सामाजिक परिवेशक संग शासकीय परिवेश सेहो अछि। शासन तंत्रक अनुकूल परिवारक परिवेश

बनैए। जँ शासन-तंत्र परिवार पक्षी रहल तँ सुगम रहल आ जँ शासन-तंत्र प्रतिकूल रहल तँ विपरीत परिवेश बनिते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहह। ऐठाम तँ अपन बाप-दादाक निरमौल परिवार अछि, जेकर अपन इतिहास अछि। मुस्कियाइत देवचरण पत्नी दिस देखैत बजला-

"अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखवंशक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोड़े हएत।"

बजैक क्रममे देवचरण बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठए लगलैन जे अनेरे कोन विचार दिस भँसि गेलौं। अखन तँ हरिचरणकेँ परिवारक प्रमुख कर्त्ताक रूपमे ठाढ़ करैक अछि...।

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

"बाबा, अखन जइ विचारे सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन , पहिने ओकर विचार करू, पछाइत समय रहलापर आरो-आरो बात-विचार करब। ने कियो आन छी आ ने आइये भरि समयो अछि।"

ओना, हरिचरणक विचारसँ दादीक मनमे कनी कुवाथ जरूर भेलैन। कुवाथक कारण छेलैन अपन विचारपर सँ नजैर हटाएब, मुदा बाल-बोध हरिचरणकेँ बुझि मुँह बन्न रखली। जे बात देवचरण बुझि गेला। मुदा ओइ विचारकेँ पुन: जागृत नहि करैत अपन परिवारक विचार उठबैत बजला-

"बौआ हरि, साठि बर्खक पारिवारिको जिनगीक आ शासनोक चढ़ाव-उतारक अनुभव अछि, जे तोरा नइ छह। तँए, संक्षेपमे पहिने ओ विचार भूमिका रूपमे जानि लेब बेसी नीक हेतह।"

जहिना असथिर भेल पोखैरक पानिमे आ प्रवाहित होइत धारक पानिमे हेलैक अलग-अलग लूरिक जरूरत होइ छै, माने पोखैरक हेलब जकाँ धारमे हेलब तँ डुमिये जाएब किएक तँ प्रवाहित होइत धारक

धारामे हेल कऽ पार करैमे दोहरी सावधानीक जरूरत होइ छइ। पहिल, धारक धारेमे ने भँसि जाए, आ दोसर पार करब तँ अछिए। जे पोखैरमे नइ होइए। पोखैरमे मात्र एकटा सावधानीक खगता रहैए, एक महारसँ दोसर महारपर जाएब। हरिचरण बाजल-

"बाबा, परिवारक जे पैछला धारा रहल माने इतिहास, ओ तँ आब भूत बनि चुकल अछि, ओकरा तँ वर्तमानक नजैरसँ नहियेँ देखल जा सकैए, मुदा जहिना वर्तमान भूतपर ठाढ़ अछि आ भविस दिस बढ़ैले हियासि रहल अछि, तहिना ने ओकरा मजगूतीक संग पकड़ैयोक अछिए।"

ओना, परिवारमे हरिचरण बाले-बोधक श्रेणीमे अछि मुदा यएह बाल-बोध ने भविसमे परिवारक मेह रूपमे ठाढ़ हएत। जहिना भिनसुरका सुरुज देखि लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत तहिना हरिचरणक बातकेँ सीमांकित करैत देवचरण बजला-

"बौआ हरि, परिवारमे दू रंगक सदस्य होइए, पहिल पुरुख आ दोसर महिला। अखन तक जे अपना सबहक परिवारक धारा रहल, ओइमे जहिना पुरुखक लेल घर-बहार जाइ-अबैले, करै-धड़ैले सगतैर खुजल रहैए तहिना महिलाक लेल सगतैर तँ बन्धन लगले अछि। पुरुखक अछैत जँ महिला परिवारसँ निकैल पारिवारिक क्रिया-कलाप करैयो चाहती तँ परिवारक संग समाजोक लोक ऑगुर बतेबे करतैन। "

बिच्चेमे हरिचरण बाजल- "एकरा के काटत! एहेन तँ सभ दिन होइते आबि रहल अछि!"

पैछला विचारकेँ देवचरण सोल्होअना कबुल लेलैन, मुदा भूतक कबुल कएल विचारकेँ भविसमे केना कबुलनामा बनौल जाए, ऐठाम आबि अँटैक गेला। देवचरण एक दिस जखन पाछू दिस हिया कऽ देखए लगैथ तँ साफ देखा पड़ैन जे परिवारक जे पैतृक सम्पैत अछि ओ तँ नष्ट भऽ गेल छल, मुदा परिवेश एहेन बनल जे ओ पैछला पीढ़िक अरजल

सम्पैत पुन: परिवारमे जुड़ि गेल। तहिना आइ धरिक जे सामाजिक राज-सत्ता रहल ओ गुलामीक रहल, माने विदेशी शासनक, जे मटियामेट भऽ पुन: स्वतंत्र रूपमे जीवित भऽ गेल। मुदा अपन जे जिनगी रहल तइमे आ आगूक जे हरिचरणक जिनगी हएत ऐमे विपरीत सम्बन्ध अछिए। तँए, पैछला जिनगीकेँ इतिहासक पन्नामे समेट ऐगला जिनगीक ने दिशा बोध करब जरूरी अछि...।

देवचरण बजला- "बौआ हरि, अखन धरिक जे परिवारक इतिहास रहल ओ पंगुक रूपमे रहल। माने जेहेन जिनगीमे लोक स्वच्छन्द साँस लैत बिचड़ैए से तँ नहियेँ रहल। तैयो अपन साठि सालक जिनगी कटि गेल। मुदा आब जखन अपना दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे देहमे ओहन शक्ति नहि अछि जेकर उपयोग करैत परिवारक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ ससारब, तँए जाबे जीबै छी ताबे जहाँ धरि सम्भव हएत से तँ करबे करब, मुदा... ।"

'मुदा' कहि देवचरणकेँ चुप होइत देखि हरिचरण उत्सुक होइत बाजल- "तखन?"

देवचरण बजला- "तखन यएह जे परिवारक जे पंगुपन रहल ओकरा पूर्ति करैत, ओइ पंगुपनकेँ मेटबैत जहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीवनक साँस लैत उड़ैए तहिना परिवारोकेँ बनाएब छह।"

देवचरणक विचार सुनि जेना सभकियो पंगुपनक गम्भीरताकेँ बुझि गेल तहिना सभ सभ दिस नजैर दौड़बैत, गम्भीर होइत चुपचाप उठि-उठि अपन-अपन जीवन-क्रिया दिस बढ़ए लगल। ❑ **पंगु, उपन्यास, 2018, पृष्ठ संख्या : 84-92**

“बौआ, एक्को मिसिआ दुख नै भऽ रहल अछि। ई तँ सृष्टिक नियमे छिऐ। तइले दुख कथीक?”

दयानन्द जेठ आ धर्मानन्द छोट बेटा। दयानन्द फोर्थ इयरक विद्यार्थी आ धर्मानन्द फस्ट इयरक। दुनू एक्के मेडिकल कौलेजक छात्र। दयानन्दकेँ कहलखिन- “बच्चा, बाबू मरि गेला तँए दुनू भाँइ गाम आउ?”

बाबाक मृत्युक समाचार सुनि दयानन्द कहलखिन-

“ऐ-ले गाम किए जाएब। आब तँ तेहेन बिजलीबला शवदाह बनि गेल अछि जे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि।”

दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन बजला- “बच्चा, सभ जीव-जन्तुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। जे जइ जिनगीमे जीबैत अछि, ओकरा-ले वएह जिनगी आनन्ददायक होइ छइ। जेना देखै छहक जे चीनीमे सेहो किड़ा फड़ैए, मिरचाइ आ करैलामे सेहो फड़ैए। तीनूक सुआद तीन तरहक होइ छइ। एक मीठ, दोसर कड़ू आ तेसर तीत। चीनीक किड़ाकेँ जँ मिरचाइ आकि करैलामे देल जाए तँ सोभाविक अछि जे ओ मरत। मुदा की मिरचाइक किड़ा आकि करैलाक किड़ाकेँ चीनीमे जीब सकत? कथमपि नहि। ओ किए मरत? ओ तँ अधलासँ नीकमे गेल? तहिना बाबू सेहो सभ दिन गाममे रहि जीवन-यापन केलैन। ई तँ संयोग नीक रहल जे तोहर माए सप्पत-किरिया दऽ बुड़हीकेँ ‘हँ’ कहौलैन। जइसँ दुनू गोरे मास दिन पहिने एला। सेहो एलाक तीनियेँ दिन क उत्तर गाम जाइले कच्छर काटए लगला। केते सप्पत दऽ-दऽ माए मास दिन घेरलखुन, नइ तँ तेसरे दिन चलि जइतैथ।”

पिताक बात सुनि दयानन्द बाजल- “ई तँ बड़ आसचर्जक बात कहै छी, बाबू?”

दयानन्दक जिज्ञासा देखि देवनन्दन बजला- "कोनो आसचर्ज नहि। गामक दोसर नाओं समाजो छिऐ। जे शहर -बजारमे नै अछि। समाजमे बन्धन अछि जइ अनुकूल लोक चलैए, जेकरा सामाजिक बन्धन कहल जाइत छइ। ऐ बन्धनक भीतर धर्मक काज छिपल अछि, जेकरा सभ मिलि निमाहैत अछि। मुदा शहरमे से नइ छइ। कानून कायदाक हिसाबसँ चलैए जइमे दया-प्रेम नइ छइ। प्रतिदिन बुड़हाकेँ दस गोरेक जिनगीक बात सुनब आ दस मिनट बजैक जे अभ्यास लगि गेल छैन से ऐठाम केना हेतैन। एतए सभ अपने पाछू बेहाल रहैए। के केकर सुख-दुख, जीवन-मरण सुनत। भरि पेट नीक अन्ने-तीमन खुऔने लोकक मन असथिर थोड़े रहि सकैए, जाधैर आत्माक सन्तुष्टी नै हेतइ?"

पिताक बात सुनि दयानन्द हुँहकारी दैत बाजल- "कहुना-कहुना तँ तीन दिन पहुँचैमे लगत, ताधैर की कहब?"

"अखनो गाममे एहेन चलैन अछि जे शरीरसँ पराण निकैलते जरबैक ओरियान हुअ लगैत अछि। अर्थी रखैक चलैन नै अछि। तोरा सभकेँ अबैसँ पहिने दाह-संस्कार कऽ लेब। काजो तँ लगले सम्पन्न नहियेँ होइत अछि। कहुना-कहुना तँ पनरह दिन लैगे जेतह।" "बड़बढ़ियाँ। सौंझुका गाड़ी पकैड़ दुनू भाँइ गाम आबि जाएब। "

मोबाइल ऑफ कऽ मने-मन देवनन्दन हिसाब मिलबए लगला। कमसँ-कम पनरह दिनक काज अछि। उसारैयोमे किछु समए लगबै करत। मोटा-मोटी बीस दिन लगि जाएत। बीस दिनक आकस्मिक छुट्टीक दरखास लिखए लगला।

दरखास लिख टेबुलपर रखि पिताक कोठरी पहुँच देवनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन- "गाममे बीस दिन लगत, तइ हिसाबसँ सभ समान ओरिया लिअ। काजक समए अछि। तँए नीक-जकाँ तैयार भऽ चलैक अछि।"

कहि माए लग बैस गेला। शीला उठि कऽ चीज-वौस ओरियाबए चलि गेली। सुभद्राक चेहरामे सोग नै सुख उमड़ैत रहैन। विचारक समुद्रमे

डुमल छेली। मने-मन खुशी होइत रहैन जे हुनका अछैत जँ हम पहिने मरितौं तँ मनमे लगले रहैत जे शेष दिन हुनकर केहेन बिततैन। मुदा से भगवान सुनलैन। जहिना हाथ पकड़लैन तहिना पार-घाट लगा देलिऐन। हमरा आब की अछि, तेहेन भरल-पुरल फुलवाड़ी लगा देने छैथ जे केतौ हराएल रहब। उमेरोक हिसाबसँ नीके भेल। चारि बर्खक जेठो छला..। माएकेँ विचारमे डुमल देखि देवनन्दन टोकलखिन- “माए..!”

मुस्की दैत सुभद्रा बजली- “बौआ, एक्को मिसिआ दुख नै भऽ रहल अछि। ई तँ सृष्टिक नियमे छिऐ। तइले दुख कथीक ?”

ओमहर शीला कपड़ो-लत्ता सेरियबै छेली आ मने-मन मुस्कियाइतो छेली। अनका जे हौउ, हमरा तँ सात गंगा नहेला फल भेटल। जेना अनका देखै छिऐ, अनका की अपन पितियौते भाएकेँ देखलयैन जे मरै बेरमे काका केना घिनबथिन। से तँ नै भेल। जिनगीमे कियो एहेन ओंगरी तँ नै देखाएत! तैबीच ड्राइवर बाहरमे हौरन बजेलक। आवाज सुनिते देवनन्दन माएकेँ कहलखिन- “माए, लगले हम अबै छी।”

कहि कोठरीसँ दरखास लऽ ड्राइवरकेँ ऑफिस दऽ अबैले कहलखिन। पुनः घुमि कऽ पिताक गोरथारीमे बैस देवनन्दन, तैयारीक प्रतिक्षा करए लगला। आँखि माएपर पड़लैन। एक्को पाइ माइक मुँह मलिन नहि, सोचए लगला। जहिना आँगनसँ घरक ओसारपर जाइले बीचमे सीढ़ी बनल रहैए, तहिना तँ परिवारोमे अछि। मोन पड़लैन बाबाक सुनौल माए-बापक बिआहक कथा। केना नव परिवार बनि दुनू गोरे बाबा-दादीकेँ जिनगीक पार लगौलैन। ओहने समए तँ आइ हमरो संग आबि गेल। माएकेँ किए मनमे कोनो तरहक अभाव औतैन। एते दिन पिताक आशपर जीलैन आब हमरा दुनू परानीपर आबि गेली। जहिना पत्नीक सहयोग पतिकेँ आ पतिक आशा पत्नीकेँ बनल रहैत, तहिना तँ पतिक परोछ भेने बेटाक भऽ जाइत। ❑ **जीवन-मरण, उपन्यास, पृष्ठ संख्या : 11-13**

कहैले अपना सभ तँ कहिते छी जे सुख-दुखमे सभ संग छी, मुदा दुख केना सुख बनत माने दुखक संचरण सुखमे जे हएत, तइ बीचक जे प्रक्रिया अछि तइमे के केतए छी, सेहो ने देखए पड़त।

बेटा तँ तखन ने बेटा जखन ओ बेटा-धर्मक पालन करत। जखने से करए लगत तखने ने अपन विवेको कहतै जे जाबे जीबैक साधन नहि छल ताबे बाहर जाइक खगता छल मुदा जखन से भऽ गेल तखन ओकर व्यय धरमोचित्त नहि करब तँ ओकरो माने साधनकेँ ने पापोचित उपयोग हएत। दुनियाँक कतौक बासी किए ने होइ आ केतौसँ केतौ बास किए ने करी, मुदा जखन जीवनक (मनुक्खक जीवनक) बीच बास करए लगब, तखन वएह ने आपन बासभूमि मातृभूमि रूपमे सेहो लतरत-चतरत। मन बहलबैक खियाल अलग छी, मुदा तँए सही क्रिया नहि छी सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कहैले अपना सभ तँ कहिते छी जे सुख-दुखमे सभ संग छी, मुदा दुख केना सुख बनत माने दुखक संचरण सुखमे जे हएत , तइ बीचक जे प्रक्रिया अछि तइमे के केतए छी, सेहो ने देखए पड़त।

ओना, सभ जनिते छी जे जे जन्म लेलक से मरबे करत। तहूमे मनुक्खक जिनगीए केतेटा अछि। तहूमे केते कालक गारंटी अछि? क्षणोमे क्षणाक तँ होइते अछि। एकटा भौतिक विज्ञानकेँ जँ ताकए निकलब तँ दमाइन जर्को पन्ना -मे-पन्ना आ सिर-मे-सिर तेते भेटत जे सही सलामत दमाइन उखाड़ि देवउठौन पाबैनमे डाल-डाली साजि लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी। ई मानि लेब जे भौतिक विज्ञानक पूर्व पीठ अध्यात्म विज्ञान छी जेकरा जीवन विज्ञान सेहो कहै छिऐ, मुदा ओ लगले थोड़े बुझिमे अबैए। ❑

मोड़पर, उपन्यास, 2021, पृष्ठ संख्या : 47

खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो आ सुभ्यस्त समय भेने हीरो।

बाबाक बराबरी कहाँ कऽ पाबि रहल छी? पैछला सर्वेमे जेते हुनका खेत छेलैन तेते तँ हमरो अछिए। मुदा सबहक अपन समय होइ छै, तहीक कर्तो-धर्ता ने अपनो छी। हुनका अमलदारीमे गाममे एकटा वैद्य छला। वैद्य की छला अखुनका करखन्ना जकाँ छला। अपने हाथे मंडूल बनबै छला, जे पाण्डु रोगक रामवाण इलाज छेलइ। सीतामढ़ीसँ पूर्णिया आ नेपालक झँपा जिलासँ लऽ कऽ वीरगंज होइत गंगाक उत्तरी छोर धरिक बजार छेलैन। रोगीक आवाजाही भरि दिन लगले रहैत छेलैन। जहिना इलाकाक लोक वैद्यजी कैं जनैन तहिना रहैक जगह बाबाकैं सेहो जनैत रहैन। अनका अपेक्षा स्थिति बहुत नीक नै रहनौं, दरबज्जाकैं दरबज्जा बना रखने छला। अनठिया-बहरबैया-ले कोनो रोक-राक नहि, मुदा तँए कि गामो ओहने छल? नहि! जातीय रंग-रूप नीक जकाँ गछाड़ने रहइ।

बाबासँ आगू बढ़ि अपनापर नजैर पड़िते जीवन काका चौंकला, की अपने जकाँ पोतोक मनमे रहि सकब? नहि! अहिना ऊहो साले-साल बरखी आ पितृपक्षमे मोन पाड़त? नहि! मुदा एना भेल किए? अपना अछैत जुआन बेटा काज करै-जोगर भेल, बाहर कमाए कहलिऐ। परिवारमे अन-पानिसँ लऽ कऽ रूपैआ-पैसा धरिक काज पड़िते अछि। किसानी जिनगीमे नगदी खेती नै भेने पाइक समस्या छइहे। पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, दबाइ-दारू, लत्ता-कपड़ा सभ तँ कीनैये पड़ैए।

अखन धरि जीवन काका अपनाकैं अपन सीमानक भीतर बुझै छला तँए मनमे कोनो लहैर नै उठलैन। उठबो केना करितैन? जाबे समुद्र

आकि मरुभूमिमे जुआरि नै उठत ताबे केना लहैर-लहैर लहराइत वायुमण्डल दिस बढ़त। ओना खुशीलाल आज्ञाकारी बेटा छैन। तैबीच वैचारिक मनभेद केना बनल से बुझिते जीवन कक्काक मन बगैद गेलैन। जहिना पोसो हाथी बगैद जाइत तहिना।

भेल ई जे खुशीलालकेँ एते छूट तँ दाइए देने छेलखिन जे नीक काज बिना केकरो पुछनौं करब अधला नहि। आज्ञाकारी बेटा केतौ सीमाक उल्लंघन नै केलैन, मुदा सीमाक उल्लंघन तँ भइये गेल। नव पद्धतिक पढ़ाइ एकभग्गू भऽ गेल अछि, जखन कि जीवन काका समग्रतामे बिसवास करै छैथ। मुदा जीवन काकाकेँ अपनो मन उग-डुम तँ करिते छैन जे बेटा ई बात अखन धरि किए ने बुझि पौलक जे भँसि गेल! माए-बाप जीबिते दिशा ने बेटा-बेटीकेँ सिखौत-पढ़ौत आकि जिनगी भरि संगे-संग रहि बेर-बेर सिखबैत रहत। जँ से हेतै तँ जिनगियो आ कालखण्डोक बँटवारा केना हेतइ। की आब किछु कहब उचित हएत? उचित तँ ओही दिन तक होइत जइ दिन काज करैले डेग उठबए लगल। मुदा आब..?

गंभीर प्रश्न जीवन कक्काक आगूमे गंभीर परिस्थिति पैदा कऽ देलकैन। जँ बताह जकाँ बड़बड़ा बेटोकेँ कहबै आ पुतोहुओकेँ कहबैन आकि टोकारा पाबि खिसिया कऽ गाम दिस टहैल समाजोकेँ कहबैन, से उचित हएत? काजक तँ फले काजक पूर्णता छी। ऐठाम तँ ओहूसँ बेसी परिस्थिति चहैक गेल अछि! तेहेन पढ़ाइ-लिखाइ भऽ गेल अछि जे अखन ने मोटगर पाइ देखै छै, मुदा रिटायर करिते अदहा भऽ जाएत, आ बेटा-बेटीक जिनगी तेते भारी भऽ जेतै, जे सम्हारि नै पौत। एहेन परिस्थितिमे कियो माए-बापकेँ आकि बेटा-बेटीकेँ देखत? उगैत सुरुजक दर्शन ने शुभ होइ छै आकि डुमैत सुरूजक! तखन? जेकरा मूस जकाँ बिल खुनैक लूरि नै छै तेकरा-ले दुनियाँ जे हौउ, मुदा जेकरा खुनैक लूरि हेतै ओ सीमा किए टपत? बाढ़ि औतै ऊँचकापर चलि जाएत आ रौदी हेतै

तँ नीचका दिस बढ़ि जाएत...।

यएह सोचि जीवन काका चारू कट्ठा खेतकेँ–जे आमक गाछी छल–जेकरा तोड़ि केलवाड़ियो आ तीमनो-तरकारीक चौमास खेत बना लेलैन। खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो आ सुभ्यस्त समय भेने हीरो। केतौ तीनियोँ बीघा बीघासँ कम गोबरबैए तँ केतौ बीघा पाँच बर गोबरबैए...।

यएह सभ सोचि जीवन काका चारू कट्ठाक बीच एकटा कल गड़ा लेलैन आ चारूकात निम्मन हाता कटा, माटि ढहै दुआरे साबे आ आड़िपर अनरनेबा, नेबो, दारीम, सरीफा इत्यादि छोटका पौधबला फलक गाछ रोपि देलखिन। डेगसँ नापि एक-एक लग्गीक दूरीमे केरा गाछ सेहो रोपलैन। जे चालीस बीट भेलैन। जेठुआ रोप भेने कातिकमे दू-दूटा पौंच गाछ देलक। जे मघारि अबिते फूटि गेल। कुहैर-कहारि कऽ घौर भेल। खाएर जे भेल, भेल तँ। वएह बीट तेसर सालमे पहुँच गेल। साठिटा घौर पनरहसँ पचीस हत्थाक भेलैन।

एक तँ ओहिना मन तुरुछाइत रहए जे आइए झंझारपुरक हाटो छिऐ आ परखेब पाबैनो छी। हाटो तेहेन जे सुति उठि आँखि मीड़िते विदा हौउ। केना चौरीसँ करमी लत्ती आनब, सोन्हौनक ओरियान करब। जखन दुनू काज लोके हाथक छी तँ आगूओ पाछू कएल जा सकैए। खाएर.., गर अँटबैत झंझारपुर हाट गेलौं। केरोक सूर -पता लगबैक छल आ पाबैनोक वस्तु-जात कीनैक रहए। हाटपर पहुँचलो ने रही कि आढ़ैतबला भेट गेल। पुछलिऐ- “कारोबारक की हाल-चाल अछि?”

मनमे एक्को मिसिया नै रहए जे अधला नजैरसँ पुछि रहल छिऐ। तीन माससँ झंझारपुर गेलो नै छेलौं। हाल -चाल सुनिते आढ़ैतबला गुम्हैर कऽ बाजल- “सभ बुड़ि गेला गंगा नहाइले आ ई रहि गेला गाममे!” ❑

भकमोड़, कथा संग्रह, 2013, पृष्ठ संख्या : 47-49

समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ लऽ कऽ छुतहर धरि बनैए।

"बौआ कुसुम! हमरा आगू तूँ बच्चा छह। तोरासँ बहुत बेसी ऐ दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखने छी। मनकेँ थीर करह। जे भऽ गेल ओ तँ नै घुमत। मुदा तइले की करी, केते करी, ई सभ बुझए पड़तह। एहेन तँ नै ने जे सभ कियो ओही लगल पराण गमा देब। तूँ दुनू गोरे तँ बापे-माए छहुन। दुखी भेनाइ उचिते छह। मुदा आइ की देखलहक ? देखलहक किने जे समुच्चा गामक लोककेँ असीम दुख भेल छइ। ई विचार मनसँ हटाबह जे हम्मर इज्जत चलि गेल। गरीब लोकक सभसँ पैघ दुश्म न ओकर गरीबी छिऐ। गरीबी केवल अन्ने-पानि धरि नै होइए, जिनगीक सभ पहलु-ले होइए। गरीबीक बान्ह ओइ रूपे बन्हने अछि जइमे गारि-फज्झैतसँ लऽ कऽ धन-सम्पैत, माए-बहिनक इज्जत लुटै धरि अछि। तहन जँ कियो हँसी-खुशीसँ जीविये लइए वएह एक लाख।

बौआ, गरीबीक ताला लोहोक तालासँ नमहर आ सक्कत अछि। लोहाक तालामे एक्केटा मुँह आ दाँत होइ छै जइमे कुन्जी घुमौलासँ भक-दे खुजि जाइए। मुदा गरीबीक जे ताला अछि ओइमे अनेको मुँह आ अनेको दाँत अछि। एकटा खोलबह दोसर लगि जेतह। सोझे लगबे टा नै करतह, पहिलुकासँ केते गुना कस-कसा कऽ लगि जेतह। तँए, जहिना कोनो आमक गाछ साले-साल रौद, बर्खा, पानि-पाथर, बिहाड़ि जाड़ सहि नमहर भऽ फड़ैए आ ओ फड़ मनुखसँ लऽ कऽ अनेको जीव-जन्तु धरि बिलहैए तहिना मनुखोक जिनगी छी। जखने गरीब घरमे जन्म लेलह तखने बुझि जाहक जे आँखि देखैले नै कनैले अछि, गारि सुनैले कान अछि आ मारि खाइले देह अछि। गरीबक आँखिमे जेते इजोत बढ़ैए तेते

नोरक समुद्र दिस जाइए आ जेते समुद्रक लग पहुँचैए तेते नोरक टघार अनवरतताक रूपमे बदलैए जइसँ अनवरत टघरैत रहैए! तोहर दुख समाजक दुख बनि गेल अछि। समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ लऽ कऽ छुतहर धरि बनैए। तँए, ने केकरो कहने केकरो इज्जत अबैए आ ने जाइए। लोककेँ अपने केने होइ छै आ गमौने जाइ छै... ।"

मनधन बाबाक बात सुनैत-सुनैत पवित्री बोम फारि कानए लगली हुचैक-हुचैक बजली- "बाबा, ई तँ गामक मेह छथिन तँए हिनकर बात मानि लेलिऐन। नै तँ आइ सिसौनीमे आगि लगौने बिना नै छोड़ितिऐ। जखनसँ बेटी आएल तखनसँ एक्को बेर मुँह उठा नै तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जकाँ भऽ गेल छइ। सदिखन एक्केटा रट लगेने अछि जे जीवियेे कऽ की हएत। जखन इज्जत चलिए गेल तखन कोन मुँह समाजकेँ देखाएब।"

पवित्रीक बात सुनि मनधन बाबाक हृदय छँहोछीत भऽ गेलैन। आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। दुनू हाथसँ आँखि पोछि बजला -

"कनियाँ, जेकरा अहाँ इज्जत जाएब बुझै छिऐ ओ जाएब नै छी, जोर-जबरदस्ती छिऐ। जोर-जबरदस्ती मुँहक कहलासँ नै मेटाइ छइ। ओकरा शक्तिसँ रोकए पड़ै छइ। गरीबक बीच ओहन शक्ति अखन नै भेल अछि, जखन हएत स्वत: रूकि जाएत। अखन जोर-जबरदस्ती केनिहार बलगर अछि तँए सूझि-बूझिसँ चलए पड़त। इलाकामे कोन गाम एहेन अछि जइ गाममे एहेन-एहेन किरदानी नै होइ छइ। सभसँ पहिने गरीबकेँ अपना पैरपर ठाढ़ हुअ पड़तै। जखन ओ ठाढ़ भऽ संगठित हएत तखन शोषक संगे, जबरदस्ती केनिहारक संगे संघर्ष होएत। संघर्षोसँ समाज बदलैए समाज बदलने सभ किछु बदैल जाइए तँए कानू-खीजू नहि। समाजक संग पएर-मे-पएर मिला कऽ चलू।"❑ **जीवन-संघर्ष, उपन्यास, पृष्ठ संख्या : 18-20**

"बौआ, एकरा नीक जकाँ बुझि लेब जे मनुख अपने काज केने सुखो पबैए आ दुखो पबैए, यएह जवाब भेल अध्यात्म ज्ञान आ मानव भेल दर्शन।"

"अध्यात्म दर्शन की छी?"

अध्यात्मक नाओं जहिना तेतर सुनने तहिना गुलटेन सेहो सुननहि रहए मुदा दार्शनिक शिक्षक लग जवाब देब असान नहियेँ छी, मुदा तैयो जहिना तेतर जाइतिक आधारपर अध्यात्मक उत्तर देलकैन तहिना गुलटेन सेहो सम्प्रदायिक आधारपर उत्तर देलकैन।

दुनूक उत्तर सुनि शिक्षक बिगड़ला नहि, ओना दर्शनशास्त्रक शिक्षककेँ क्रोध लगले उठि जाइ छैन से गुण दीनानाथ बाबूमे नहि छैन। धिया-पुताक गलती देखि जहिना माता-पिता हँसि कऽ कहै छैथ- 'धुर बकलेल', तहिना दीनानाथ बाबू बजला-

"धुर बकलेल, अध्यात्म दर्शन जीवनक ओ दिशा देखबैए जे जीबैक कलामे सभसँ असान अछि।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि जहिना तेतरकेँ उत्कण्ठा जगल तहिना गुलटेनकेँ सेहो जगल। उत्कण्ठा जगिते जेना गुलटेनो मनमे आ तेतरोक मनमे अनेको जिज्ञासा जगि गेल, जे प्रश्न बनि मुहसँ निकलए चाहि रहल छेलै, तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न उठबैले ब्रेंचपर सँ निच्चाँमे दुनू गोरे ठाढ़ भेल। दुनूक जिज्ञासा देख , दीनानाथ बाबू दुनूकेँ कहलैन -

"अपन-अपन प्रश्न कागजपर लिखू।"

टटका प्रवाह तँए लिखबो लेल अनुकूले भेल, दुनू गोरे अपन-अपन प्रश्न अपन-अपन कागजपर लिखि दीनानाथ बाबूक हाथमे दऽ देलकैन।

दुनूक प्रश्न देखि दीनानाथ बाबू मने-मन विहियबैत विचारलैन जे किए ने आमक आँठीए लग पहुँच, धरतीसँ अकास धरिक वृतान्त बुझा दिऐ। दीनानाथ बाबू बजला- "बौआ, एकरा नीक जकाँ बुझि लेब जे मनुख अपने काज केने सुखो पबैए आ दुखो पबैए , यएह जवाब भेल अध्यात्म ज्ञान आ मानव भेल दर्शन।"

दीनानाथ बाबूक परिभाषाक शब्द एतेक असान छेलैन जे शब्दक ओझरौठक विचार दुनूमे सँ केकरो ने उठल। तँए कि परिभाषाक बीज परेख सकल, सेहो नहियेँ भेल। मुदा दुनूक मन जेना मस्त होइत आगू मुहेँ बढ़ए लगल तहिना दुनूकेँ भइये रहल छल। ओना , दीनानाथ बाबूक मनमे सेहो एकटा भ्रम पैदा लऽ लेलकैन। भ्रम ई जे अपने मने ने बुझलैन जे जहिना अपने अध्यात्म दर्शनक बाहरी रूप बुझि रहल छी तहिना गुलटेनो आ तेतरो बुझने हएत। मुदा से तँ भेल नहि, परिभाषा तँ जीवन-धारा नहि छी, जीवन-सूत्र छी, जैपर दीनानाथ बाबूक नजैर नहि गेलैन। नजैरियो केना जइतैन? अपन जानब, मानब आ करब माने अपन बुधि, विचार आ बेवहार एक बनि चलै छैन तँए नजैरसँ फड़ैक गेल छेलैन।

अध्यात्म दर्शनक परिभाषा सुनि जहिना गुलटेनकेँ भेल जे जीवनक रत्न भेट गेल तहिना तेतरोकेँ भेल। मुदा ई बुझबे ने केलक जे जखन देव-दानव समुद्र मथन केलैन तखन नूनगरहा पानिकेँ मथैत-मथैत जखन समुद्रक पेनी देखलैन माने समुद्रक थाह पौलैन तखन ने रत्न सभक खान भेटलैन। खाएर जे बुझलैन, मुदा एते आशा तँ मनमे आबिये गेलैन जे अध्यात्म दर्शन जीवनक पूर्ण सूत्र छी तँए जँ ऐ सूत्रकेँ पकैड़ जीवनक घाट पार करए चाहब तँ पार भइये सकै छी। गुलटेन बाजल-

"श्रीमान्, सूत्रक धागाक धारण केतएसँ शुरू होइए?" ❑

कर्ताक रंग कर्मक संग, कथा संग्रह, 2020, पृष्ठ संख्या : 94-96

जाबे मनुक्खकेँ अपना प्रति अपन शासक नहि जागत ताधैर अनुशासित केना भऽ सकैए? जाधैर अनुशासित जीवन नहि हएत ताधैर जीवनक नीति केना बुझत आ जाबे नीति नहि बुझि अपनाकेँ नीतिक रस्तापर नहि आनत ताधैर नैतिक केना बनत आ जाबे नैतिक नहि बनत ताधैर नीतिगत कर्तव्य केना बुझत?

जखने देवनक काज करै दिस कुशेसरक नजैर बढ़लैन कि ढलानपर जहिना गाड़ीक गति तेज भऽ जाइए तहिना भेलैन। भेलैन ई जे गोदामक काजक मजूरी कोनो कि समयमे बान्हल अछि जे एते घन्टा काज करू तेकर बदला एते मजूरी देब। गोदामक काज तँ ओहन अछि जइमे बोराक हिसाबसँ, माने एकठामसँ दोसर ठाम करैक, मजूरी भेटैए। जखने कमाइक बढ़ोत्तरी देखत तखने ने ओइ दिस मनो बढ़तै, किए तँ अखन तक जे जीवन देवनक रहल अछि ओ कम आमदनीबला परिवारक रहल अछि। जइमे समयक संग परिवारकेँ चलैमे सइयो कि हजारो गीरह-गाँठ अछिए जेकरा खोलब कि तोड़ब कनी भीरहगर अछिए...। विचरण करैत कुशेसरक मनमे जहिना अक्का-बोनमे पहुँचला पछाइत कोनो उपयोगी वस्तु देखने मनमे हर्षपन जागि जाइए तहिना कुशेसरोकेँ जगलैन। जइसँ कुशेसरक मन मानि गेलैन जे देवन किछु छी तँ मनुक्खक बच्चा छी किने। मनुख जहिना पहाड़ोपर चढ़ैए आ पाथरो तोड़ैए, तहिना ने जलमग्न समुद्रो उपैछते अछि.! पहाड़-समुद्रक बीच अबिते कुशेसरक मन हलैस कऽ नव मुड़ी जकाँ कलशलैन- 'जखन अपने तत्पर छी तखन तँ भेल अपने जकाँ देवनकेँ तत्पर बनाएब।'

कुशेसरक मनक विचार आरो आगू विचड़न करैत बढ़लैन जे जखन काजक ओरियान भऽ जाएत तखन बाँकी रहत खाइ-पीबै आ रहैक ओरियान। खाइ-पीबैपर नजैर पहुँचते कुशेसरक मनमे उठल जे कलकत्ता कलेपर ठाढ़ अछि, ओकर कलकेँ पकैड़ अपन कलाकारी करब। जहिना अपन सुभ्यस्त समय भेलापर माने काज करैक अनुकूल समय भेने काजो करै छी आ उकड्ड समयमे माने प्रतिकूल समयमे , अरामो करै छी तहिना देवनोकेँ सिखा देब। सिखा कि देब जे संग मिलि करैत-करैत अपने अभ्यस्त बनि जाएत। मुदा से तँ हएत तखन जखन अपन काजक संग रहत। आन काजक तँ आन रूपो आ बेवहारो तँ अछिए। भेल तँ एतबे ने जे देवनकेँ काजक प्रति आकर्षित करैत कहबै, ‘बौआ, जखन गामसँ संगे कलकत्ता अबैकाल मौसा जहिना सोल्होअना तोहर भार हमरा सुमझा देलैन तहिना ने अपनो आ तोरो निमाहैक छह। जहिना अपन उमेरो अछि आ शरीरक काँइतो अछि तहिना ने तोरो छह, तखन एक रंग काज किए ने दुनू भाँइ कऽ सकै छी। एते तँ गोदामक काजमे अछिए जे जहिना गोदामक मैनेजर साहैब सहमेलू छैथ तहिना काजोक कमी नहियेँ अछि। तैसंग बोराक गिनतीक हिसाब ने होइए, फाटल आकि काटल बोरासँ जे अन्न खसै छै ओ तँ अपने सभकेँ ने हएत। जइसँ एते तँ हेबे करत जे खाइक ओरियान भऽ जाएत। अभावमे पलैत जीवनकेँ जखने पेटक भूख मेटाइक बेवहारिक उपाय भऽ जाइए तखने ने ओकरा मनमे जीवनकेँ ठाढ़ होइक आशा सेहो जगै छै। आशे ने आस लगा जीवनक झूलाकेँ कदमे-कदम कदमक गाछक डारिमे झुलबए लगैए।

..विचड़ैत कुशेसर मनमे उठल जे जाबे मनुक्खकेँ अपना प्रति अपन शासक नहि जागत ताधैर अनुशासित केना भऽ सकैए? जाधैर अनुशासित जीवन नहि हएत ताधैर जीवनक नीति केना बुझत आ जाबे नीति नहि बुझि अपनाकेँ नीतिक रस्तापर नहि आनत ताधैर नैतिक केना

बनत आ जाबे नैतिक नहि बनत ताधैर नीतिगत कर्तव्य केना बुझत? कुशेसरक मन मानि गेलैन जे चारि पैरबला पशु कुत्ता, जे मनुक्खक जीवनक शुरूक संगी रहल अछि, अखनो अछि, जखन कि ओकरा शरीरकेँ पाँचम तत्व (वौद्धिक) प्राप्त नहि छै, तखन जब एते अनुशासित अपनाकेँ बना रखने रहैए, ऐठाम अनेरूआ कुत्ता माने आवारा कुत्ताक चर्च नहि अछि, तखन तँ मनुख मनुखे छिया किने, जिनका शरीरक सभ तत्व प्राप्त छैन..! ओना, मनुक्खक दू-दिशिया गति सेहो अछि। माने भेल जे किनको कोनो काज वा विचारकेँ सीख-बुझि चलब, आ दोसर अछि जे जीवनक गतिकेँ अँकैत ओहन रास्ता तकैले कहबैन, जइसँ अखन तकक जीवनमे भेँट नहि छैन। जखने एहेन प्रश्न जीवनमे उठैए तखने ने जीवन पौनिहार अपन जीवनक अनुसधाता बनि अनुसन्धानक बाट पकड़ै छैथ। कुशेसरक मन मानि गेलैन जे जे देवन अपने जीवनक जिज्ञासासँ कलकत्ता जाइक संगी बनैले तैयार भेल ओ जरूर संगे-संग जीवनक पथक पथिक बनि पथे-पथ चलबे करत। जखने हरक जोड़ा बरद जकाँ मनुक्खो संग मलि चलब शुरू करत तखन हारल हरीक जीवनमे हरित्पन एबे करत। ..कुशेसर मनक बिसवास जेना खिल उठलैन। खिलते जीवनक गतिपर दृष्टि पड़लैन। दृष्टि पड़िते जीवन ले भोजनक महत्व बुझलैन। ❑

मोड़पर, उपन्यास, 2021, पृष्ठ संख्या : 31-29

सुलोचना बहिन सबूर केली जे जखन सीता महरानी जाबे जनकपुरमे रहली ताबे बेटीए रहली (बेटीक महत परिवारमे कम होइत) आ जखन राजगद्दी बेर एलैन तखन बोने गेली आ बोनोमे पति-दिअरसँ बिछुड़ि लंका गेली। तँए की ओ रावणक राजधानीमे रहली? नहि, पुष्पवाटिकामे रहली! ..तहिना हमहूँ रहब।

जुगेसर आ मुनेसरक बीच मरौसी जमीनक बँटबारा भऽ गेलैन। मुदा हालमे किनलाहाक नइ भेल। दुनू भाँइक बँटबारा सुलोचना बहिनकेँ सेहो बाँटि देलकैन। सुलोचना बहिन मुनेसरक संग भेली।

जमीन बँटेलासँ खेतीक समस्या उठल। जुगेसर एकटा बरद रखि भजैती हर बना अपन खेती करए लगला आ मुनेसरकेँ खेत तँ भेलैन मुदा खेतीक कोनो समचा नहि। अपनो आ परिवारो बाहरे रहैत।

'खेतक बँटबारा' एकटा नमहर समस्या ठाढ़ कऽ देलकैन। समस्या ई जे मध्यम परिवारमे खेतक बँटबारा दू ढंगसँ होइए। पहिल जे खेते -खेते आड़ि नहि दऽ खेते-खेत बाँटि लेलौं। तइ बँटैमे गोटे-आधे खेतमे आड़ि पड़ैत नहि तँ खेते-खेत बँटा जाइत। दोसर ई जे छोट-खेत रहह आकि नमहर खेते-खेत बँटाएल। ओना, दुनू बँटबारा रोगाएले अछि। एक रोगाएल अछि जमीनक उर्वराशक्ति आ जमीनक किस्मसँ, जेना- एके गामक एक बाधमे नीच, मध्यम आ ऊँच खेत होइए। नीचरस खेतमे पानि बसने माने अधिक दिन तक पानि रहने एकेटा उपजा भेल। तेकरो

कोनो निसचित बिसवास नहि। किएक तँ जँ अगते नमहर बरखा भऽ गेल तँ खेते नहि अवाद हएत, दोसर अवाद भेलो पछाइत पानिक कोनो ठेकान नइ होइ छै जँ अगते डुम्मा बरखा भेल तँ रोपलोहो डुमि गेल। जइमे लगतो डुमि गेल, उपजाक कोनो चरचे नहि। मुदा मध्यम खेतमे गिनती हिसाबसँ उपजो बेसी आ नीक फसिलो (जेना धानेमे हल्लुक धान, सतरिया-तुलसीफूल) होइत...। एहेन ठाम समस्या उठबे करत। तैसंग ऊँच जमीनमे गाछियो-कलम लगैत आ बरसाती तरकारी सेहो होइत, जे मध्यम आ नीच खेत-ले सम्भव नहि। तहिना दोसर तरहक बँटबारामे ई समस्या उठैत जे एक बीघा खेतक टुकड़ा तीन पीढ़ी जाइत-जाइत बीघासँ कट्ठामे उतरैत धूरमे पहुँच जाइए। जेना पहिल पीढ़ी जँ चारि भाँइक भैयारीक रहल तँ बीघा पाँच कट्ठामे बँटाएल, दोसर पीढ़ी जँ चारि भैयारीक रहल तँ एक-कट्ठा पाँच धूरमे बँटाएल आ तेसर जँ दूओ भाँइक भैयारी रहल तँ साढ़े-बारह धूर भेल। खाएर जे हौउ, मुदा समाज दुनूक संग न्याय केने अछि। दुनू प्रथाक गाम-गाममे चलैनो अछि आ सभ मानितो अछि।

जुगेसर मुनेसर झगैड़ कऽ बँटबारा केलैन, खेते-खेत आड़ि पड़ल जेइसँ खेतक नक्शा तेहेन बनि गेल जे हरक जोत कोदारिपर चलि आएल। जँ एक दिस नमहर-नमहर ट्रेक्टर खेत जोतए आबि रहल अछि तँ दोसर दिस खेत खँताइत-खँताइत तेते छोट भऽ गेल जे ट्रेक्टर अँटबे ने करत तँ जोतत कथी। बेल पकने कौआकेँ कोन लाभ। ओना, समाजमे दू रंगक बँटेदारो अछि। एक ओ जे अपन हर-बरद रखि अपने हरबाहि कऽ बँटाइ खेत जोतैए, जेकरा थोड़-थाड़ खेत अपनो रहल आ दोसरो भेल। किए तँ, आजुक ओहन खेती बनि रहल अछि जे एक-फसिला नहि बहु-फसिला बनने खेतक जोतो बढ़ि जाइए। बरहमसिया खेती सेहो भऽ रहल अछि। बरहमसीए खेती कृषिक उन्नतिक चोटीक सीढ़ी भेल। बारहो मास खेती भेने, पर्यावरणविद् सभकेँ अनेरे ऑक्सीजनक साँस भेटतैन। ..दोसर तरहक बँटेदार ओ भेल जे अपने बोइन करैए आ किछु खेतियो

करैए। मोटा-मोटी ओ सभ कोदारिसँ खेती करैए।

दुनू भाँइक बीच बँटबारा भेला पछाइत मुनेसरक मनमे रहैन जे खेतक देखभाल बहिन करती आ भैया खेती करता, उपजाक हिस्सा बहिनकेँ देथिन। मनमे रहैन जे बहिन तँ दुनू भाँइक छी, जँ ओहू लाथे अपन सहयोग बुझि सोल्होअना उपजा दऽ देथिन तँ हुनको गूजरमे सुविधा हेतैन। मुदा झगड़ाक बीआ पहिनहि सुलोचना बहिन रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे खेत किनला पछाइत मुनेसर दिससँ बाजि गेली जे 'जखन दुनू भाँइ अदहा-अदहा खर्च दऽ खेत कीनलक तखन हिस्सा किए ने हेतइ।' ..अपना मुहेँ वेचारी एक भाँइसँ दूर आ दोसरसँ लग चलि एली। जुगेसरोकेँ सरकारी मान्यता भेटने दरमहो बढ़लैन जइसँ घराड़ी कीनि पजेबाक घरो नीक जकाँ बना लेलैन। सुलोचना बहिन सबूर केली जे जखन सीता महरानी जाबे जनकपुरमे रहली ताबे बेटीए रहली (बेटीक महत परिवारमे कम होइत) आ जखन राजगद्दी बेर एलैन तखन बोने गेली आ बोनोमे पति-दिअरसँ बिछुड़ि लंका गेली। तँए की ओ रावणक राजधानीमे रहली? नहि, पुष्पवाटिकामे रहली! ..तहिना हमहूँ रहब। ❑

बड़की बहिन, उपन्यास, 2013, पृष्ठ संख्या : 31-33

जे स्वयं सर्वपालक सर्वव्यापी आ महादयालु छैथ। हुनका किए केकरोसँ द्वेष भेलैन?

जीव आ ईश्वर- जे कियो शरीर धारण करैत आ छोड़ैत, जन्म लैत आ मरैत ओ संसारी जीव होइत अछि। मुदा जे सर्वत्र व्याप्त, सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक गुणसँ मण्डित होइत ओ ईश्वर होइत। शास्त्रमे जे लक्षण ईश्वरक देल गेल अछि ओइ अनुसार ओ सबहक प्रतिपालक सेहो होइत छैथ। हुनक सोभाव क्रुर भाइए ने सकैत छैन। किएक तँ ओ महादयालु होइत छैथ। संगे ओ सर्वत्र व्याप्त छैथ तँए केतौ अबै-जाइक जरूरते केना हेतैन।

प्रश्न उठैत अछि जे ओ माछ आ काछुक रूप किए धारण केलैन? ऐ रूपमे एबाक की प्रयोजन भेलैन। मत्स्यावतार लऽ कऽ किए शंखासुरक हत्या केलैन? जे स्वयं सर्वपालक सर्वव्यापी आ महादयालु छैथ। हुनका किए केकरोसँ द्वेष भेलैन? किए ओ सुअर बनि हिरण्याक्षसँ पृथ्वी छीन अपना मुँहमे रखि लेलैन। की पृथ्वी धिया-पुता खेलैक गेन्द सदृश अछि जे ओ मुँहमे रखि इतर पृथ्वीपर ठाढ़ भऽ हुनकासँ लड़ैत रहला आ अन्तमे हत्या कऽ देलखिन। एतबे नहि, नरसिंह अवतार लऽ लोहाक खम्भा फाड़ि हिरण्यकश्यपुकेँ पेट फाड़ि हत्या केलैन। की ईश्वर सभसँ पैघ हत्यारा छैथ? वामन रूप धारण कऽ राजा बलिसँ तीन डेग जमीन मांगि सौंसे राज्य हड़ैप लेलैन, की दुनियाँमे सभसँ पैघ धोखावाज वएह छला ? एहेन धोखावाजक आराधना केलासँ कहेन फल भेटत अपनो विचारि सकै छी। भीख मांगब मायावी, असमर्थ जीवक (मनुक्खक) काज छी नहि कि कर्मठ, ऐश्वर्यवान पुरुषक। ऐ रूपैं देखलापर बुझि पड़ैत जे मनक माया, कल्पना आओर अज्ञानता सभकेँ भरमा देने अछि। तेतबे नहि,

परशुराम बनि हैहय-वंशीय क्षत्रिएकैं एक्कैस बेर सामूहिक हत्या केलैन। जहन एकबेर वंश नाश कऽ देलखिन तहन दोहरा कऽ कतए-सँ फेर क्षत्रिए आबि गेला जे दोहरबैत, तेहरबैत एक्कैस बेर पहुँच गेला? अनन्त विश्व- ब्रह्माण्डक रचैता ईश्वर दशरथक बेटा राम बनि सीतासँ बिआहो कऽ लेलैन आ हरण भेलापर गाछो-वृक्षसँ कानि-कानि पता पुछलखिन। बिना ओर-छोड़क समुद्रमे पाथरक पुलो बनबा देलखिन। इत्यादि-इत्यादि, अनेको प्रश्न विचारणीय अछि। हम सभ एक्कैसम शताब्दीक समर्थ चेतना छी नहि कि सोलहम शताब्दीक बाल चेतना। ❑

पयस्विनी, प्रबन्ध-निबन्ध, 2021, पृष्ठ संख्या : 07-08

जरूरत अछि कृषि शिक्षाकेँ खुला विश्वविद्यालय बना सभ स्तरक किसान पैदा करैक। जँ से नहि तँ की मन संग कर्म आ वचन समतुल्य भऽ सकत?

जेना कानमे कोनो दिशासँ कोनो तरहक अवाज अनासुरती प्रवेश कऽ मनकेँ जगा दैत तहिना राधामोहनक मनमे जगल। अपन संकल्पक संग अपन जिनगी बना जीब। जँ से नइ तँ हारि की भेल? जाधैर मनुख दोसराश्रित रहत –वैचारिक छोड़ि– ताधैर पर्यावरणमे कमी हेबे करत। जिनगीक पहिल विचार जखन मनमे उठल तँ की ओ अधला उठल? जँ नहि तँ किए ने पालन-पोसन करब? जाबे धरि दूध पैदा करैक शक्ति मनुखमे नै औत ताबे धरि हंसक बास केना भऽ सकै छइ?

..जेतए दूध रहत तेतइ ने हंसोक बास रहत। मुदा दूध -पानि बेरौनिहार हंस मनुखक देल पानि बेरबैए आकि भगवानक देल जे गाए-महींसक पेटेमे फैंटल रहैए तेकरो बेरबैए?

बाल-बोध बच्चा जहिना चलै-जोकर टाँग होइते पछोर धऽ चलए चाहैत मुदा चालिक गति पछुआ दोसर बाट सेहो धड़ा जाइत, मुदा बाट तँ बाटे छी तहिना राधामोहनक मन बाटक आशा बाट पकैड़ वौआए लगल। मोन पड़लै अपन पहिल बाट- गाइक पालन-पोसन। मनमे उठिते उठि गेलै- 'परिवारमे गाए नै धाड़ैए। तँ धाड़ैए की? धार-साज तखन बनै छै जखन ओइमे मन मधुरस आबि मनकेँ पकड़ै छइ। पशुपालनक अंग भेल गाए पोसब आ पशुपालन कृषिक अंग रहल अछि। किसानक देशक विकास बिना किसानी प्रक्रियासँ सम्भव अछि? अपना लिए अपन दुनियाँ बना-बना बैस जीवन-यात्रा भरिसक सभसँ नीक होइ छइ। जइ बीच निवास करैत अपन तन-मन-धनक एकाग्र करैए। ..राधामोहनक जिज्ञासा

आरो बढ़ल। मनमे उठलै लिखित-अलिखित विचार पकड़ब। केता दिन अखबारक पन्नामे पशुपालनक लेख देखै छिऐ, मुदा ओकरा पढ़ै कहाँ छी? कियो पढ़ै छी जे भारत-अमेरिकासँ केते रणसँ जीतलक तँ दोसर कोनो पछुएलहा देशसँ केते रणसँ हारल। तँ कियो पढ़ैए पूरा इलाकामे बैंकक की कारोबार छै, तँ कियो पढ़ैत चोरी-डकैती केते भेल। तँ कियो पढ़ैत रेलक भाड़ा बढ़ि गेल आब लोक गाड़ीमे केना चलत।

..ई सभ सच्चाइ सामने अबिते राधामोहनक मन वौआए लगलै। अफसोच करैत मन अखबारसँ रेडियोपर आबि गेलइ। जे भाषा बुझै छी तइमे सैंकड़ो कार्यक्रम प्रतिदिन कृषिक अछि। अखबार हूसल तँ हूसल आइएसँ रेडियोक कार्यक्रम सुनब। मन आगू बढ़लै। कृषि कौलेज पूसापर गेलइ। पूसामे किसान मेला लगैए जइमे कृषि सम्बन्धी अधिक-सँ-अधिक जानकारी भेटै छइ। सत संगेसँ ने संगैत सुधरबो करै छै आ बिगड़बो करै छइ! अनेरे मन वौआबै छी, जखन विश्वविद्यालय ऐछे तखन आरो की चाहबे करी। मन ठमकलै। विश्वविद्यालय-ले उन्नत खेतीक जरूरत अछि, तैठाम जँ कौलेज कम रहै तहूमे सीमित पढ़ाइ होइ, आ ओहू सीमितमे किताबीए शिक्षा धरि समटा जाए तखन विकास केना हएत? जरूरत अछि कृषि शिक्षाकेँ खुला विश्वविद्यालय बना सभ स्तरक किसान पैदा करैक। जँ से नहि तँ की मन संग कर्म आ वचन समतुल्य भऽ सकत? आकि पुरना लोक नवका कम्पनीक अंगुरक रस पीब बेसी भँसिया कहलैन? ❑

नै धाड़ैए, उपन्यास, 2013, पृष्ठ संख्या : 49-50

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।

दिन लहसैत किशुन भाय लौफा हाटसँ घुमती बेर जखन दीप पहुँचला तँ बाटपर ठाढ़ रेहना चाचीपर नजैर पड़लैन। कोराक बच्चा-प्रपौत्रकेँ रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत रहथिन।

रेहना चाचीक 'आवाज' सुनिते किशुन भायकेँ सात-आठ बर्ख पहिलुका बुझि पड़लैन मुदा सत्तैर बर्खक झूर-झूर भेल शरीर, धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक सुरखी देखि शंको भेलैन। ओना, सात-आठ बर्खसँ किशुन भाय रेहना चाचीकेँ नै देखने रहैथ तँए हँ-नै दुनूमे मन फँसल रहैन। फँसबो उचिते छेलैन। एक दिनमे तँ राज-पाट उनैट जाइए, सात-आठ बर्ख तँ सहजे सात-आठ बर्ख भेल।

मुदा तैयो मन तरसैत रहैन, तरंगी होइत रहैन जे रेहना चाचीक आवाज छी। लग्गा भरि हटि बाटेपर साइकिल दहिना पैरक भरे ठाढ़ केने, रेहना चाचीपर आँखि गड़ौने मने-मन विचारिते छला आकि अनायास मुँह फुटलैन-

"रेहना चाची।"

‘रेहना चाची’ सुनि चाची बच्चापर सँ नजैर उठा चारू दिस खिरौलैन। दछिनवारि भाग साइकिलपर ठाढ़ भेलपर नजैर पड़लैन। चेहरासँ चिन्ह नै सकली। मुदा कानमे किशुनक आवाज ठहकलैन। आवाज ठहैकते बोल फुटलैन-

“बौआ, किशुन।”

‘बौआ किशुन’ सुनि किशुन भायकेँ जीहमे जान एलैन। जान अबिते जीहपर राखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप-रंग आ बोल ठहकलैन। वएह रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ दच्छि न भाग लखनौर, उत्तरमे बेरमा, पूबमे कछुबी आ पच्छिम सुखेत भरि छेलैन। यएह छेलैन हुनकर कर्मभूमि आ दीप छेलैन पतिभूमि। एक तँ अहुना दीप ओहन गाम अछि जइमे छोट घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइसँ बरो-बाट घराड़ीए बनि सुखसँ रहैए। पहिने घराड़ीपर घर तखन ने जाइ अबैले आकि चलै-फिड़ैले बर-बाटक खगता होइए। बाटक काज तँ एक पेड़ियो, खुरपेड़ियो आ धुरपेड़ियोसँ चैल सकैए मुदा घराड़ी बिना ‘घर’ बाँसक धूजा बनि थोड़े फहराएत...।

घराड़ी भरि जमीनमे बास करैवाली रेहना चाचीक जीविकाक बेवसाय छेलैन, भोरे अपन जवाबदेहीक अँगना-घरक काज सम्हारि, पथियामे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक पारक हिसाबसँ निकैल एक अनिया अलता, पैयाही डोरा, पैयाही सुइयाक संग आनो-आन वौस लऽ गामक सीमान टपि आन सीमानमे भरि दिन गमा साँझ पड़ैत फेर अपन सीमानमे पहुँच जाइ छेली।

मिथिलाक जे गौरव-गाथा अछि- दुआरपर आएल बाट-बटोही, भूखल-दूखल जँ खाइबेर पहुँचैत वा जलखैए बेर पहुँचैत आकि जखन जे समय रहल, पहिने हुनकर आग्रह करिऐन। ओना, खाधुरोक अपन राज-पाट छइ। जँ से नै छै तँ ओइठामक भोजैतक कोटा हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियानक पछाइत किए नतहारी ताकब छइ।

ओहन नतहारी जकाँ तँ नै मुदा हिस्सामे बखरा तँ लोक निमाहिते अछि।

कोनो गाम अबैसँ पहिने रेहना चाची बिसैर जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की आ रहब केतए। परिवार परिवारक बीच खाली कारेबारक सम्बन्ध नहि। घन्टा-घन्टा बैस रेहना चाची अपनो जिनगी आ परिवारो-समाजोक जिनगीक खिस्सा-पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आएल छेली। साइकिलपर सँ उतैर किशुन भाय, स्टेण्डपर साइकिल ठाढ़ कऽ बजला-

"चाची गोड़ लगै छी?"

किशुन भाइक गोड़ लागब रेहना चाची सुनबे ने केली जे असीरवाद दितथिन, ले बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन-

"बौआ, माए नीके छह किने। जहियासँ गाम छूटल, कारोबार गेल तहियासँ चीन्हो-पहचीन गेल! के केतए जीबैए आ केतए मरि गेल...! मरि गेल मनक सभ सखी-बहिनपा...!"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाइक माथ चकरेलैन। जहिना एक-जनिया, दू-जनिया, बहु-जनिया ओछाइनो-बिछाइन चकराइत जाइए तहिना बुधिओ-बुधियारी आ चासो-बास तँ चकराइते अछि। तहिना किशुन भाइक मन चकरा गेलैन। चकरा ई गेलैन जे गाम छूटल! गाम किए छूटल? गुम-सुम भेल किशुन भाय रेहना चाचीक झूर-झूर भेल चेहरा देखए लगला, जेना खेसारी-बदामक बीड़िया झूर-झूर भेलो पछाइत गरदी तरकारीक रूप पकैड़ भोज्य भोग पबैक सुख पबैत अपन जिनगी चैनसँ गमबए चाहैए, तहिना चाचीक मन सेहो पुलकैत रहैन। मुदा बिनु बुझनौं तँ नइने लोक बुझैत। कोनो बात सुनब आ बुझब, दू भेल। बुझैले बेसी सुनए पड़ै छै, सुनै तँ लोक एकहरफियो अछि। भाय पुछलखिन- "चाची, गाम केना छूटल?"

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रेहना चाचीकेँ एको मिसिया बिसबिसी नै

लगलैन। जेना नीक जिनगी पाबि कियो नीक सिरासँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना भगिन-जमाए पाबि रेहना चाची खुशी छैथ। मुदा पेटमे पेटेले झगड़ा उठि गेलैन। झगड़ा ई उठलैन जे बीतल जिनगीमे जे घटल सत बात अछि ओ बाजल जा सकैए की नहि? ओना, आब ओइ बातक खगतो नहियेँ जकाँ अछि मुदा इतिहास तँ काल-खण्ड विहीन भइये जाएत?

रेहना चाचीक मन बेकाबू भऽ गेलैन! मुदा बिसवास देलकैन। बिसवास ई देलकैन जे अबैया दिन सुखैया तँ ऐछे, तखन किए ने अपन जिनगीक बात भाइयो-भातीजकेँ कहि दिऐ। आब कियो जिनगी लूटि लेत।

बजली- "बौआ, सात-आठ बर्खसँ गाम सभ छोड़लौं, ओना, खटनी छुटने देहो हर-हरा गेल, मुदा मन अखनो कहैए जे जानि कऽ रोगा गेलौं...। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी हुअ लगल, जे आन गामक लोकक कारेबारेटा नहि, चलैक रस्तो कटि-खोंटि गेल।"

एक संग किशुन भाइक मनमे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा जहिना मुड़ी आ टाँग कटल लहासकेँ परखब कठिन भऽ जाइए तहिना चाचीक बात सुनि भेलैन। छीना-झपटी आकि झपटी-झपटा, वएह ने जे जहिना प्रखर वक्ता लोकैन अपन मेहिका चाउरमे मोटका चाउर फैंटि काज ससारि लइ छैथ आकि मोटके चाउरमे मेहिका फैंटि दइ छथिन..? मुदा अनेरे मन वौअबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-

"चाची, जहिया जे भेल, से भेल। आब नीके छी किने?"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाची विस्मित भऽ गेली। 'विस्मित' ई भऽ गेली जे यएह देह छी, अपन गाम लगा पाँच गामक लोकसँ हबो-गब करै छेलौं आ खेबो-पीबो करै छेलौं, कमाइयो-खटा लइ छेलौं, से तँ छिनाइए गेल! ओना, आब अपन उमेरो ने रहल जे माथपर पथिया लऽ चारि गाम घुमि कारोबार करब। रेहना चाची बजली-

"अपन बेटा-पोता अल्ला हेरि लेलैन, मुदा फेर वएह ने देबो केलैन।"

रेहना चाचीक उत्तर किशुन भाय नीक जकाँ नै बुझि सकला। तेकर कारण भेलैन जे लगले सुनला जे 'बेटा-पोता हेरि लेलैन' आ लगले सुनला जे 'प्रपौत्र बच्चा छी' आ भगिन-जमाइक परिवारमे रहै छी...।

मनकेँ सोझरबैत किशुन भाय बजला-

"चाची, हमरा ओहिना मोन अछि, जखन माइयो आ अहूँ एकेठीन बैस खेबो करी आ नीक-अधला गपो करी।"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तैर बर्खक जिनगी बिजलोका जकाँ मनमे चमकलैन। करियाएल मेघ, बदरियाएल मौसम, सरदियाएल रातिमे जखन बिजलोका चमकै छै तखन ओ अपन इजोतक संग आवाज करैत कहै छै जे हम लाली इजोत छी नै कि पीड़ी। पीड़ी दूर - देशक होइ छै लाली लगक। प्रमाण असतक होइ छै आकि सतक? सत तँ अपने सत भऽ सौंसे फल फड़ जकाँ अछि।

रेहना चाचीक आगूमे ठाढ़ किशुन भाइकेँ ने 'अक' चलैन आ ने 'बक'। दिन सेहो लुक-झुका गेल। सुरूज तँ डुमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल छल। किशुन भाय बजला-

"चाची, अखन तँ दिन निसचित नै भेल मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ लिऔन करै छी।"

किशुन भाइक 'लिऔन' सुनि रेहना चाचीक मन ठहकलैन। मन ठहकलैन ई जे आब वएह जुग-जमाना रहल आकि ओइसँ नीको-अधला भेल?

नीक-अधलाक बीच रेहना चाची चपा गेली। जइसँ बोथिया गेली। बोथिया ई गेली जे की सम्बन्ध छल! कोरा-काँख तर केते दिन किशुनलालकेँ नेने छी, पाबैनमे पबनौट खुएलौं आ अपने केते खेलौं,

तेकर कोन हिसाब। जिनगीए ओही भरोसे बीतल किने...।

आइ ओइ किशुनलालक बेटाक बिआह छी, की आब ओतए पहुँच पाइब सकै छी? केना पाबि सकै छी? जैठाम लोक अधला काज करै छल तैठाम गंगाजलसँ सिक्त कऽ नीक बनौल जाइ छल आ अखनो बनौल जाइए। मुदा ओहन तँ जगहे खिया गेल। मुदा जैठाम गंगेजल अधला बनि जाएत, तैठाम की उपाय...।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलैन। मुदा सौंझुका तारा जकाँ जेना मनमे भुक-दे उगलैन- जँ कहीं काजेक चर्च पाछू पड़ि जाएत आ अनेरूए गप साँझ पड़ा देत, तइसँ नीक जे काजक नाँगैर पकैड़ धार पार होइ। बजली- "बौआ, ढौओ-कौड़ी लेलहक हेन?"

ढौआ-कौड़ीक बात सुनि किशुन भाइक मन पुलकलैन। बजला-

"चाची, बिआहक अखन गपे-सप उठल हेन, ओ सभ गप पछुआएले अछि, जखन बिआहमे एबे करब तखन सभ गप बुझा देब।"

किशुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मनमे उठलैन, जेते अल्ला-मियाँ परिवार सभकेँ झाँपन-तोपन दैत रहथिन तेते नीक। भगवान सभकेँ नीक करथुन। बजली-

"किशुन बौआ, देखिते छह जे अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै-जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से...।"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब , तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भवि स...। ❑

लजबिजी, कथा संग्रह, 2014, पृष्ठ संख्या : 33-38

“महाराज.! एक्केबेर नहि, सात बेर सौंसे नगर घुमिकऽ मुआइना केलौं मुदा एकोटा नीक लोक नहि भेटल, सूची केकर बनैबतौं, तँए सूचीपत्र खाली अछि।”

जहिना जीबछ काका बच्चाक प्रति अपन कर्मक धारकेँ सन्तानोन्मुखी बना परिवारमे ठाढ़ छला तहिना श्यामा सेहो ठाढ़ रहली। ओना, दुनू बेकतीक बीच, माने जीबछ काका आ श्यामा काकीक बीच वैवाहिक सम्बन्ध जहिये भेलैन तहिये दुनू परानी विचारि कऽ सहमत भऽ गेलैथ जे मनुक्ख मात्र अन्ने-पानि, माले-जाल आकि गाछ-बिरीछ-टाक सृजनकर्ता नहि, मनुक्खक सृजनकर्ता सेहो छथिए, तँए अपना दुनू परानीक जीवनक पहिल संकल्प यहए भेल जे बच्चाकेँ जन्म-सँ-चेतन अवस्थामे पहुँचा स्वतंत्र रूपमे छोड़ि दिऐ..। ओना, जहिना जीवन जाल छी तहिना महाजाल सेहो छीहे, तँए जंजाल महाजाल रूपमे अछिए।

कृष्ण युधिष्ठिर आ दुर्योधनकेँ कहलैन जे द्वारकामे नीक आदमी केते अछि आ अधला आदमी केते अछि, एकर सूची बना कऽ दुनू गोरे दिअ।

अपन-अपन नजैरिये दुनू गोरे नीक -अधलाक सूची बनबए द्वारका नगरमे प्रवेश केलाह। एक दिससँ पहियबैत दुनू गोरे अलग भऽ सूची तैयार करए लगला।

सूची तैयार केला-पछाइत युधिष्ठिरो आ दुर्योधनो, दुनू गोरे कृष्ण लग पहुँचला। दुनू अपन-अपन सूची प्रस्तुत केलैन। दुनू सूचीमे किछु नहि लिखल देखि कृष्ण दुर्योधनकेँ पुछलैन। दुर्योधन जवाब देलकैन -

“महाराज.! एक्केबेर नहि, सात बेर सौंसे नगर घुमिकऽ मुआइना केलौं मुदा एकोटा नीक लोक नहि भेटल , सूची केकर बनैबतौं, तँए

सूचीपत्र खाली अछि।”

दुर्योधनक तर्क सूची गजेरी जकाँ कहियौ आकि परबा -पौरकी जकाँ कृष्ण अपन पेटक साँस पेटेमे घोंटलैन। बजला किछु नहि। मनमे फुरलैन लगले फेर युधिष्ठिरकेँ पुछलखिन। युधिष्ठिर जवाब दैत कहलकैन-

“महाराज, हमरो वएह समस्या भेल। सात बेरकेँ कहए जे सौंसे द्वारका नगर हम नअ बेर घुमि-घुमि कऽ एक-एक बेकती आ एक-एक परिवारक जाँच-पड़ताल केलौं मुदा एकोटा अधला आदमी नहि भेटल। तँए की लिखितौं, सूची पत्र खाली अछि।”

आब कहब जे दुनूमे किनकर रिपोर्ट सही छेलैन आ किनकर गलत छेलैन? ने किनको सही छेलैन आ ने किनको गलत छेलैन। अपन-अपन नजैरिये दुनूक सहियो आ गलतियो तँ छेलैन्हे। यएह छी दृष्टि। ❑

संचरण, कथा संग्रह, 2022, पृष्ठ संख्या : 35-36

मूल्यानन्द भगवानक आनन्द स्वरूपकेँ मने-मन जरूर जनै छैथ मुदा समग्रताक विचार मनमे कम जागि पेलैन, जइसँ जीवन एक-भग्गू जकाँ भइये गेल छैन।

हमरा गहवरक नियम झूठ बाजब नहि अछि, जे आन गहवरबला जकाँ भगवानक राक्षसी रूप बनि, थोपड़ी बजा डेराएब आकि राक्षस-राक्षसनियाक खिस्सा-पिहानी गढ़ि लोककेँ भुतियाएब.!

नवटोलक भगतक विचार स्पष्ट समक्ष छैन जे समाजमे रंग-रंगक दूत-भूत घुमिते अछि, जे रंग-रंगक रूप बना नाच करैए, मुदा अपने ओहन नचनिया थोड़े छी, अपने तँ ओ नचनिया छी जे जहिना परिवारमे श्राद्धक भोज देखै छी, भंडारीक भनडारा देखै छी, कुमारि-भोजनक संग कुमार-भोजन सेहो देखै छी, तहिना मूर्तिक भनडारा नइ देखै छी सेहो तँ देखिते छी। मनुक्ख छी तँए मनुक्खक संग जखन देवियो-देवता आ भगो-भगवानक रूप देखए लगब तखन ने उगना सन महादेव विद्यापति सन लोककेँ भेटतैन। से तँ ओहिना नहि ने भेटत। जखन उगनाक दिगम्बर रूप महादेव जकाँ बनि दिक्-मे नहि करब। दिक्-दर्शन कि कोनो ओहन बोनमे नुकाएल अछि जे उगना जकाँ विद्यापतिकेँ नहि भेटतैन। मुदा तइले तँ कम-सँ-कम राम जकाँ चौदहो बर्ख अपने बोनैया बनि लगाएब तखने से भेटत। जीवन कला छी, माने करैक लूरि छी जीवन। जीवनक सीमा अछि। ओना मृत्युक भूत सदिकाल मनमे चढ़ले रहैए, मुदा तेही भुताहि बोनमे ने अपनो रास्ता पकैड़ चलए पड़त।

जखन अपने अपन आजुक परिचय कऽ लेब, तखन दुनियाँक बीच अपने परिचय भऽ जाएत। भेल तँ एतबे ने जे अपन परिचय पेब दुनियाँक परिचय करैले अपन परिचित जीवनक कलाकेँ पकैड़ आगू बढ़ब। काज

दुनियाँमे मनुक्खक बीच दू रंगक होइए , एक होइए थोपल काज माने मनक विपरीत जे काज करैले देल जाइए। आ दोसर होइए मनक अनुकूल काज। माने ई जे अपन जे मन कहैए से काज करब। आनन्द स्वरूप जे भगवानक रूप छैन ओ ओही रास्तासँ मनुक्खकेँ भेटै छैन। ओना, मूल्यानन्द भगवानक आनन्द स्वरूपकेँ मने-मन जरूर जनै छैथ मुदा समग्रताक विचार मनमे कम जागि पेलैन, जइसँ जीवन एकभग्गू जकाँ भइये गेल छैन। तेकर कारण भेलैन जे जखने जीवनमे समग्रताक रूपक आगम होइए तखने आजुक जीवनक समग्रताक रूप झलकए लगैए। माने भेल जे जेतेक भार अपना निमित्ते अछि, ओकरा गायित्री जकाँ एक नहि एक साए आठ बेर, समयानुसार आ कार्यानुसार सेहो निमाहब। चलू दुनूक जरूरतक बीच समझौता कऽ लिअ। जखन काजक व्यग्रता देखब तखन काजकेँ आ जखन समयक व्यग्रता देखब तखन समयकेँ अगुआएब। ओना, जीवन तीन रूपक अछि। पहिल अछि- नियमबद्ध जीवन। दोसर अछि नियम-अ-नियमक बीचक जीवन आ तेसर अछि सोल्होअना अनियमित जीवन। ओना, ओहू जीवनमे मनमौजी अछिए। कहब की मौजी? मनमौजी ई जे शास्त्रानुसार जैठाम पौने तीने बजे ऋषि-मुनी जकाँ जे ओछाइन छोड़ि यमुना नदी दिस बढ़ि अपन जीवन लीला शुरू करैए तैठाम आठ बजेमे उठि कियो यमुना धार दिस देखबे करत तँ कृष्णक वास्तविक रूप थोड़े देखत। खाएर जे देखत से दुनियाँ देखत तइले मूल्यानन्दकेँ कोन खगता छैन। जीवनक समग्रतासँ धियान हटने एते कमी मूल्यानन्दकेँ जरूर भेबे केलैन जे मात्र वैचारिक रूपमे परिवारक संग रहला। कहैकाल सभ बेकती, परिवार आ समाजो कहिते छैथ जे जीवन संघर्ष छी। मुदा बेकतीक रूपमे की छी, परिवारक रूपमे की अछि आ सामाजिक रूपमे की अछि? जखन बेकतीक जीवन वा परिवारक जीवन वा समाजक जीवन वैचारिक जीवनक संग बेवहारिक जीवन पकैड़ नहि चलत, तखन समयसँ हारि

मानि दिशा-विहीन हेबे करत। खाएर जे हएत से हुअ, तइले मूल्यानन्द भायकेँ की खगता छैन। खगता छैन एतबे जे परिवार अपन धारानुकूल गतिशील रहए। ओना, मन स्पष्ट बुझै छैन जे अपन जीवन-लीला बेढ़ंग भइये गेल अछि। अबण्ड करीनवाह कहियौ आकि हर चलौनिहार हरवाह जकाँ छीपा-पनार, से भइये गेल अछि जे दिनानुदिन बढ़िते जा रहल अछि। ❑ **संचरण, कथा संग्रह, 2022, पृष्ठ संख्या : 53-55**

“भाय, जेतए जे अछि तेकरा तेतइ रहह दियौ। अपना दुनू गोरेक बीच जे सामाजिक सम्बन्ध अछि , ओ निमाहैत चलू। जइसँ अपना जीवनक संग एहेन बेढ़ंगपन नहि आबए, ऐसँ बेसी कइये की सकै छी।”

बजैक क्रममे सभ बजिते अछि, जे समय मूल्यवान छी, मुदा केना मूल्यवान छी से मूल्यानन्दो भाय नीक जकाँ नहियेँ बुझि सकला जे अपन जीवनक समग्रता कोन रूपमे प्रयोग करब..। अपन जीवनक संग मूल्यानन्द अपन परिवारो आ समाजोक जीवनकेँ नदीक धार जकाँ जखन महारपर ठाढ़ भऽ हियासए लगला तखन स्पष्ट देखएमे आबए लगलैन जे धारक धार तँ गतिशील अछि मुदा एकाग्रताक अभाव छइ। केतौ चहटी जकाँ बीचमे ढीमका छै तँ केतौ मोइन जकाँ गहींर अछि। सभ यएह ने चाहै छैथ जे शान्तिपूर्ण जीवनक धार बहैत रहए, तखन रक्का-टोकी वा कहा-कही किए होइए? भाय, सबहक दुनियाँ छी, सभ अपन-अपन जीवनकेँ पवित्र गंगा जकाँ हिमालय पहाड़सँ गंगोत्री होइत जे गंगा धरतीएपर नहि सबहक मनोमे बहि रहल छैथ तखन जँ मनुक्ख बनि जखन धरतीपर जन्म लेलौं तँ धरतीपर जीबैक अधिकार तँ अ पनो भेटिये गेल अछि। मुदा ऐ अधिकारक अधिकारी बनि अपन अधिकारक निमरजना सेहो करब अछि किने। स्वतंत्रता केतौ हाट-बाजारमे बिकाइए, ओ तँ मनुक्ख जीवनक फल छी।

मूल्यानन्दक मनमे स्वतंत्रता आ परतंत्रता बीचक भेद आबिये ने रहल छेलैन। ओना, आनैक परियास कऽ रहल छला मुदा जीवनक मोड़पर विचारक संग काजक एकरूपता तेहेन खच्चा बनौने छेलैन जे बिच्चेमे लसकल छला। जखन राजनीतिये (देशक नीतिये) बेढ़ंग अछि

तखन कृष्णक रास लीलाक रूपकेँ के कहए जे अन्हरिया अष्टमीक नन्दक कान्हपर बैसल दूध-मुहोँ कृष्ण केना देखि पड़त। भाय, जखन कृष्ण आनन्द स्वरूप छैथ, तखन ओ कृष्ण आनन्द स्वरूप किए ने जे अन्हारक (कृष्णक) अन्हारकेँ देखत? भेल तँ एतबे ने जे अपन जीवनकेँ सदिकाल उत्साहित बना जीवनक समग्र रूपकेँ पकैड़, खुशी-खुशी ओइमे लागल रही। मनुक्ख ने हाथी जकाँ जानवर छी जे एक-एकटा गाछ प्रतिदिन भक्ष लेत आ ने बहुरूपिया नचनियाँ, जे भरि दिन रूपेँ बदलैत रहत। खाएर जे जे छी तइसँ मूल्यानन्दकेँ कोन मतलब छैन। भेल तँ एतबे ने जे अपन जीवनक परिचय भेलापर कियो अपन बेकतीगत जीवनक सम्बन्ध बुझि अपन कर्तव्यक निमरजना करैथ। माने ई जे विद्यालयमे पढ़ौल (माने, जीवनक बाट पकड़ौनिहार) गुरुक (शिक्षक) संग केहेन सम्बन्ध कर्मक जीवनमे छल आ अखन कोन रूपमे अछि आ ओकर निष्ठित बेवहार की हएत, तेकरे ने निष्ठावान जकाँ निमाहैक अछि। माने धर्मनिष्ठता धारण करब अछि। जखने जीवन अपन धुरीमे धुरिया जाइए तखने साइकिलक पहिया जकाँ जीवनक पहिया सेहो सुनिष्ठ जीवन बनि आगूमुहेँ बढ़ए लगैए।

अनायास मूल्यानन्द भाय मनमे उतरला जे आइ कत्ता दिनसँ भेँट नहि भेला अछि। मोन पड़ल जे सोलहम दिनक कछुआ हाट दिन भेँट भेल छला। एक पनरहिया पार भऽ गेल, माने मासक एक पक्ष। जहिना सरकार बदैल एक पक्षसँ दोसर पक्षक बीच बढ़ैए। अन्हरिया पक्ष समाप्त भेल इजोरिया पक्ष शुरू भेल, मुदा कबीर बाबाक मूर्ति मनुक्खसँ हटि लोहा-पाथरक संग पंचधातुक मूर्तिये पूज्य अछि। जखन मुर्तीए ने अछि तखन बढ़ती कोन मुहेँ केकर हएत तेकर कोनो ठेकान अछि। खाएर जे अछि, अपने मन धिरकारए लगल जे जखन आँखि तकै छी तखन जँ कियो पड़ोसी वा गौंआँसँ पनरह दिन भेँट नहि हु अए, एहेन जीवन मरल भेल आकि सड़ल? मूल्यानन्द भाइक स्मरण रूप एहेन चुहैट कऽ मनमे पकैड़ लेलक जे लगले उठि विदा भेलौं भेँट करए। मनमे उठल जे पनरह

दिनपर मूल्यानन्द भाय भेटता, ऐठाम अपन कर्म वा कर्तव्यक समीक्षा नहि, मूल्यानन्द भाइक सम्बन्धक बात अछि, तँए विचार-विमर्शमे देरी लगबे करत। तहूमे देखिते छी जे कृषिकेँ आगू बढ़ैक नव-नव चर्च तँ होइए मुदा खेती करैले खाद नहि भेटत जे कृषि पैदावारक मुख्य तत्त्व छी, जइसँ कृषिमे क्रान्तिक आगमन भेल तइसँ देशक खाद्य-पदार्थ बहरमुहाँ जान बचा घरमुहाँ भेल। मुदा ओ घरमुहाँ केना आगू बढ़ैत चलत, यएह ने भेल स्वनिर्भर बेवस्था। जखन घरसँ निकलए लगलौं कि मनमे उठल जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे मूल्यानन्द भाय ऐठाम जाइ छी, करवन आएब तेकर कोनो ठीक नहि अछि। मुदा लगले अपने मन कहलक जे एहेन मौगियाही चालि वा विचार मौगमेहराक भेल, अपने तँ से नहि छी, तँए पत्नीसँ आदेश लइक कोन जरूरत अछि, ओहो अपन स्वतंत्र रूपसँ परिवारक बनल रहौथ आ अपनो बनल रहब। फेर लगले मन कहलक जे जखन परिवारसँ बाहर जा रहल छी तखन परिवारक जवाबदेही बिनु सुमझेने जाएबो तँ उचित नहियेँ भेल। समझौता करैत विचारलौं जे पत्नीकेँ एतबे कहबैन जे कने बाहर जा रहल छी , जेतेकाल नहि रहब तेतेकालक परिवारक सोल्होअना भार अहाँपर भेल। मन मानि गेल। पत्नीकेँ शोर पारि कहलयैन- “कने बाहर जाइ छी।”

पत्नी बजली- “खोलि कऽ ने बाजब जे टोलसँ बाहर आकि गामसँ बाहर जा रहल छी?”

पत्नीक विचार सुनि ततमत करैत बजलौं- “रहब तँ गामेमे मुदा परिवारसँ बाहर तँ रहबे करब।”

घरक गारजनी के नहि करए चाहैए, पत्नी किछु नहि बजली। अपने विदा भेलौं।

दरबज्जापर बैसल मूल्यानन्द भाइक रंग-रूप देखि मने-मन एहेन बुझि पड़ल जे जनु कोनो विचारक मर्मसँ मर्माहत छैथ। मन ठमैक गेल। अपन बेथाकेँ मेघडम्मर जकाँ ओढ़ि बजलौं- “गोड़ लगै छी भाय,

भागवतक धुंधकारी जकाँ तेहेन दुरकाल समय बनि गेल अछि जे मुँह झाँपि घरेमे रहै छी।"

मूल्यानन्द भाय बजला- "एहने धुंधकारीकेँ जखन कृष्ण जकाँ भेँट हएत तखने ने जीवनसँ भेँट हएत।"

मूल्यानन्द भाइक विचार गड़गर नहि गुरुगर लागल। तैबीच , गैस चुल्हि रहने, भौजी, मूल्यानन्द भाइक पत्नी, चाह नेने पहुँच गेली। दुनू गोरे चाह पीबैत गप-सप्प शुरू केलौं। जहिना अपने अपन बेथाकेँ अगुआ बाजल छेलौं तहिना मूल्यानन्द भाय बजला - "दुरकाल कि तोरेटा ले एलह आकि सबले आएल अछि। अपनो बेटा अपने कहैए जे अहाँ हमरा-ले की केलौं। आब कहह जे ऐसँ बेसी परिवार की बगदत ?"

ओना, मूल्यानन्द भाइक विचार अनसोहाँत जकाँ लगबे कएल मुदा अपनो तँ आँखिक सोझमे गाममे देखिते छी जे पोतो बाबाकेँ अढ़बैत कहैए- 'एक लोटा पानी लेते आइये।' ततबेटा थोड़े अछि, जखन बेटा-पोता बाप-दादाकेँ कहिते अछि जे 'आप कुछ नहीं जानते हैं, चुप रहिये।' तखन ऐसँ बेसी की बगदत। विचारमे समझौता करैत बजलौं - "भाय, जखन एहने समये बनि गेल अछि तखन जीब केना?"

मुस्की दैत मूल्यानन्द भाय बजला- "सबहक अपन खेतक आड़िये-धुर मेटा गेल अछि। मेटेबो केना ने करत। सर्वेयो भेना बहुत दिन भऽ गेल, 1903 इस्वीमे अंगरेजी शासन जे केने छल, तेकरा आब साए बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल, तँए सर्वेक जरूरत भऽ गेल अछि। जाबे मनुक्ख अपन सीमा-सरहद नहि बुझि जीवनक दिशामे बढ़त ताबे बेढंगक जीवन बनबे करत किने।"

आस-निआसक बीच ठाढ़ होइत बजलौं - "भाय, जेतए जे अछि तेकरा तेतइ रहह दियौ। अपना दुनू गोरेक बीच जे सामाजिक सम्बन्ध अछि, ओ निमाहैत चलू। जइसँ अपना जीवनक संग एहेन बेढ़ंगपन नहि आबए, ऐसँ बेसी कइये की सकै छी।" ❑ **संचरण, कथा संग्रह, 2022, पृष्ठ संख्या : 55-59**

जखन हसीनाकेँ होश एलैन तँ पतिकेँ फँसरी लागल झुलैत देखली। झुलैत देखि दुनू मित्रक बीचक सिनेह हसीनाक मनमे एते ग्लानि पैदा कऽ देलकैन जे ओहो वेचारी फँसरी लगा मरि गेली।

अंग्रेजी हुकुमतक अन्तिम समयमे हिन्दू-मुसलमानक बीच जमि कऽ लड़ाइ बंगालोमे भेल। पहिल दिन डेढ़-दू साए हिन्दू भाला, फरसा, तरुआरि लऽ सड़कपर आबि सैयो मुसलमानक हत्या केलक, घर जरौलक, चीज-बौस लूटलक। गाम सुनसान भऽ गेल। जे किछु लोक बँचल ओ भागि-पड़ा कऽ अपन कुटुमक ओइठाम चलि गेल। मुदा घटना कमल नहि। जहिना गहुमन साँपकेँ लाठीक चोट खेलापर होइत तहिना तरे-तर मुसलमानक हृदयमे आगि धधकए लगल। सात दिनक पछाइत हजारो मुसलमान हथियारक हाथे बदला लेमए निकैल गेल। अनेको गामक हिन्दू मृत्युक मुँहमे समा गेल। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवार सेहो समाप्त भऽ गेल।

प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन आ प्रोफेसर जफर एक्के कौलेजमे प्रोफेसर। सैयो बर्खसँ दुनू परिवारक बीच दोस्ती चलि अबैत। जहिया कहियो कोनो उत्सव प्रोफेसर सेनक ओइठाम होइत तहिया प्रोफेसर जफर सपरिवार आबि उत्सव मनबैत। तहिना प्रोफेसर जफरक परिवारमे प्रोफेसर सेनोक उपस्थिति होइत। एकठाम बैस दुनू गोरे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ जिनगीक नीक-अधला सभ गप करैत। ने प्रोफेसर सेन प्रोफेसर जफरकेँ आन बुझैत आ ने प्रोफेसर जफर प्रोफेसर सेनकेँ। तहिना घरक स्त्रीगणक बीच सेहो सम्बन्ध। बाल-बच्चाकेँ तँ बुझिए ने पड़ैत जे दुनू परिवार दू धर्मक छी...।

हिन्दु-मुसलमानक बीच तनाव देखि शिक्षण-संस्था सभ बन्न भऽ

गेल तँए दुनू गोरे गामेमे रहैथ। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवाक समाचार प्रोफेसर जफर सुनलैन। पहिने तँ एक्को पाइ बिसवासे ने भेलैन मुदा सत्-सत् पता लगिते कुरसीपर अचेत भऽ लुढ़ैक कऽ निच्चाँमे मुहेँ-भरे गिर पड़ला। दुखसँ हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन । कोठरीमे असगर रहने पहिने तँ परिवारक कियो ने देखलकैन मुदा चाहक कप नेने जखन पत्नी एलैन तँ देखलखिन। निच्चाँमे पड़ल पतिकेँ देखि हसीना कप रखि छाती पीटैत हल्ला करए लगली। हल्ला सुनि अपनो परिवारक आ अड़ोसियो-पड़ोसियो दौगल एलैन।

साँस तँ प्रोफेसर जफरक चलैत रहैन मुदा चेतन-शून्य छला। लगले डॉक्टर बजौल गेल। हसीना पंखा हौंकए लगली। पहिने डॉक्टर प्रोफेसर जफरक मुँहपर पानिक छिच्चा देलखिन। पानिक छिटका पड़िते जफर आँखि खोललैन। आँखि खुलिते डॉक्टर आला लगा कऽ देखलकैन। आला रखि दूटा सूइया लगेलखिन। सूइया पड़िते प्रोफेसर जफर होशमे एला। मुदा तेतेक दुख प्रोफेसर जफरक हृदयकेँ पकैड़ नेने रहैन जे फेर अचेत भऽ गेला..!

दवाइक प्रभावे प्रोफेसर जफर होशमे अबैथ आ हृदयक दुख सँ पुनः बेहोश भऽ जाइथ। होश-बेहोशक बीच पतिकेँ देखि हसीनो अचेत भऽ गिर पड़ली। एते काल डॉक्टर सिरिफ प्रोफेसर जफरेक इलाज करै छला मुदा हसीनाक दशा देखि हुनको इलाज करए लगला।

आठ बजे रातिक पछाइत दुनू परानी प्रोफेसर जफर नीक जकाँ होशमे एला। जखन दुनू गोरे बिस्कुट आ चा ह खेलैन-पीलैन तखन परिवारक सभकेँ बिसवास भऽ भेल जे आब नीक भऽ गेला। आराम करैले दुनू गोरेकेँ पलँगपर छोड़ि सभ सभ दिस भऽ गेल। एगारह बजेक घन्टी घड़ीमे टुनटुनाएल। घन्टी सुनि प्रोफेसर जफर पत्नीकेँ पुछलखिन-

“जगले छी?”

“हँ।”

“अपने दुनू बेटा मित्र-ज्योतिमणि आ हुनक परिवारक हत्या केलक! हत्यारा-बेटाक बाप बनि जीअबसँ नीक मरब। अहाँकेँ जँ ऐ परिवारक बेटा-पुतोहुसँ सिनेह हुअए तँ जीबू मुदा हम एक्को क्षण जीब पाप बुझै छी।”

कहि प्रोफेसर जफर गरदैनमे फँसरी लगबए लगला। पतिकेँ गरदैनमे फँसरी लगबैत देखि हसीना अचेत भऽ पलँगसँ लुढ़ैक निच्चाँमे गिर पड़ली। प्रोफेसर जफर फँसरी लगा प्राण तियागि लेलैन...।

जखन हसीनाकेँ होश एलैन तँ पतिकेँ फँसरी लागल झुलैत देखली। झुलैत देखि दुनू मित्रक बीचक सिनेह हसीनाक मनमे एते ग्लानि पैदा कऽ देलकैन जे ओहो वेचारी फँसरी लगा मरि गेली। ❑ **उत्थान-पतन, उपन्यास, 2009, पृष्ठ संख्या : 157-159**

राज्यो सरकार आ केन्द्रो सरकारक बीच अपन-अपन एहेन-एहेन समस्या सभ छल जे अर्थाभावमे किछु कइये नहि पेब रहल छल। ओना, अर्थाभाव सेहो छल मुदा मूल अभाव छल कुशल केनिहारक।

1952 इस्वीक आम चुनाव देशक ऐतिहासिक चुनाव छल। ऐतिहासिक ऐ मानेमे जे जेतेटा देश भारत आइ अछि ओतेटा भारत शासनक दृष्टिसँ पहिने नइ छल। राजा-रजबारसँ लऽ कऽ जमीन्दार, महंथानासँ देश भरल छल। किसानक देश भारत रहितो किसानक मूल पूजी राजा-रजबारसँ लऽ कऽ महंथाना-जमीन्दार धरिक हाथमे घेराएल छल।

ओना, लोक सभाक चुनावमे जहिना देशक शासन (केन्द्र शासन) काँग्रेस सरकारक हाथ आएल तहिना राज्यक शासन सेहो काँग्रेसक हाथमे आएल। मुदा केन्द्रोमे आ राज्योमे एकछाहा काँग्रेसेक प्रतिनिधिटा नहि पहुँचला, अनेको राजनीतिक पार्टीक प्रतिनिधि सभ पहुँचल छला। दिल्लीक शासनमे जहिना पण्डित जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे काँग्रेसी सरकार बनल, तहिना अनेको पार्टीक बीच कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि सेहो विरोधी दलक नेतृत्वमे ठाढ़ भेला। काँग्रेस पार्टीक अलाबे आन सभ पार्टीसँ बेसी कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि छला। चुनावसँ पूर्व सभ पार्टी अपन-अपन घोषणा पत्रक माध्यमसँ अपन-अपन कार्यक्रम निर्धारित कऽ नेने छल।

देशोक बीच आ राज्यो सभक बीच सामाजिक-आर्थिक विषमता तँ छेलैहे। कोनो-कोनो राज्य औद्योगिक क्षेत्रमे अगुआ जिनगीक मूल

समस्याक समाधानमे सेहो अगुआ गेल छल, जइसँ ओइठाम रोजगारसँ लऽ कऽ स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सभ किछु अगुआ गेल छेलइ। मुदा अधिकांश राज्य पछुआएल छल। पछुआएबो एक्के रंगक नहि छल, रंग-बिरंगक छल। कोनो राज्य अपन जमीनकेँ प्रगतिक पटरीपर चढ़ा नेने छल, तँ कोनो राज्य पाछुए मुहेँ ससैर रहल छल। केरल-बंगालक संग आनो-आनो राज्य सभ अपन अर्थ बेवस्थाकेँ पटरीपर चढ़बए लगल छल। ओना, अपन बिहारो तइमे पाछू नहि छल। घराड़ीक जमीनकेँ बेलगान करबा चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलन सेहो मिथिलांचलमे जमि कऽ भेल। मुदा बकास्त जमीन तँ ओ जमीन ने भेल जेकरा अंग्रेज बहादुर सर्वे-सेटलमेन्टसँ 1903 इस्वीमे फाइनल केने छल। मुदा तँए कि पुस्त-पुस्ताइनसँ लोक खेती करैत नइ आबि रहल छला, सेहो बात तँ नहियेँ छल। मुदा हुनका सबहक लेल जमीनक कोनो अधिकार पत्र नइ छेलैन, तँए ओ सभ बँटेदारक रूपमे अपनाकेँ बुझै छला। जमीन उपजबैत रहला, अगो-जनारसँ लऽ कऽ अधिया-बॉट बॉटैत खेतबलाकेँ अपन कर्जक सुदि -सबाइ चुकबैत खाली हाथे घर घुमैत रहला। तँए एहेन खेतिहर लेल नव सिरासँ बटाइ कानूनक जरूरत भेल। ओना, किछु परिवारकेँ बेलगान घराड़ी छेलैन मुदा हुनको सबहक घराड़ीक लूट-पाट होइते रहैन।

ओना, बेलगान घराड़ीपर रहनिहार आ खेत उपजौनिहारक नाओंसँ 'सिकमी बँटाइ'क खतियान सर्वेमे बनि चुकल छल मुदा तेकर अतिरिक्तो आधासँ बेसीए बँटेदार छुटलो छलाहे। मिथिलांचलक साम्यवादी पार्टी अपन चुनावी घोषणा पत्रमे अपन समस्या-समाधानक प्रस्ताव रखि चुकल छल, खेतीक लेल माटि मूल पूजी छीहे। लिखितसँ मौखिक धरि अपन मूल समस्या जेना- भूमिहीनकेँ बासभूमि, खेत उपजौनिहारकेँ सिकमीक बटाइक अधिकार, अधिक जमीन रखनिहार जमीन्दार-महंथानाकेँ भूमि हदबन्दीक भीतर आनब आ ओकर शेष जमीन

उपजौनिहारक हाथमे देब इत्यादि। तैसंग पीबैसँ लऽ कऽ खेत पटबै धरिक पानिक बेवस्था, अइले कोसी नहरिक संग गाम-गाममे पसरल पोखैरिक जे समस्या सभ छल तेकर समाधान सार्वजनिक रूपमे हुअए, इत्यादि-इत्यादि। ऐ सभ समस्याक समाधानक लेल साम्यवादी पार्टी उठि कऽ ठाढ़ भेल।

मिथिलांचलक सौभाग्य रहल जे ऐठाम महान-महान साधक लोकनिक आवाजाही सदिकाल होइत रहल। खाली आबाजाहिये टा नहि भेल, ओ सभ मिथिलांचलकेँ अपन कर्मभूमि बना जीवन भरि सेवा करैत रहला।

सन् 1955 मे विनोबा भावे झंझारपुर एला। नमहर सभा भेल छेलैन। अखन जे थानासँ पच्छिम औद्योगिक क्षेत्रक रूपमे देखै छी, ओइ समय ओ नमहर फिल्ड छल, जैपर फुटबॉल सेहो खेलल जाइत छल, ओही फिल्डपर सभा भेल छल। भूदान आन्दोलनक रूपमे जमीनक आन्दोलन विनोबाजी ठाढ़ केलैन। हुनक माँग रहैन अपन जमीनक छबम् हिस्सा जमीन दान करू।

एक दिस तेलांगनाक सशस्त्र लड़ाइ जारी छल आ दोसर दिस भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। ऐ आन्दोलनमे प्रेम-पूर्वक स्वेच्छासँ अपन जमीन दान कएल जाइ छल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल छल।

परिवारक रूपमे जहिना जीविकाक लेल खेत आ खेतीक समस्या छल तहिना गाम-समाजक रूपमे सेहो अनेको समस्या छल। एक दिस नव स्वतंत्र देश, दोसर दिस धरतीसँ अकास धरि अनेको समस्या सबहक सोझामे उपस्थित भेल। गाममे एक दिस जहिना पेटक समस्या छल तहिना दोसर दिस वस्त्र, आवास, शिक्षा आ चिकित्साक समस्या सेहो छल। गाम-गाममे हैजा, चेचक, मलेरिया इत्यादि अनेको संक्रामक

बेमारीक प्रकोप होइत रहै छल। जइसँ अनेको लोक मरै छला। ने पढ़ाइ-लिखाइक लेल विद्यालय छल आ ने बेमारीक लेल चिकित्सा सुविधा। तैबीच अन्ध-बिसवास तेना पसरल जे मनुखकेँ समुचित दिशा दिस बढ़ए नहि दैत छल। अन्हार घर साँपे-साँप सदृश वातावरण बनल छल।

राज्यो सरकार आ केन्द्रो सरकारक बीच अपन-अपन एहेन-एहेन समस्या सभ छल जे अर्थाभावमे किछु कइये नहि पेब रहल छल। ओना, अर्थाभाव सेहो छल मुदा मूल अभाव छल कुशल केनिहारक। ❑ **पंगु, उपन्यास, 2018, पृष्ठ संख्या : 71-74**

सम्प्रदायोबला सभ जीवनक (मनुक्खक जीवनक) मुक्तियेक मार्ग देखबै छैथ आ राजनीति-दल बला सेहो सएह कहै छैथ। मुदा ने सम्प्रदायबला कहै छैथ जे जखन परिवारक सभ परिवारक कल्याणे चाहै छी तखन परिवारमे भैयारीक बीच झगड़ा किए होइए, तहिना राजनीतिबला सेहो कहै छैथ जे जीवनक जे मूल तत्त्व अछि ओइपर सामूहिक ढंगसँ अधिकार हुअए जइसँ जीवनक गाड़ी बिसवासक ढंगसँ चलैत रहत।

मिथिलांचलक बीच कमलपुर जहिना पुरान (प्राचीन) गाम अछि तहिना प्रतिष्ठित गाम सेहो अछिए। प्रतिष्ठित गामक माने भेल जे जहिना गाममे ऊसर-खासर माटि नहि अछि, माने उपजाक माटि अछि, तहिना पतालक पानि सेहो नीचला पतालक तलमे नहि, माने पतालक सात तल अछि- अतल, बीतल, सुतल, तरातल, रसातल, महातल, पाताल ऊपरके तलमे अछि, जइसँ जहिना खेत पटबैक बोरिंग ऊपरके तलमे भऽ जाइए तहिना पानि पीबाक चापाकलो आ पोखरियो-इनार असानीसँ भइये जाइए। खेत-पथारकेँ समतल रहने कमलपुरमे उपजो-बाड़ी समतल अछिए। जखने अर्थ-उपार्जनक साधन समतल रहत तखने जीवनमे सेहो समतलता आबिये जाइए। वएह समरूपता भेल माने समतलता भेल प्रतिष्ठित गामक लक्षण। अही लक्षणक आधारपर कमलपुर मिथिलाक प्रतिष्ठित गामक श्रेणीमे अबैए।

ओना, जहिना सोचै-विचारैक अपन-अपन दृष्टि आ दृष्टिकोणो सभकेँ होइए जइसँ अपना-अपना नजरिये एक्के वस्तुकेँ लोक भिन्न-भिन्न

रूपो आ स्वरूपो देखबे करै छैथ जइसँ प्रतिष्ठित गाम मानैक दोसरो-तेसर कारण अछिए। कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे पैघ (ऊँच) जाइतिक, तथाकथित पैघ जाइतिक, बासो आ संख्यो बेसी रहल तँ ओ गाम प्रतिष्ठित भेल, तँ कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे बेसी पढ़ल-लिखल रहल ओ प्रतिष्ठित गाम भेल, तँ कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे बेसी लक्ष्मीपात्र माने धनसँ सम्पन्न लोक रहला ओ प्रतिष्ठित गाम भेल। मुदा मुरकुटियामे ई तँ कहले जाएत जे गाम, माने भौगोलिक रूपमे ओकर चारूकातक सीमा-सरहद, घर-दुआर, रोड-सड़क, पोखैर-इनार, खेत-पथार, गाछी-कलम बेसियो आ नीको हुअए, ओ भेल गाम आ ओइ गाममे जे सद्गुण भेल ओ भेल गामक प्रतिष्ठा।

खाएर जे हुअए, जेतए हुअए, ओ ओत्तैक मुद्दा भेल, ऐठाम तँ कमलपुरक चर्च अछि, तँए कमलपुरक प्रतिष्ठाक अपन की विशेषता अछि।

दर्जनों जाइतिक बीच बँटल समाजमे कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे जिनगीक आवश्यकता पूर्तिक सभ साधनक पूर्ति कर्ता मौजूद अछि। जहिना किसानक बीच खेत छैन तहिना खेतीक जीवनसँ जुड़ल सभ तरहक खेतिहर सेहो छथिए। जहिना केश कटनिहार नौआ, कपड़ा धोनिहार धोबि, हँसुआ-खुरपी-चौकैठ-केबाड़ी बनौनिहार बढ़ई (बरही), तहिना बाँसक वस्तु बनौनिहार डोमो अछिए। तहिना माइटिक वस्तु बनौनिहार कुम्हार सेहो छथिए। तइ संग ईहो अछि जे जहिना पढ़ल-लिखलक संख्या सभ जाइतिक बीच अछि तहिना सभ जातिमे लक्ष्मीपात्रो छथिए। ओना, किसानक गाम रहने किसानीक किछु कारोबार खास-खास जाइतिक बीच सेहो अछिए। मुदा से कारोबार किसानक बीच बन्हाएल नहि अछि। जेना गाए-महींस पोसैबला किछु खास जाति मानल जाइ छैथ, मुदा तँए दोसर-तेसर जाति नहि पोसै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो पोसिते छैथ तहिना माछ पोसैक कारोबार

किछु खास जाइतिक बीच अछि तँ दोसरो-तेसरो अपन पोखैर, डबरा, चभच्चा, बीरई, कोंचाढ़िमे सेहो माछ पोसिते छैथ। तहिना खेतियोक अछि, सभ जाइतिक लोक कृषिसँ जुड़ल छैथ जइसँ खेतीक काज सेहो सभ करिते छैथ। ओना, तहूमे उपजाक आधारपर कोइर-कुजराकेँ सेहो खेतिहर कहले जाइए।

सभसँ पैघ गुण गाममे ई अछि जे, एक तँ बहुसंख्य जाइतिक गाम छी, तहूमे दर्जनो एहेन जाति छैथ जे संख्याक हिसाबसँ एकरंगाह छैथ, जइसँ झगड़ा-झंझट कम होइए, पनचैतीसँ बेसी विवादक निपटान होइए। कहब जे तखन विवादे किए होइए? से तँ ताबे तक होइत रहत जाबे तक कोला-कोली खेत (सम्पैत)मे आड़ि-मेड़ बनल रहत। कखनो बर्खामे धोखैड़ कऽ आड़ि-मेड़ टुटत तँ कखनो बाढ़िमे भँसिया कऽ टुटत। तहिना आनो-आन समस्या सभ अछिए। मुदा जहिना गाम प्रतिष्ठित बुझल जाइए तहिना वैचारिक प्रतिष्ठा सेहो गाममे अछिए। जइसँ अनेको राजनीतिक दलो आ अनेको धार्मिक सम्प्रदाय सेहो अछिए। कमलपुरमे एते अन्तर केतेको आन गामसँ अछिए। माने भेल जे कोनो गाममे एक्के राजनीतिक दलो रहल आ एक्के धार्मिको सम्प्रदाय रहल, से कमलपुरमे नहि अछि। जहिना सभ तरहक राजनीतिक दल अछि तहिना सभ तरहक धार्मिक सम्प्रदाय सेहो अछि। ई नहि कहि रहल छी जे जहिना सम्प्रदाय सभ अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत करै छैथ तहिना राजनीतिक दल सेहो महिला, दलित आ महादलित कइये रहला अछि जइसँ छीपापनार हर वा करीन जकाँ समाजक कखन पालो टुटत आकि छीप टुटत तेकर ठेकान नहि रहैए, तहिना अछि। सम्प्रदायोबला सभ जीवनक (मनुक्खक जीवनक) मुक्तियेक मार्ग देखबै छैथ आ राजनीति-दल बला सेहो सएह कहै छैथ। मुदा ने सम्प्रदायबला कहै छैथ जे जखन परिवारक सभ परिवारक कल्याणे चाहै छी तखन परिवारमे भैयारीक बीच झगड़ा किए होइए, तहिना राजनीतिबला सेहो कहै छैथ जे जीवनक जे मूल तत्त्व

अछि ओइपर सामूहिक ढंगसँ अधिकार हुअए जइसँ जीवनक गाड़ी बिसवासक ढंगसँ चलैत रहत।

कहलौं जे छीपापनार जकाँ समाज भऽ गेल अछि। ओ ई जे गाम एक्के छी मुदा कबीर मतक जे समर्थक छैथ हुनकर विचारोधारा आ बेवहारो जे छैन तेकर विपरीत रमाउतबलाक छैन। तहिना जे धनीक छैथ ओ अपन धनक लालसामे, माने बेकतीगत सम्पैतिक लालसामे जी-जान लगा दौड़ रहला अछि, तँ बहुसंख्य लोक ओहन नहि छैथ जे अपन जीवनक लेल समुचित अहारक संग समुचित साधन नहि चाहै छैथ। जइसँ सभ देखिये रहल छी जे समाजक बीच सामाजिकताक की रूप अछि। खाएर जे अछि, तइसँ कमलपुरबलाकेँ कोन मतलब छैन। ❑

अन्तिम क्षण, उपन्यास, 2021, पृष्ठ संख्या : 21-24

कुशेसर आब नीक जकाँ बुझए लगला अछि जे सइयो कि हजारो बान्ह-छेकमे मनुख बान्हल अछि मुदा ओ अछि जीवनक क्रिया, बेवहार आ विचारमे।

कलकत्ता जाइसँ दू दिन पहिने कुशेसर देवनक ऐठाम जा मौसा लग पहुँच प्रणाम करैत बजला-

"मौसा, परसू कलकत्ता जाएब, देवन सेहो कहने रहए जे हमहूँ जाएब, से अहाँक की विचार?"

कुशेसरक बात सुनि धनुषधारीक मन आगू-पाछू देखए लगलैन। पैछला जीवन की छल आ अखुनका की अछि..? अपने तँ ओहन जीवनक अभ्यस्त बनि गेल छी जे जएह अछि तहीमे दिन काटै छी, मुदा ऐगला पीढ़ीले तँ ऐगला जिनगी चाहबे करी। अपन भार कुशेसरपर दैत धनुषधारी बजला-

"बौआ, तोहूँ कोनो आन नहियेँ छह। बेटा बनि देवन जखन जन्म लेने अछि तखन दुनियाँमे केतौ रहि अपन जीवन सुधारैत चला सकैए। मुदा उन्नैस-बीस बर्खक रहितो देवनकेँ साए तक अपने ने गनए अबै छै आ ने अपन नामे-गाम लिखए अबै छै, तखन गाम छोड़ि बाहर केना जाएत।"

धनुषधारीक विचार सुनि कुशेसर मने-मन विचारलैन जे अपनो तँ एहने छेलौं, मुदा सतसंग भेने एते तँ भइये गेल अछि जे अपन जीवन-मरणक बात बुझए लगलौं अछि। कुशेसर बाजल -

"मौसा, एहेन कि देवनेटा अछि आकि एहेन लोकसँ गामे समाज भरल अछि। कलकत्ता गेलापर सभ सीख लेत।"

मौसी ऐठाम कुशेसर रूकला नहि। गप-सप्प केलाक पछाइत माने मौसासँ विचार लेला पछाइत, कुशेसर जहिना गेल छला तहिना लगले अपन गाम घुमियौं गेला। ऐठाम ई नहि बुझब जे कुशेसरकेँ मौसे कि मौसीए आकि देवने, रहैले नहि कहलकैन। सभ कहलकैन, मुदा काजुल लोकक जीवन काजमे तेना जुलि बन्हा जाइए जे अपन सुधि-बुधि सभ बिसैर काजक संग दौड़ए लगैए। चारि-पाँच सालक कलकत्ता प्रवासक अनुभवी जीवन कुशेसरकेँ तेना सिखा देने छेलैन जे बुझि गेला जे मनुख सैकड़ो बन्धनसँ बन्हाएल अछि, मुदा गाए-महींस जकाँ डोरी गरदैनमे नहि लगल छइ। कुशेसर नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे सइयो कि हजारो बान्ह-छेकमे मनुख बान्हल अछि मुदा ओ अछि जीवनक क्रिया, बेवहार आ विचारमे। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे कुशेसर कौल्हुके भरि समय देखि माने बीचक एक दिन, अपनो तैयारीक संग परिवार-समाजसँ भेँट करैत, अपन अनुपस्थितिक भार परिवार-समाजपर देला पछाइत गाम छोड़ि बाहर जेता।

बीच रस्तामे, माने देवन ऐठामक रस्ताक बीचमे, जखन कुशेसर पहुँचला तखन देवनक कलकत्ता ठौर-ठेकानपर नजैर गलैन। नजैर जाइते बुझि पड़लैन जे जहिना कोठीमे चाउर रहने केहनो भुखल-दुखल अभ्यागत वा केतबो अभ्यागत किए ने दरबज्जापर आबैथ मुदा तइसँ कि घरबैयाक मुँह जहिना थोड़बो मलीन नइ होइए तहिना कुशेसरक मनमे सेहो उठलैन। मनमे उठलैन जे जखन कमासुत बनि जन्म नेने छी तखन काजक कमी दुनियाँमे अछि। काजक कमी तँ ओकरा ले अछि जे जीबलाह पुरुख आकि भरछुलाहि स्त्रीगण जकाँ काजक टिपौड़ी होइए। मुदा जे काजक कर्ता अपनाकेँ बुझैए, ओ अपन कीर्तपन देखि मानवक रूप देखैए। जखन मानवीय दृष्टिसँ दुनियाँ दिस तकैए तखन सौंसे दुनियाँ एक्के रंग ने देखबामे आबए लगै छइ। ❑ **मोड़पर, उपन्यास, 2021, पृष्ठ संख्या : 25-27**

परिचय : उमेश मण्डल

जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल, सन्तान: पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.–‘मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर’, 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ।

प्रकाशित कृति : (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) ‘मिथिलाक जीव-जन्तु’, (4) ‘मिथिलाक वनस्पति’ आ (5) ‘मिथिलाक जिनगी’ (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या

सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प, (21) अभ्यन्तर आ (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमश: 2021-2022 इस्वी), (23) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)।

संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी।

सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास- हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, सम्प्रति: तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452